শৰ্মা হাৰ্ডৱেৰ
SHARMA HARDWARE
Sharma Gali, SJ Road
Athgaon, Guwahati-01
98648-02947
70025-06581

E-Paper : www.goodluckpublications.com, • www.vbslive.in
हिंदी दैनिक
गुवाहाटी, शिमला और जम्मू से एकसाथ प्रकाशित

विकसित भारत समाचार

राष्ट्र निर्माण में प्रयत्नशील

वर्ष : 09 | अंक : 164 | गुवाहाटी | बुधवार, 4 जनवरी, 2023 | मूल्य : 10 रुपए | पृष्ठ : 12 | VIKSIT BHARAT SAMACHAR | Regd. RNI No. ASSHIN/2014/56526

रंगिया में भारी मात्रा में हेरोइन जब्त, तीन गिरफ्तार — पेज 3
नीतीश ने बिहार की जनता को धोखा दिया, प्रजातांत्रिक तरीके से देंगे जवाब : जेपी नड्डा — पेज 4
उत्तर प्रदेश शिक्षा सेवा चयन आयोग का गठन जल्द : मुख्यमंत्री — पेज 5
नशीले पदार्थों की तस्करी में शामिल लोगों की संपत्ति जब्त करेगी पंजाब सरकार — पेज 8

सेना से जुड़े 28 परियोजना का रक्षामंत्री ने किया उद्घाटन

नई दिल्ली। रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने मंगलवार को सेना से जुड़े 28 बुनियादी ढांचा परियोजनाओं का उद्घाटन किया। रक्षा मंत्री ने सैन्य तैयारियों और सामाजिक-आर्थिक विकास को बढ़ावा देने के लिए लद्दाख, अरुणाचल प्रदेश, सिक्किम और जम्मू-कश्मीर के महत्वपूर्ण क्षेत्रों में पुलों और सड़कों सहित 28 बुनियादी ढांचा परियोजनाओं को राष्ट्र को समर्पित किया। रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने 724 करोड़ रुपए की लागत से निर्मित परियोजनाओं का उद्घाटन अरुणाचल प्रदेश में अलोंग-यिंकिओनग रोड पर सियोम पुल पर आयोजित समारोह में किया। बता दें कि तवांग सेक्टर में कुछ दिनों पहले चीनी सैनिकों द्वारा घुसपैठ के प्रयासों के बाद सीमावर्ती राज्य की यह उनकी पहली यात्रा थी। जानकारी के मुताबिक, परियोजनाओं में सियोम पुल, तीन सड़कों और तीन अन्य परियोजनाओं सहित 22 पुल शामिल थे। इनमें से आठ परियोजनाएं लद्दाख में, पांच अरुणाचल प्रदेश में, चार जम्मू-कश्मीर में, तीन-तीन सिक्किम, पंजाब और उत्तराखंड में और दो राजस्थान में शामिल हैं। रक्षा मंत्री ने कहा कि हाल ही में तवांग सेक्टर में एलएसी पर हमारे जाबांज जवानों ने काफी बहादुरी और मुस्तैदी के साथ दुश्मनों का सामना किया। उन्होंने कहा कि ऐसा इसलिए संभव पो सका, क्योंकि इस क्षेत्र में पर्याप्त बुनियादी ढांचा है। उन्होंने कहा कि इससे हमें और भी दूर दराज के इलाकों में काम करने की मोटिवेशन मिलती है।

नगांव के रोहा में पर्यटक केंद्र का भूमिपूजन

तिवा शासन असम के इतिहास का अहम हिस्सा : मुख्यमंत्री

नगांव (हि.स.)। मुख्यमंत्री डॉ. हिमंत विश्व शर्मा मंगलवार को जोंगाल बलहू दिवस समारोह और नागांव जिला के रोहा स्थित जोंगाल बलहू प्राचीर पर पर्यटक सुविधाओं के विकास के लिए भूमिपूजन समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में शामिल हुए। इस अवसर आयोजित एक जनसभा को संबोधित करते हुए मुख्यमंत्री डॉ. शर्मा ने कहा कि मध्यकालीन युग के तिवा शासक जोंगाल बलहू ने न केवल अपने समुदाय बल्कि असम में रहने वाले अन्य लोगों की सामाजिक-आर्थिक और आध्यात्मिक प्रगति के लिए बहुत बड़ा योगदान दिया था। मुख्यमंत्री ने कहा कि उनके शासनकाल को तिवा समुदाय के इतिहास के सबसे शानदार अध्यायों में से एक कहा जा सकता है। उन्होंने कहा कि उनका शासनकाल असम के इतिहास का एक महत्वपूर्ण हिस्सा भी है। मुख्यमंत्री ने कहा कि यह महत्वपूर्ण है कि जोंगाल बलहू जैसे महान नेता और शासक की वीरता की गाथा दूर-दूर तक फैले, इसी उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए असम सरकार ने क्षेत्र के विकास का निर्णय लिया और जोंगाल बलहू प्राचीर के चारों ओर एक पर्यटन स्थल के रूप में विकसित करने के लिए इलेक्ट्रिक बग्गी वाहन, जल खंड पर तैरता पुलों, चांगघर, गेस्ट हाउस, तिवा संग्रहालय, साइकिल ट्रैक, कांफ्रेंस हॉल, सूचना केंद्र और कैफेटेरिया -शेष पृष्ठ दो पर

कोरोना बूस्टर की दूसरी खुराक अभी नहीं : स्वास्थ्य मंत्रालय

नई दिल्ली (हि.स.)। कुछ देशों में कोरोना के बढ़ते मामलों के बीच जहां केंद्र सरकार ने टीके की बूस्टर डोज लगाने की गति को तेज करने की वकालत की है। इस बीच केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय के सूत्रों ने कहा है कि अभी कोरोना बूस्टर की दूसरी खुराक की आवश्यकता नहीं है। मंत्रालय के सूत्रों के मुताबिक मौजूदा समय में पहले बूस्टर डोज को देने का काम पूरा किया जाना है। मौजूदा समय में देश में 22.41 करोड़ लोगों ने बूस्टर -शेष पृष्ठ दो पर

सीएम ने डिब्रू भवन अतिथि गृह का किया लोकार्पण

तिनसुकिया (हि.स.)। मुख्यमंत्री डॉ. हिमंत विश्व शर्मा ने मंगलवार को डिगबोई में नाजीरेटिंग तामुली पर्यटन महोत्सव में भाग लेते हुए कहा कि राज्य सरकार इस महोत्सव को असम के सबसे महत्वपूर्ण पर्यटन आयोजनों में से एक के रूप में बढ़ावा देगी। तिनसुकिया जिला के डिगबोई में तीन दिवसीय उत्सव के अंतिम दिन में भाग लेते हुए, मुख्यमंत्री डॉ. शर्मा ने उत्सव के आयोजक की प्रशंसा करते हुए कहा कि अरुणाचल प्रदेश में तवांग महोत्सव और मेघालय में चेरी ब्लॉसम महोत्सव के अनुरूप, असम सरकार ने नाजीरेटिंग को बदलने की योजना बनाई है। तामुली पर्यटन महोत्सव राज्य के सबसे अधिक मांग वाले पर्यटन कार्यक्रमों में से एक है। इस मौके पर उन्होंने पर्यटकों के लिए अधिक सुविधाओं के निर्माण हेतु नाजीरेटिंग तामुली पर्यटन सर्किट के बुनियादी ढांचे के विकास के लिए 3 करोड़ रुपए देने की भी घोषणा की। मुख्यमंत्री ने कहा कि असम को हमेशा आकर्षक पर्यटन स्थलों का वरदान मिला है। नाजीरेटिंग तामुली टूरिज्म सर्किट राज्य के पर्यटन मानचित्र में एक नया जुड़ाव है। उन्होंने कहा कि डिगबोई में लुभावने नाजीरेटिंग तामुली पर्यटन महोत्सव में भाग लेकर उन्हें बहुत खुशी हुई। डॉ. शर्मा ने कहा कि डिब्रू नदी और अद्वितीय वनस्पतियों और जीवों से समृद्ध प्राचीन परिदृश्य में आयोजित होने वाला त्योहार प्रकृति प्रेमियों के लिए एक उत्कृष्ट अनुभव प्रदान करता है। मुख्यमंत्री ने कहा कि स्थान की प्राकृतिक सुंदरता और पक्षियों की विभिन्न प्रजातियों की उपस्थिति ने नाजीरेटिंग तामुली को एक आकर्षक पर्यटन स्थल बना दिया है। -शेष पृष्ठ दो पर

পূৰ্বাঞ্চল কেশৰী
(असमीया दैनिक)
PURVANCHAL KESARI
(ASSAMESE DAILY)
GOOD LUCK PUBLICATIONS
House No. 30, D. Neog Path, ABC, Guwahati - 781005
Mob: 94350 14771, 97070 14771

सिनेमा हॉल और मल्टीप्लेक्स में बाहर का खाना नहीं : एससी

नई दिल्ली। सुप्रीम कोर्ट ने सिनेमा हॉल के अंदर खाने-पीने की चीजों की बिक्री को लेकर अहम फैसला सुनाया। कोर्ट ने सिनेमाघरों में बाहर से खाने-पीने की चीजों को ले जाने की इजाजत देने के जम्मू हाईकोर्ट के फैसले को रद्द कर दिया। शीर्ष कोर्ट ने कहा कि सिनेमा हॉल के अंदर खाने-पीने की चीजों की बिक्री के लिए नियम और शर्तें तय करने के लिए हॉल प्रबंधन पूरी तरह से हकदार हैं। एक फिल्म देखने वाले के पास सिनेमाघरों के अंदर उपलब्ध खाद्य और पेय पदार्थों को खरीदने या नहीं खरीदने का विकल्प होता है। शीर्ष अदालत ने सुनवाई के दौरान कहा सिनेमा हॉल जिम नहीं है, जहां आपको पौष्टिक भोजन चाहिए। -शेष पृष्ठ दो पर

वंदे भारत ट्रेन कामाख्या तक चलेगी

नई दिल्ली। देश के कई राज्यों से वंदे भारत एक्सप्रेस चलने की शुरुआत हो चुकी है। अब यह ट्रेन पूर्वोत्तर के राज्यों से शुरू होने जा रही है। पूर्वोत्तर की पहली वंदे भारत ट्रेन को रेलवे बोर्ड की मंजूरी मिल चुकी है। जल्द इसे शुरू किया जा सकता है। सूत्रों के मुताबिक, यह ट्रेन पश्चिम बंगाल के न्यू जलपाईगुड़ी से गुवाहाटी के बीच चलेगी। इसका परिचालन सिलीगुड़ी जंक्शन-कामाख्या के रास्ते हो सकता है। इस ट्रेन की औसत स्पीड 65 किमी प्रति घंटे होगी। पूर्वोत्तर की इस वंदे भारत एक्सप्रेस ट्रेन से असम के अलावा अरुणाचल प्रदेश, नगालैंड, मिजोरम, मणिपुर, मेघालय और त्रिपुरा के यात्रियों को फायदा होगा। फिलहाल देश में सात वंदे भारत ट्रेनें चल रही हैं। पहली वंदे भारत ट्रेन साल 2019 में नई दिल्ली से वाराणसी के बीच चलाई गई थी, जबकि सातवीं वंदे भारत ट्रेन हाल ही में पश्चिम बंगाल में हावड़ा से न्यू जलपाईगुड़ी के बीच चलाई गई थी। मोदी सरकार ने देश की आजादी के अमृत महोत्सव के मौके पर 75 वंदे भारत एक्सप्रेस ट्रेनों को चलाने का लक्ष्य रखा है। पहली 75 ट्रेनों में चेयर कार डिब्बे होंगे। इसके बाद बनने वाली वंदे भारत ट्रेनों में स्लीपर डिब्बे होंगे। रेलवे लगातार ट्रेन के डिजाइन में लगातार सुधार -शेष पृष्ठ दो पर

पीएम ने की गैंडों के संरक्षण की सराहना की

नई दिल्ली (हि.स.)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने पिछले साल गैंडों के शिकार की एक भी घटना नहीं होने पर इन दुर्लभ जीवों के संरक्षण की दिशा में किए गए प्रयासों के लिए असम के लोगों की सराहना की है। प्रधानमंत्री ने असम के मुख्यमंत्री हिमंत विश्व शर्मा के एक ट्वीट को साझा करते हुए ट्वीट किया कि यह अच्छी खबर है! असम के लोगों को बधाई, जिन्होंने रास्ता दिखाया है और गैंडों की रक्षा के अपने प्रयासों में सक्रिय रहे हैं। असम के मुख्यमंत्री हिमंत विश्व शर्मा ने ट्वीट कर जानकारी दी थी कि 2022 गैंडों के संरक्षण प्रयासों के लिए वास्तव में विशेष था।

doorgraph Premium Quality Hinges
S.S. Traders
Suppliers in : All kinds of Door Fittings Modular Kitchen & Accessories, etc.
D. Neog Path, Near Dona Planet ABC, G.S. Road, Guwahati - 05
97079-99344

संविधान उद्यान के निर्माण से जागरूकता बढ़ेगी : राष्ट्रपति

जयपुर (हि.स.)। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने देशवासियों में संवैधानिक नैतिकता की भावना जाग्रत करने के लिए कार्य किए जाने पर बल दिया है। राष्ट्रपति ने राजभवन में संविधान उद्यान के निर्माण की सराहना करते हुए कहा कि इससे संविधान के प्रति जागरूकता बढ़ेगी। राष्ट्रपति मुर्मू मंगलवार को राजभवन में संविधान उद्यान के लोकार्पण अवसर पर सम्बोधित कर रही थीं। उन्होंने कहा कि भारतीय लोकतंत्र विश्व का सबसे बड़ा और जीवंत लोकतंत्र है और हमारा संविधान इसका आधार है। उन्होंने कहा कि संविधान निर्माताओं ने सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक न्याय, स्वतंत्रता, समता और बंधुत्व के सिद्धांतों पर -शेष पृष्ठ दो पर

राजौरी : आतंकियों की जानकारी देनेवालों को 10 लाख रु.

जम्मू (हि.स.)। जम्मू-कश्मीर पुलिस ने राजौरी हमले में शामिल आतंकियों के बारे में जानकारी साझा करने वाले को 10 लाख रुपए के इनाम की घोषणा की है। इन आतंकी हमलों में छह नागरिक मारे गए थे। एक अधिकारी ने बताया कि अगर कोई व्यक्ति हमले में शामिल आतंकवादियों के बारे में कोई विशेष जानकारी साझा करता है तो उसे 10 लाख रुपए का इनाम दिया जाएगा। उन्होंने यह भी कहा कि मुखबिर का विवरण गुप्त -शेष पृष्ठ दो पर

मोदी और ब्रिटेन के किंग चार्ल्स के बीच फोन पर बात

नई दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने मंगलवार को ब्रिटेन के किंग चार्ल्स तृतीय के साथ फोन पर बातचीत की। पीएम मोदी और किंग चार्ल्स तृतीय के बीच जलवायु कार्रवाई, जैव विविधता के संरक्षण और ऊर्जा परिवर्तन के वित्तपोषण के लिए अभिनव समाधानों से संबंधित मुद्दों पर चर्चा की गई। इसके साथ ही भारत की जी20 अध्यक्षता, मिशन लाईफ बातचीत हुई। प्रधानमंत्री कार्यालय ने इसकी जानकारी दी। प्रधानमंत्री कार्यालय के अनुसार, दोनों नेताओं ने राष्ट्रमंडल देशों और इसके कामकाज को और मजबूत करने के तरीकों पर विचारों का आदान-प्रदान किया। उन्होंने दोनों देशों के बीच बेहतर रूप में कार्य करने और द्विपक्षीय संबंधों को समृद्ध करने में ब्रिटेन में भारतीय समुदाय की भूमिका की भी सराहना की। बता दें कि भारत को अभी जी 20 की अध्यक्षता मिली है। इसको लेकर भी दोनों नेताओं के बीच चर्चा हुई। जी 20 को लेकर देश के अलग अलग शहर में बैठकों का -शेष पृष्ठ दो पर

सुप्रभात
मनुष्य की वाणी ही विष और अमृत की खान है।
- आचार्य चाणक्य

न्यूज गैलरी

सांबा : रात नौ बजे से सुबह छह बजे तक कर्फ्यू

सांबा (हि.स.)। अधिकारियों ने जम्मू संभाग के सांबा जिले में अंतर्राष्ट्रीय सीमा से एक किलोमीटर की दूरी तक रात नौ बजे से सुबह छह बजे तक कर्फ्यू लगा दिया है। बीएसएफ अधिकारियों ने सीमा क्षेत्र में रात का कर्फ्यू लगाने की मांग की थी। यह आदेश तत्काल प्रभाव से लागू होगा और दो महीने की अवधि तक लागू रहेगा। डिप्टी कमिश्नर सांबा ने आदेश में बताया है कि सीमा सुरक्षा पर जिला स्तरीय स्थायी समिति की बैठक में बीएसएफ अधिकारियों ने सीमा क्षेत्र में रात का कर्फ्यू लगाने का मुद्दा उठाया -शेष पृष्ठ दो पर

वंदे भारत ट्रेन : उद्घाटन के दूसरे दिन ही पथराव

कोलकाता (हि.स.)। पूर्वी भारत की पहली बहुप्रतीक्षित वंदे भारत ट्रेन के सफर की शुरुआत बहुत सुखद नहीं रही। यात्रा शुरू होने के पहले दिन ट्रेन में साफ-सफाई और भोजन की गुणवत्ता को लेकर आई ढेरों शिकायतों के बाद अगले ही दिन ट्रेन पर पथराव किया गया। पथराव की यह घटना मालदा के समसी और कुमारगंज स्टेशनों के बीच हुई। पथराव की वजह से वंदे भारत ट्रेन के सी-13 डिब्बे की खिड़की का कांच टूट गया और बाहरी हिस्सा क्षतिग्रस्त हुआ है। इस घटना में रेलवे की ओर से प्राथमिकी दर्ज कर ली गई है। नॉर्थ फ्रंटियर रेलवे के प्रवक्ता सब्यसाची डे ने मंगलवार को बताया कि जीआरपी ने इस संबंध में रेलवे एक्ट के तहत प्राथमिकी दर्ज की है। उन्होंने बताया कि सोमवार शाम करीब 6:00 बजे मालदा के समसी और कुमारगंज स्टेशन के बीच ट्रेन पर पथराव हुआ। आरपीएफ की एक टीम घटनास्थल पर पहुंची और वहां लोगों को सचेत किया गया है कि भविष्य में ऐसी घटना की पुनरावृत्ति नहीं होनी चाहिए। इसे काफी गंभीरता से लिया जा रहा है। ऑन बोर्ड आरपीएफ स्टाफ की संख्या भी बढ़ाई जा रही है और कुमारगंज स्टेशन पर आरपीएफ की पेट्रोलिंग भी होगी। जीआरपी भी तलाशी अभियान चला रही है। जिसने भी पत्थरबाजी की है, उसकी गिरफ्तारी होगी। उन्होंने यह भी बताया कि ऐसी घटनाओं को लेकर यात्रियों को चिंतित होने की जरूरत नहीं है, क्योंकि वंदे -शेष पृष्ठ दो पर

कंझावला कांड : अंजलि की बॉयफ्रेंड से हुई थी तू-तू-मैं-मैं

नई दिल्ली। नए साल की रात दिल्ली में हुए कंझावला कांड ने सभी को हैरान और परेशान कर दिया। एक कार ने स्कूटी को टक्कर मारने के बाद उस पर सवाल लड़की को 12 से 13 किलोमीटर तक घसीटा। नग्न अवस्था में लड़की का शव बरामद हुआ। अब इस मामले में नए-नए पहलू सामने आ रहे हैं। घटना से जुड़े कई सीसीटीवी फुटेज सामने आ चुके हैं। कई चश्मदीदों ने बताया है कि उस रात क्या हुआ। लेकिन अब वो लड़की सामने आई है जो उस रात स्कूटी पर अंजलि के साथ सवार थी। हादसे में अंजलि की जान चली गई और उसकी दोस्त बच गई। अंजलि की दोस्त हादसे के बाद मौके से चली गई और एकदम से सामने नहीं आई, लेकिन अब वो मीडिया के सामने आई है और उसने खुलकर -शेष पृष्ठ दो पर

आधार कार्ड में घर के मुखिया की सहमति से होगा बदलाव

नई दिल्ली। भारतीय विशिष्ट पहचान प्राधिकरण (यूआईडीएआई) ने अब निवासियों को यह सुविधा दी है कि वे अपने परिवार के मुखिया की सहमति से ऑनलाइन ढंग से आधार कार्ड में पते को अद्यतन कर सकते हैं। यूआईडीएआई ने मंगलवार को आधिकारिक बयान में कहा कि परिवार के मुखिया से संबंध को दर्शाने वाला कोई दस्तावेज जमा कर निवासी पते को ऑनलाइन अद्यतन कर सकते हैं। इस तरह के दस्तावेजों के रूप में राशन कार्ड, अंक-पत्र, विवाह प्रमाण-पत्र और -शेष पृष्ठ दो पर

CLASSIFIED

For all kinds of classified advertisements please contact

97070-14771
86382-00107

MURTI AVAILABLE

Available all kinds of Marble & White Metal Murties, Ganesh Laxmi, Radha Krishna, Bishnu-Laxmi, Hanuman, Maa Durga, Saraswati, Shivling, Nandi etc. **ARTCLE WORLD,** S-29, 2nd Floor, Shoppers Point, Fancy Bazar, Guwahati-01, **Ph. : 94350-48866, 94018-06952**

करोड़ों भारतीयों के राशन में 50 फीसदी की हुई कटौती : कांग्रेस

नई दिल्ली (हि.स.)। कांग्रेस ने आरोप लगाया है कि 81 करोड़ भारतीयों के राशन में 50 फीसदी की कटौती की गई है। कांग्रेस महासचिव जयराम रमेश ने मंगलवार को एक बयान जारी कर कहा कि नववर्ष की शुरुआत निराशाजनक खबर के साथ हुई है। प्रधानमंत्री मोदी के मंत्रिमंडल ने 'प्रधानमंत्री गरीब कल्याण अन्न योजना (पीएमजीकेएवाई)' को बंद कर दिया है। जिससे राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अधिनियम (एनएफएसए) के लाभार्थियों को 05 किलोग्राम अतिरिक्त अनाज मिलता था। पिछले दो वर्षों से 81 करोड़ भारतीय 10 किलोग्राम खाद्यान्न के पात्र थे, लेकिन अब उन्हें केवल 05 किलोग्राम अनाज मिलेगा यानि राशन में अचानक 50 फीसदी की कटौती हुई है। रमेश ने कहा कि प्रधानमंत्री ने गरीबों के लिए यह घातक निर्णय राज्य सरकारों से परामर्श किए बगैर और संसद में कोई चर्चा किए बिना ही लिया है। मोदी सरकार राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अधिनियम के तहत गरीबों के लिए मुफ्त 05 किलो अनाज को ऐतिहासिक निर्णय बताकर वाहवाही का झूठा ढोल पीट रही है। रमेश ने कहा कि गंभीर आर्थिक बदहाली के कारण मोदी सरकार को कोविड-19 महामारी के दौरान अतिरिक्त राशन देने के लिए मजबूर होना पड़ा था। यह आर्थिक बदहाली आज भी बनी हुई है। यूपीए सरकार के समय की तुलना में आज हर बुनियादी आवश्यकता अधिक महंगी है, अधिकांश भारतीयों की आय में वृद्धि नहीं हुई है, और बेरोजगारी रिकॉर्ड स्तर पर है। 卐हंगर वॉच卐 सर्वेक्षण में पाया गया है कि 80 फीसदी लोग किसी न किसी रूप में खाद्य असुरक्षा का अनुभव कर रहे हैं। भारत आज ग्लोबल हंगर इंडेक्स 2022 के अनुसार 121 देशों की सूची में 107वें स्थान पर है।

चीन के नए विदेश मंत्री ने अमेरिकी मेग्जीन में भारत के साथ रिश्तों को लेकर कही बड़ी बात

वाशिंगटन। चीन के नए विदेश मंत्री चिंग गैंग ने भारत के साथ सीमा मसले को लेकर कहा है कि हमारा देश पड़ोसी राष्ट्र के साथ संबंध सुधारना चाहता है। गैंग ने यह बात अमेरिकी पत्रिका द नेशनल इंट्रस्ट के लेख में कही है। उनके लेख का विषय *दुनिया चीन की नजर में* था। हालांकि, उन्होंने यह लेख विदेश मंत्री का पद संभालने से कई दिन पहले लिखा था। उन्होंने लेख में लिखा है कि दोनों देश स्थिति को सामान्य करना चाहते हैं और संयुक्त रूप से सीमा पर शांति बनाए रखना चाहते हैं। एक रिपोर्ट के मुताबिक, हाल ही में गलवान घाटी और वास्तविक नियंत्रण रेखा के पश्चिम में पैंगोंग लेक के पास दोनों के बीच विवाद नजर आया था। उसके बाद पूर्व में तवांग के पास भी सैनिकों की आपसी भिड़ंत की खबरें आई थीं। रिपोर्ट कहती है कि तिब्बत और उनके धर्मगुरु चीन के हित से जुड़े हैं. इसलिए वह इस पर लगातार चर्चा करता है। गौरतलब है कि हाल ही में भारत और चीन के बीच कॉर्प्स कमांडर स्तर की 17वीं वार्ता हुई। यह वार्ता पिछले साल 20 दिसंबर को चुशूल-मोलडो सीमा पर हुई। इस बैठक में दोनों देश पश्चिमी सेक्टर के मैदानों में सुरक्षा और स्थिरता कायम रखने पर सहमत हुए। भारत के विदेश मंत्रालय ने भी इसकी पुष्टि करते हुए स्थिरता और सुरक्षा की बात कही। विदेश मंत्रालय ने बयान में कहा था कि दोनों देश घनिष्ठ संपर्क और सैन्य-कूटनीतिक तरीके से वार्ता पर सहमत हुए। दोनों देश इस बात पर भी सहमत हुए कि बाकी मुद्दों को भी जल्द से जल्द आपसी सहयोग से सुलझा लिया जाए। बता दें, चीन के विदेश मंत्री चिंग ने अपने लेख में अमेरिका और जापान पर बड़ा आरोप लगाया। उन्होंने लिखा कि अमेरिका ताईवान पर और जापान दक्षित चीन सागर में हमारी यथापूर्व स्थिति को चुनौती दे रहे हैं। उन्होंने लिखा, कुछ लोग कह रहे हैं कि चीन अपना विकास करके शक्ति बढ़ा रहा है और उसका मकसद यथापूर्व स्थिति को खत्म करना है लेकिन, उनकी यह धारणा गलत है। चीन अपना विकास शांति को और मजबूत करने के लिए कर रहा है। चीन ने ताईवान के तनाव को जन्म नहीं दिया, बल्कि, अलगाववादी और बाहरी शक्तियां उसकी यथापूर्व स्थिति *एक-चीन* को लगातार चुनौती दे रहे हैं।

पीएम मोदी वाराणसी से सबसे लंबे रिवर क्रूज को हरी झंडी दिखाकर करेंगे रवाना

वाराणसी (हि.स.)। नववर्ष 2023 में धर्म नगरी वाराणसी में घरेलू पर्यटन को नई उड़ान मिलेगी। यहां आने वाले देशी विदेशी पर्यटकों के साथ स्थानीय नागरिकों को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और प्रदेश के मुख्यमंत्री 13 जनवरी को बड़ी सौगात देंगे। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी इस दिन वाराणसी से दुनिया के सबसे लंबे रिवर क्रूज *गंगा विलास* को वर्चुअल हरी झंडी दिखाकर रवाना करेंगे। यह जानकारी सूचना और जनसंचार विभाग यूपी ने ट्वीट कर दी। खास बात यह है कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने पश्चिम बंगाल में कई परियोजनाओं की शुरुआत की थी। तब उन्होंने कहा था कि काशी से डिब्रूगढ़ तक क्रूज भारत के बढ़ते क्रूज पर्यटन का शानदार उदाहरण होगा। यह दुनिया का अनूठा क्रूज होगा। क्रूज के उद्घाटन के मौके पर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ वाराणसी में रह प्रधानमंत्री के कार्यक्रम से जुड़ेंगे। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के कार्यक्रम में भाग लेने के बाद मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ गंगापार रेती पर बनी टेंट सिटी के साथ बैलून व बोट फेस्टिवल का उद्घाटन करेंगे। इसकी प्रशासनिक तैयारी भी शुरू हो गई हैं । पर्यटन विभाग ने बैलून महोत्सव को लेकर अपनी तैयारियों को मूर्त रूप देना शुरू कर दिया है। गंगा नदी में बनारस से डिब्रूगढ़ के बीच चलने वाले क्रूज गंगा विलास सोशल मीडिया में छाया हुआ है। दुनिया में नदी पर सबसे लंबी यात्रा करने वाला क्रूज गंगा विलास 50 पर्यटक स्थलों से गुजरेगा। इसमें काजीरंगा राष्ट्रीय उद्यान व सुंदरबन डेल्टा जैसे अभयारण्य शामिल हैं। जलमार्ग प्राधिकरण के अफसरों के अनुसार क्रूज 50 दिनों में गंगा, हुगली, ब्रह्मपुत्र और वेस्ट कोस्ट नहर सहित 27 जलधाराओं से होकर 3200 किलोमीटर लंबी यात्रा पूरी करेगा।

शैक्षिक जानकारी प्रदान करने वाले एग्रीगेटर ऐप-एजुकेशनरी लांच

गुवाहाटी। एक ही मंच के तहत सभी शैक्षिक जानकारी प्रदान करने वाले एजुकेशनरी नामक एक एग्रीगेटर ऐप को आज गुवाहाटी में लांच किया गया। एजुकेशनरी टेक्नोक्रेट प्रा. लि. के अंतर्गत इस एप को लांच किया गया। यह ऐप वन-स्टॉप सूचना सेवा प्रदाता है, जिसका उद्देश्य शैक्षणिक और गैर-शैक्षणिक दोनों संस्थानों, पीजी/हॉस्टल के बारे में जानकारी उपलब्ध करना है। इसके अलावा एप में अन्य सेवाओं की एक विस्तृत श्रृंखला भी शामिल है, जैसे डिजिटल लाइब्रेरी, वेबसाइट बिल्डिंग, रिज्यूमे बिल्डिंग और साइकोमेट्रिक टेस्ट के बाद प्रख्यात काउंसलरों के साथ निःशुल्क सेशन शामिल हैं। एजुकेशनरी विभिन्न एड-टेक अनुप्रयोगों के साथ सहयोग कर रहा है ताकि उपयोगकर्ताओं को बेहतर प्रदर्शन के लिए अध्ययन सामग्री, विभिन्न पाठ्यक्रम, क्विज, छात्रवृत्ति जैसे बहु-आयामी समाधान प्रदान किए जा सकें। वन-स्टॉप समाधान होने के नाते, ऐप सभी पूरक और प्रत्यक्ष शिक्षण संस्थानों और सेवाओं को जोड़ने के उद्देश्य से बनाया गया है। इसके अलावा, यह कई मूल्य वर्धित सेवाओं की पेशकश करता है जो उपयोगकर्ताओं की शैक्षणिक यात्रा में योगदान कर सकते हैं। शिक्षाविद समझते हैं कि केवल शिक्षा ही एक ऐसी पीढ़ी का निर्माण कर सकती है जो कार्योन्मुखी और उद्योग के लिए तैयार हो और इसलिए, शिक्षाविदों ने सामाजिक-आर्थिक दृष्टिकोण से एक नई पाठशाला को ग्रामीण क्षेत्रों से संबंधित छात्रों को आईआईटी, गुवाहाटी के प्रख्यात प्रोफेसरों द्वारा मुफ्त शिक्षा प्रदान करने के लिए अपनाया है। इस मौके पर एजुकेशनरी के सह-संस्थापक व निदेशक मनोज क्याल ने कहा कि एजुकेशनरी एप बनाने की हमारी यात्रा निश्चित रूप से एक शानदार अनुभव एवं काफी संतोषजनक भी रही। हर बच्चा प्रतिभावान होता है, लेकिन सही अनुभव के बिना वह रास्ता भटक सकता है। माता-पिता के रूप में हम कभी नहीं चाहेंगे कि ऐसा हो और यहीं पर एजुकेशनरी अपने सत्यापित डेटा, साइकोमेट्रिक टेस्ट, विश्वसनीय मेंटर्स, टीचिंग प्रोफेशनल्स, वेबसाइट बनाने के टूल्स और बहुत कुछ के साथ आता है। उन्होंने आगे कहा कि हमारा मंच आपके बच्चे के पंखों के नीचे की हवा होगा और उन्हें उनकी वास्तविक क्षमता और सपनों को साकार करने में मदद करेगा। ऐप को आधिकारिक तौर पर श्रीमती पुष्पा देवी कयाल ने लांच किया। सह-संस्थापक व निदेशक सुश्री रागिनी कयाल ने कहा कि एजुकेश्नरी एप तैयार करने की यात्रा मेरे लिए एक समृद्ध अनुभव रही है और मैं हमेशा अपने पिता की आभारी हूं जिन्होंने इस प्रयास में मुझे पूरे दिल से समर्थन दिया। मेरे पास कहने के लिए बहुत कुछ नहीं है, लेकिन हमारी पूरी टीम की मेहनत खुद बोले और हमें लोगों का प्यार मिले, जो भविष्य के लिए हमारी प्रेरणा होगी। कई लाभों के अलावा, एजुकेश्नरी एप को इसके विभिन्न अनूठे प्रस्तावों जैसे कि डिजिटल लाइब्रेरी, वेबसाइट और ब्लॉगिंग साइट बिल्डिंग, रिज्यूमे बिल्डिंग, और साइकोमेट्रिक टेस्ट के बाद प्रख्यात परामर्शदाताओं के साथ मुफ्त सत्रों द्वारा मापा जा सकता है। ये विद्यार्थियों को उनकी उपलब्धियों और पुरस्कारों के बारे में संगठित होने में मदद करेंगे, लेखन और ब्लॉगिंग के उनके जुनून का भी पालन करें।

पृष्ठ एक का शेष

तिवा शासन असम के ...

सहित अन्य सुविधाओं पर 50 करोड़ रुपए खर्च किए जाएंगे। मुख्यमंत्री ने कहा कि इसके लिए धन नेशनल बैंक फॉर एग्रीकल्चरल डेवलपमेंट के इंफ्रास्ट्रक्चर डेवलपमेंट असिस्टेंस प्रोग्राम से आएगा। उन्होंने कहा कि सरकार पर्यटक सुविधा के आसपास अतिरिक्त 10 बीघा भूमि के अधिग्रहण या खरीद के लिए आवश्यक उपाय करेगी, ताकि तिवा संस्कृति और पहचान को दर्शाने वाला एक पार्क/उद्यान विकसित किया जा सके। मुख्यमंत्री ने जनता से अपील की कि वे जोंगाल बलहू प्राचीर की ओर जोड़ने वाली सड़क को दो लेन की सड़क में अपग्रेड करने के सरकार के प्रयास में सहयोग करें। उन्होंने राज्य के पर्यटन विभाग से जोंगाल बलहू पर्यटन केंद्र में हर साल *पर्यटक मेला* आयोजित करने की संभावना पर विचार करने और तिवा सामाजिक-सांस्कृतिक संगठनों के सहयोग से जोंगाल बलहू दिवस की मेजबानी करने के लिए भी कहा। मुख्यमंत्री ने तिवा आबादी से अपनी संस्कृति और पहचान से जुड़े रहने और धर्म परिवर्तन की प्रवृत्ति से सुरक्षित दूरी बनाए रखने की भी अपील की, जैसा कि हाल के दिनों में देखा गया है। उन्होंने कहा कि एक जातीयता लंबे समय तक नहीं पनप सकती है यदि वह अपनी सांस्कृतिक जड़ों से अपना संपर्क खो देती है। आज के कार्यक्रम में असम सरकार के जल संसाधन मंत्री, सूचना एवं जनसंपर्क विभाग पीयूष हजारिका, पर्यटन मंत्री जयंत मल्ल बरुवा, स्वास्थ्य एवं समाज कल्याण मंत्री केशव महंत, नगांव जिला के पालक मंत्री परिमल शुक्लबैद्य, विधायक शशिकांत दास, रूपक शर्मा, जीतू गोस्वामी, रमाकांत देउरी, असम पर्यटन विकास निगम के प्रमुख रितुपर्ण बरुवा, तिवा स्वायत्तशासी परिषद के मुख्य कार्यकारी सदस्य जीबन चंद्र कोंवर सहित अन्य गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

कोरोना बूस्टर की...

डोज ली है। चीन सहित पांच देशों में कोरोना के वापस आने से चिंतित केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय ने सभी राज्यों को टीकाकरण की गति को तेज करने के निर्देश पहले ही जारी कर दिए हैं। खासकर बुजुर्ग और गंभीर बीमारियों से ग्रस्त लोगों को कोरोना से बचाव के लिए एहतियाती खुराक लेने की अपील की है।

सीएम ने डिब्रू भवन ...

इसके अलावा, गेस्ट हाउस, सड़कें आदि बनाने से पर्यटकों के लिए नई सुविधाएं जुड़ गई हैं। त्योहार का एक और आकर्षण है, इसमें विभिन्न जातीय समूहों के लिए इस पर्यटन स्थल को एक पिघलने वाले बर्तन में बदलने की क्षमता है। मैं इस उत्सव के आयोजन के लिए आयोजक को धन्यवाद देता हूं, जो मुझे यकीन है कि नौकरी के नए अवसरों का मार्ग प्रशस्त करेगा और छात्रों और प्रकृति और पशु प्रेमियों के लिए आकर्षण पैदा करेगा। मुख्यमंत्री ने कहा कि असम पिछले कुछ वर्षों में विशेष रूप से कानून और व्यवस्था की स्थिति में सुधार के कारण विकास की एक अभूतपूर्व लहर का अनुभव कर रहा है। उन्होंने कहा कि जिस डिगबोई रिफाइनरी को कभी अपने संचालन को बंद करने की संभावना का सामना करना पड़ा था, आज प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के निर्णायक नेतृत्व में विशेष रूप से इसकी स्थापित क्षमता को बढ़ाने में एक नया रूप मिल रहा है। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार के पास असम के सामाजिक-आर्थिक-सांस्कृतिक और शैक्षणिक विकास में तेजी लाने की व्यापक योजना है। उन्होंने कहा कि डिब्रू नदी के कारण हो रहे कटाव को देखते हुए जल संसाधन विभाग समस्या के समाधान के लिए तत्काल उपाय करेगा। उन्होंने कहा कि उनकी सरकार डिगबोई में ओरुणोदय लाभार्थियों की मौजूदा सूची में छह हजार और लाभार्थियों को जोड़ेगी। बाद में मुख्यमंत्री ने डिब्रू भवन गेस्ट हाउस पर्यटकों को समर्पित किया। पीडब्ल्यूडी (बी) द्वारा प्रधानमंत्री खनिज क्षेत्र कल्याण योजना के तहत 57 लाख रुपए की लागत से गेस्ट हाउस बनाया गया है। कार्यक्रम में स्वागत भाषण विधायक डिगबोई सुरेन फूकन दिया। इस मौके पर केंद्रीय पेट्रोलियम एवं प्राकृतिक गैस राज्य मंत्री रामेश्वर तेली, चाय जनजाति कल्याण मंत्री संजय किशन, विधायक तरंग गोगोई, रूपज्योति कुर्मी, बोलिन चेतिया, रूपेश ग्वाला, असम राज्य आवास बोर्ड के अध्यक्ष पुलक गोहाईं समेत अन्य गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

सिनेमा हॉल और ...

वह मनोरंजन की जगह है। सिनेमा हॉल प्रबंधन की निजी संपत्ति है। दरअसल, जम्मू-कश्मीर हाईकोर्ट ने अपने आदेश में हाईकोर्ट ने बाहरी खाना-पीना हॉल में ले जाने की इजाजत दी थी। अब सुप्रीम कोर्ट ने इसे रद्द करते हुए कहा कि इस आदेश को सुनाते हुए हाईकोर्ट ने अपने अधिकार क्षेत्र का उल्लंघन किया है। सुप्रीम कोर्ट में जम्मू कश्मीर सिनेमा हॉल ऑनर्स एसोसिएशन की ओर से याचिका दाखिल की गई है। इसमें जम्मू कश्मीर हाईकोर्ट के आदेश को सुप्रीम कोर्ट में चुनौती दी गई थी। चीफ जस्टिस डीवाई चंद्रचूड़ और जस्टिस पीएस नरसिम्हा की पीठ ने मामले की सुनवाई की।

वंदे भारत ट्रेन कामाख्या...

कर रहा है और आने वाले दिनों में इसके निर्यात की भी योजना पर भी काम किया जा रहा है। नई वंदे भारत ट्रेन अधिकतम 180 किमी की रफ्तार से चल सकती है। नई वंदे भारत ट्रेन में ऑटोमेटिक दरवाजे, एयर कंडीशनर कोच और घूमने वाली कुर्सी है। इस कुर्सी को 180 डिग्री तक घुमाया जा सकता है। ट्रेन में जीपीएस आधारित सूचना सिस्टम, सीसीटीवी कैमरे, वैक्यूम आधारित बायो शौचालय हैं। इसे कई हाईटेक तकनीक से लैस किया गया है। ट्रेन को सुरक्षा कवच से भी लैस किया गया है।

संविधान उद्यान के ...

संविधान का निर्माण किया। राष्ट्रपति ने कहा कि राजस्थान का समानता और महिला सशक्तिकरण में बड़ा योगदान है। महिला सशक्तिकरण और बाल विवाह के खिलाफ कानून राजस्थान के हरविलास शारदा ने बनाया। हरविलास शारदा ने 1938 में कानून का मसौदा बनाया था। जो बाद में शारदा एक्ट के नाम से प्रसिद्ध हुआ। राष्ट्रपति ने कहा कि भारत की लोकतांत्रिक परम्परा बहुत प्राचीन है। बोधि संघ में भी संसदीय प्रक्रियाओं को निभाने का पालन किया जाता था। उन्होंने संविधान को जीवंत दस्तावेज बताते हुए कहा कि यह समय के साथ बदलती जनमानस की आशाओं और आकांक्षाओं को पूरा करने में पूरी तरह सक्षम है। राष्ट्रपति मुर्मू ने भारत रत्न बाबा साहेब डॉ. भीमराव अम्बेडकर के कथन का उल्लेख करते हुए कहा कि संविधान चाहे कितना भी अच्छा क्यों न हो, यदि संविधान को मानने वाले लोग खराब निकले तो निश्चित रूप से संविधान खराब सिद्ध होगा। दूसरी तरफ अगर संविधान को मानने वाले लोग अच्छे हुए तो संविधान अच्छा सिद्ध होगा। राष्ट्रपति ने कहा कि देश में पंचायत से संसद तक महिलाएं अपनी उपस्थिति निरंतर बड़ा कर राष्ट्र और समाज की सेवा कर रही हैं। उन्होंने कहा कि लोकसभा में 82 और राज्यसभा में 33 महिला सदस्य हैं। यह पहली बार है जब संसद में 100 से अधिक महिला सांसद प्रनिधित्व कर रही हैं। राष्ट्रपति ने इस अवसर पर संविधान निर्माण से जुड़ी विभूतियों और स्वतंत्रता सेनानियों को नमन किया। उन्होंने संविधान सभा की महिला सदस्यों के योगदान को भी याद किया। राज्यपाल कलराज मिश्र ने अपने संबोधन के आरंभ में *संविधान उद्यान* के लोकार्पण के लिए राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू का आभार प्रकट किया। उन्होंने कहा कि हमारा संविधान भारतीय संस्कृति का जीवंत दर्शन है। संविधान के लेखन, इसे निर्मित करने के लिए बनाई गई संविधान सभा, संविधान सभा की बैठकों, संविधान निर्माण में संलग्न रहे महापुरुषों की इसमें भूमिका और इसे लागू किए जाने की यात्रा बहुत अर्थपूर्ण है। संविधान उद्यान में इस यात्रा को विभिन्न मूर्तिशिल्पों, छाया-छवियों, मॉडल्स और अन्य कलात्मक माध्यमों के जरिए जीवंत करने का प्रयास किया गया है। राज्यपाल ने कहा कि राजभवन में आने वाले हमारे संविधान और उससे जुड़ी संस्कृति के बारे में जान सकें, इस उद्देश्य से यहां संविधान उद्यान का निर्माण किया गया है। उन्होंने कहा कि संविधान उद्यान संविधान निर्माण से लेकर उसे लागू करने तक की ऐतिहासिक यात्रा का ही साक्षी नहीं है, बल्कि भारतीय संस्कृति का भी कला-रूप है। उन्होंने कहा कि संविधान देश के आदर्शों, उद्देश्यों व मूल्यों का प्रतिबिम्ब है। राज्यपाल मिश्र ने कहा कि संविधान को देश की विविधता की हमारी सामाजिक संस्कृति को ध्यान में रखते तैयार कर लागू किया गया था। उन्होंने कहा कि हमारे संविधान की प्रस्तावना दुनिया की सर्वश्रेष्ठ प्रस्तावना है। संविधान की प्रस्तावना में इसकी शक्ति सीधे जनता में निहित की गई है। मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने अपने संबोधन में राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू का स्वागत किया। उन्होंने कहा कि हमारे संविधान के निर्माण के साथ ही देश में महिलाओं सहित सभी नागरिकों को बराबरी के अधिकार दिए गए, यह भारत रत्न बाबा साहेब डॉ. भीमराव अम्बेडकर और संविधान सभा के सदस्यों की पवित्र सोच को दर्शाता है। मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने कहा कि संविधान के प्रति भावना हर प्रदेश वासी के दिल में रहनी चाहिए। संविधान देश की अखंडता, एकता और समानता के लिए जरूरी है। उन्होंने कहा कि अमेरिका में अब तक एक भी महिला राष्ट्रपति नहीं चुनी गई जबकि हमारे देश ने अब तक दो महिला राष्ट्रपतियों को चुना है। उन्होंने कहा कि अमेरिका में जहां महिलाओं को मताधिकार देने में आजादी से 131 साल लग गए वहीं इंग्लैंड को 100 वर्ष बाद महिलाओं को मताधिकार मिला जबकि हमारे संविधान ने आजादी के साथ ही महिलाओं को मताधिकार दिया। हमारा देश एक है, अखंड है, यह गर्व की बात है। उन्होंने राष्ट्रपति मुर्मू की प्रशंसा करते हुए कहा कि आपका व्यक्तित्व कृतित्व हम सबको प्रेरणा देगा। मुख्यमंत्री ने कहा कि संविधान की मूल भावना हर नागरिक को पता होनी चाहिए, इसे ध्यान में रखते हुए राज्यपाल कलराज मिश्र संवैधानिक जागरूकता के लिए बहुत प्रतिबद्धता के साथ कार्य कर रहे हैं। उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि राजभवन में नवनिर्मित संविधान पार्क संवधानिक आदर्शों, मूल्यों और इसकी मूल भावना के प्रसार को आगे बड़ाएगा। राष्ट्रपति मुर्मू ने शिला पट्टिका का अनावरण कर संविधान उद्यान का लोकार्पण किया। इसके उपरान्त उन्होंने राज्यपाल कलराज मिश्र, मुख्यमंत्री अशोक गहलोत, विधानसभा अध्यक्ष डॉ. सी.पी. जोशी एवं नगरीय विकास एवं आवासन मंत्री शांति धारीवाल के साथ संविधान उद्यान का भ्रमण किया। उन्होंने विभिन्न मूर्तियों, छायाचित्रों, मॉडल आदि में संजोई गई भारतीय संविधान के निर्माण की ऐतिहासिक यात्रा का अवलोकन किया। उन्होंने राजभवन में स्थापित फ्लैग पोस्ट, मयूर स्तंभ, गांधी प्रतिमा एवं महाराणा प्रताप प्रतिमा की सराहना की। उन्होंने संविधान उद्यान के कलात्मक एवं विशद प्रस्तुतीकरण और वृहद शिल्प को महत्वपूर्ण बताते कहा कि इससे यहां आने वाले लोग संविधान की संस्कृति से जुड़ेंगे। राज्यपाल के प्रमुख सचिव सुबीर कुमार, प्रमुख विशेषाधिकारी गोविंदराम जायसवाल एवं आर्किटेक्ट अनूप बरतरिया भी इस दौरान साथ रहे। राज्यपाल ने राष्ट्रपति मुर्मू को इस अवसर पर संविधान उद्यान पर प्रकाशित पुस्तक और स्मृति चिह्न भेंट किया। कार्यक्रम में संविधान उद्यान पर आधारित चलचित्र का भी प्रदर्शन किया गया। राष्ट्रपति ने इस अवसर पर पावर ग्रिड कारपोरेशन ऑफ इंडिया द्वारा राजस्थान में सौर ऊर्जा क्षेत्रों के लिए स्थापित पारेषण तंत्र का वर्चुअल उद्घाटन किया। उन्होंने एक हजार मेगावाट की बीकानेर सौर विद्युत परियोजना का वर्चुअल शिलान्यास भी किया। कार्यक्रम में मुख्य न्यायाधीश पंकज मित्थल, राज्य मंत्रिपरिषद के सदस्यगण, नेता प्रतिपक्ष गुलाब चंद कटारिया, सांसद, विधायक, मुख्य सचिव उषा शर्मा, जनप्रतिनिधि, गण्यमान्यजन और प्रशासनिक अधिकारी उपस्थित रहे।

राजौरी : आतंकियों ...

रखा जाएगा। गौरतलब है कि रविवार देर शाम को आतंकियों ने हिंदू समुदाय के लोगों को निशाना बनाते हुए चार लोगों की हत्या कर दी जबकि इस दौरान दस लोग घायल हो गए थे। मारे गए लोगों में से एक दीपक कुमार के आंगन में सोमवार सुबह आईईडी विस्फोट में दो नाबालिगों की मौत हो गई जबकि छह लोग घायल हुए थे।

मोदी और ब्रिटेन...

दौर जारी है। जी 20 की अध्यक्षता के दौरान, भारत की कोशिश रहेगी कि सभी को एक साथ लेकर चलें। इसे लेकर कई देशों ने भारत से उम्मीद भी जताई है। आपको बता दें कि पीएम मोदी ने मिशन लाइफ पर अपने विचार सबसे पहले ग्लासगो में वर्ष 2021 में आयोजित काप (कांफ्रेंस आफ पार्टीज)- 26 में रखा था, जिसमें उन्होंने दुनिया भर को मिशन लाइफ से खुद को जोड़ने की पहल की थी। साथ ही नई पीढ़ी को इसके प्रति अभी से जागरूक करने पर जोर दिया था। खासकर स्कूलों में इसे शामिल करने का भी सुझाव दिया था।

वंदे भारत ट्रेन : उद्घाटन...

भारत ट्रेन के कांच स्टोन पेल्टिंग प्रूफ बनाए गए हैं। उससे आंतरिक हिस्सों में कोई नुकसान होने वाला नहीं है। देश की इस पहली स्वदेश निर्मित हाई स्पीड प्रीमियम ट्रेन पर पथराव की घटना को राजनीति से जोड़ कर भी देखा जा रहा है। गत शुक्रवार को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने हावड़ा-न्यू जलपाईगुड़ी के बीच वंदे भारत ट्रेन को हरी झंडी दिखाकर इसका शुभारंभ किया था। उधर वंदे भारत एक्सप्रेस पर पथराव की घटना पर भाजपा नेता शुभेंदु अधिकारी ने मामले की एनआईए जांच की मांग की है। रेलवे के एक अधिकारी मंगलवार को बताया कि घटना के सिलसिले में अज्ञात लोगों के खिलाफ मामला दर्ज कर लिया गया है और जांच जारी है। बताया कि जिस कोच के शीशे में दरार आई है, उसे अभी बदला नहीं गया है। इसके लिए टेक्नीशियन आएंगे और वही शीशे को बदलेंगे। उन्होंने बताया कि गाड़ी का संचालन पहले की तरह ही किया जा रहा है। बीते साल 30 दिसंबर को प्रधानमंत्री मोदी ने हावड़ा-न्यू जलपाईगुड़ी के बीच देश की सातवीं वंदे भारत एक्सप्रेस ट्रेन को वीडियो कांफ्रेंसिंग के जरिए हरी झंडी दिखाई थी। भारतीय जनता पार्टी ने वंदे भारत एक्सप्रेस पर पथराव मामले में एनआईए जांच की मांग की है। भाजपा नेता शुभेंदु अधिकारी ने कहा कि क्या यह घटना हावड़ा स्टेशन में वंदे भारत ट्रेन के उद्घाटन समारोह के दौरान *जय श्री राम* के नारे लगाने का बदला थी। उन्होंने कहा कि मैं प्रधानमंत्री और रेल मंत्रालय से अपील करता हूं कि इस मामले की जांच एनआईए को सौंपी जाए और अपराधियों को दंडित किया जाए। वंदे भारत एक्सप्रेस के उद्धाटन के दौरान ममता बनर्जी ने हावड़ा स्टेशन पर मंच पर बैठने से इनकार कर दिया। यहां से न्यू जलपाईगुड़ी के लिए वंदे भारत एक्सप्रेस को हरी झंडी दिखाई जानी थी। बताया जा रहा है कि रेलवे स्टेशन पर आई भीड़ में से कुछ लोगों ने जोरदार नारेबाजी की। इसके बाद ममता बनर्जी ने मंच पर बैठने से इनकार कर दिया। रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव और राज्यपाल सीवी आनंद बोस ने ममता बनर्जी को शांत करने का प्रयास किया। हालांकि, ममता ने मंच नहीं जाने का फैसला किया और मंच के सामने कुर्सी पर बैठ गईं। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 30 दिसंबर, 2022 को पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी की मौजूदगी में हावड़ा और न्यू जलपाईगुड़ी को जोड़ने वाली वंदे भारत एक्सप्रेस को हरी झंडी दिखाई थी। इसके कुछ दिनों बाद यह घटना सामने आई है। पीएम मोदी ने भारत एक्सप्रेस ट्रेन के उद्घाटन के मौके पर कहा था कि देश की आजादी के *अमृत महोत्सव* में देश ने 475 *वंदे भारत ट्रेन* शुरू करने का संकल्प लिया था। आज इसी में से एक हावड़ा को न्यू जलपाईगुड़ी से जोड़ने वाली वंदे भारत शुरू हुई है। इससे पहले भी सेमी-हाई स्पीड ट्रेन वंदे भारत एक्सप्रेस पर पथराव की घटनाएं हुई हैं। 15 दिसंबर 2022 को छत्तीसगढ़ में नागपुर-बिलासपुर वंदे भारत एक्सप्रेस ट्रेन पर पत्थर फेंके गए थे, इसके चलते ट्रेन की खिड़की का शीशा क्षतिग्रस्त हो गया था। हालांकि यात्रियों को कोई नुकसान नहीं हुआ था। यह घटना दुर्ग और भिलाई स्टेशनों के बीच हुई थी। इस घटना के मात्र चार दिन पहले ही प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने हरी झंडी दिखाकर नागपुर-बिलासपुर वंदे भारत ट्रेन का शुभारंभ किया था। पश्चिम बंगाल में सिलीगुड़ी नगर निगम के नेता प्रतिपक्ष अमित जैन पर हुए हमले को लेकर भाजपा कार्यकर्ताओं में नाराजगी है। इसको लेकर मंगलवार को भाजपा नेताओं ने धरना दिया। इस दौरान भाजपा विधायक आनंदमय बर्मन और दुर्गा मुर्मू को पुलिस ने गिरफ्तार भी किया।

कंझावला कांड : अंजलि...

बताया है कि हादसे से पहले क्या हुआ और कैसे वो दुखद घटना घटी। उसने बताया है कि उस रात वो दोनों एक होटल में थे और वहां से पार्टी करके लौट रहे थे। अंजलि ने बहुत ड्रिंग की हुई थी और वो बहुत नशे में थी। उसे बिल्कुल भी होश नहीं था। उसने स्कूटी चलाने की जिद की। मैंने उसे मना किया तो हमारी हाथापाई हो गई। मैं पीछे बैठकर स्कूटी को संभालने की कोशिश कर रही थी। घटना के बाद में उसने बताया कि गाड़ी सामने से आई हमारी टक्कर हो गई। अंजलि गाड़ी के नीचे आ गई और मैं स्कूटी के बगल में गिर गई। वो गाड़ी से निकल ही नहीं पाई। गाड़ी चलाने वाले जानते थे कि गाड़ी के नीचे कुछ फंसा है, लेकिन वो उसे निकालने के लिए बाहर नहीं आए और उसे घसीटते हुए ले गए। उसने ये भी बताया कि होटल में अंजलि के सारे दोस्त थे और उसका बॉयफ्रेंड भी था। मैं अंजलि के अलावा किसी को नहीं जानती थी। उसकी उसके बॉयफ्रेंड से कुछ बातचीत हुई थी। मैं बाहर गई थी, जैसे ही लौटी तो उसने कहा कि चल घर चलते हैं। हम निकले तब स्कूटी मैं चला रही थी। फिर उसने जिद की कि स्कूटी मैं चलाऊंगी। मैंने स्कूटी की चाबी उसे दे दी।

आधार कार्ड में घर के ...

पासपोर्ट आते हैं जिनपर मुखिया और उस व्यक्ति दोनों के नाम एवं संबंध अंकित हों। प्राधिकरण ने कहा है कि अगर किसी व्यक्ति के पास इस तरह का कोई दस्तावेज नहीं है तो वह परिवार के मुखिया की तरफ से एक निर्धारित प्रारूप में की गई स्व-घोषणा को जमा कर सकता है। बयान के मुताबिक, परिवार के मुखिया की सहमति से पते को ऑनलाइन ढंग से आधार में अद्यतन करने की सुविधा किसी निवासी के बच्चों, पत्नी या माता-पिता जैसे उन करीबी रिश्तेदारों के लिए काफी मददगार होगी जिनके पास अपने नाम पर सहयोगी दस्तावेज नहीं हैं। विभिन्न कारणों से लोग शहरों एवं कस्बों को बदलते रहते हैं, ऐसे में यह सुविधा लाखों लोगों के लिए मददगार होगी। आधार में दर्ज पते को अद्यतन करने की यह नई सुविधा पहले से जारी सुविधा से इतर है। यूआईडीएआई पहले से ही पते के वैध दस्तावेजों के आधार पर अद्यतन करने की सुविधा देता रहा है। प्राधिकरण ने यह भी कहा है कि 18 साल से अधिक उम्र के किसी भी व्यक्ति को परिवार का मुखिया माना जा सकता है और वह अपने परिवार के अन्य सदस्यों के साथ अपना पता साझा कर सकता है। प्राधिकरण के *माई आधार* पोर्टल पर जाकर पते को ऑनलाइन अद्यतन किया जा सकता है। इसके लिए प्राधिकरण ने 50 रुपए का शुल्क भी निर्धारित किया है।

सांबा : रात नौ ...

था। आदेश में कहा गया है कि सीमावर्ती क्षेत्रों के करीब नापाक गतिविधियों को रोकने के लिए लोगों की आवाजाही पर रोक लगा दी गई है। यह रोक विशेष रूप से अंतर्राष्ट्रीय सीमा से 01 किमी के भीतर तक के क्षेत्र में रहेगी। आदेश में आगे कहा गया है कि कोई भी व्यक्ति या व्यक्तियों का समूह जिला सांबा में अंतर्राष्ट्रीय सीमा से सटे एक किलोमीटर तक के क्षेत्रों में रात 9 बजे से सुबह 6 बजे तक नहीं चलेगा। यदि आवाजाही आवश्यक है तो अपने आईडी कार्ड बीएसएफ और पुलिस अधिकारियों को दिखाना होगा। आदेश का उल्लंघन करने वाले व्यक्ति के खिलाफ कानून के अनुसार कार्रवाई की जाएगी।

स्वर्वेद भाष्य

चतुर्थ मंडल **षष्ठ अध्याय**

(वैराग्य)

पक्षी विविध प्रकार के, करें सदा गुण गान।
लता गुल्म फैली रहें, त्रिविध वायु चल आन॥ 43॥

शब्दार्थ : (लता) वेरी, (गुल्म) झाड़ (त्रिविध वायु) तीन प्रकार की वायु (आन) दूसरा।

भाष्य : वन में विविध प्रकार के पक्षी प्रभु का सदा गुणगान कर रहे हैं और लताएं, झाड़ में फैली हुई हैं और दूसरा मंद सुगंध हर्ष पैदा करने वाली वायु बह रही है।

भय शोक चिन्ता नहीं, आज काल दिन रात।
उमगत प्रेम विराग में, शीतल भय सब गात॥ 44॥

शब्दार्थ : (उमगत) बढ़त (गात) शरीर।

भाष्य : उस पर्वत निवासी सहज योगी को भय, शोक और चिंता नहीं रहती। वह दिन-रात एक प्रकार से प्रभु-प्रेम, विराग के उमंग में आनंदित रहता है, जिससे आत्मा और सारा देह-संघात सोमरस केपान से शीतल हो जाता है।

रंगिया में भारी मात्रा में हेरोइन जब्त, तीन गिरफ्तार

रंगिया (निसं)। कामरूप (ग्रामीण) जिला के रंगिया पुलिस ने गुप्त सूचना के आधार पर अभियान चलाकर ड्रग्स की तस्करी मामले में ससुर, दामाद समेत तीन मादक पदार्थ के तस्करों को गिरफ्तार किया है। पुलिस ने मंगलवार को बताया कि रंगिया थाना प्रभारी भास्कर मल्ल पटवारी के नेतृत्व में पुलिस की टीम ने दो अलग-अलग स्थानों पर अभियान चलाकर ड्रग्स की तस्करी मामले में ससुर और दामाद समेत तीन लोगों को गिरफ्तार किया है। गिरफ्तार आरोपी के पास से 7 पैकेटों में प्लास्टिक के छोटे-छोटे 63 कंटेनर में रखे गए 128 ग्राम हेरोइन जब्त किया है। गिरफ्तार आरोपीं की पहचान आयेज अली, रियाजुल हक और इस्लामुद्दीन

अहमद के रूप में की गई है। पुलिस ने इस संबंध में एनडीपीएस एक्ट के तहत एक प्राथमिकी दर्ज कर मामले की जांच कर रही है।

एआईयूडीएफ ने चुनाव क्षेत्र परिसीमन के लिए कांग्रेस को ठहराया जिम्मेदार

हैलाकांदी (हि.स.)। आल इंडिया यूनाइटेड डेमोक्रेटिव फ्रंट (एआईयूडीएफ) के विधायक जाकिर हुसैन लश्कर ने विधानसभा क्षेत्र के पुन: निर्धारण को लेकर भाजपा और कांग्रेस पर निशाना साधा। उन्होंने कहा कि भाजपा सरकार ने मुस्लिम लोगों को वंचित करने के लिए परिसीमन का काम शुरू किया है और इसके लिए कांग्रेस जिम्मेदार है। हैलाकांदी गेस्ट हाऊस में एआईयूडीएफ के विधायक लश्कर ने पत्रकारों से कहा कि अगर कांग्रेस ने सत्ता में रहते यह काम किया होता तो आज भाजपा विधानसभा क्षेत्र पुन: निर्धारण का काम नहीं कर पाती, ऐसे में कांग्रेस की वजह से मुस्लिम जनता अपने अधिकार से वंचित नहीं हो पाती। विधानसभा क्षेत्र परिसीमन के बाद जाकिर किस विधानसभा क्षेत्र से चुनाव लड़ेंगे के जवाब में विधायक ने कहा कि विधानसभा क्षेत्र के मतदाता जहां से कहेंगे, वहां वे चुनाव लड़ेंगे। उनका घर लाला विधानसभा क्षेत्र में शामिल होगा, बावजूद इसके वे अपने वर्तमान विधानसभा क्षेत्र से चुनाव लड़ने के इच्छुक हैं। उल्लेखनीय है कि राज्य में विधानसभा और लोकसभा क्षेत्रों के परिसीमन के बाद कई नेताओं को अपने क्षेत्र को लेकर समस्या उत्पन्न हो गई है। जिसके चलते राज्य में इन दिनों राजनीतिक गतिविधियां काफी तेज हो गई हैं।

मोस्ट वांडेट अपराधी दलगांव में गिरफ्तार

दरंग (हि.स.)। गुवाहाटी के मोस्ट वांटेड अपराधी आमिर अली उर्फ कालिया को दरंग जिला के दलगांव पुलिस ने गिरफ्तार किया है। पुलिस सूत्रों ने मंगलवार को बताया कि आमीर अली उर्फ कालिया को दलगांव पुलिस ने दलगांव के सुकाबाही गांव से गिरफ्तार किया है। कुख्यात अपराधी आमीर अली लंबे समय से सुकाबाही गांव में छिपा हुआ था। उसके खिलाफ गुवाहाटी के दिसपुर पुलिस स्टेशन के साथ-साथ ढेकियाजुली और दरंग जिला के विभिन्न पुलिस स्टेशनों में कई मामले दर्ज हैं। पुलिस आमिर अली से पूछताछ कर रही है।

घर में काम करने वाली लड़की के साथ मारपीट, दो गिरफ्तार

गुवाहाटी (हि.स.)। गुवाहाटी में एक नाबालिग लड़की के साथ दुर्व्यवहार की घटना सामने आयी है। मिली जानकारी के अनुसार शहर के हातीगांव में लखीमी नगर रोड पर शुभम एन्क्लेव अपार्टमेंट के निवासी धीरज बोडो और उनके परिवार पर अपार्टमेंट के अन्य निवासियों ने नाबालिक लड़की से मारपीट और दुर्व्यवहार करने का आरोप लगाया है। आरोप के अनुसार अपार्टमेंट में चार साल से रहने वाले धीरज बोडो को परिवार के विरूद्ध अपार्टमेंट के निवासियों ने हातीगांव पुलिस थाने में शिकायत दर्ज कराई कि धीरज बोडो और उसका परिवार 14-15 साल की एक लड़की के साथ अक्सर मारपीट और दुर्व्यवहार किया करता है। अपार्टमेंट की सुरक्षा में तैनात एक युवक ने अपार्टमेंट सोसायटी को सूचित किया कि नाबालिग लड़की को लंबे समय से शारीरिक रूप से प्रताड़ित किया जा रहा है, आज फिर से उसे पीटा गया, जिसकी वजह से वह गंभीर रूप से घायल हो गई। घटना का विवरण सामने आते ही अपार्टमेंट के अन्य निवासियों ने हातीगांव पुलिस में बोडो परिवार के खिलाफ प्राथमिकी दर्ज कराई। चार महीने से अपार्टमेंट

की सुरक्षा में तैनात युवक किशोरी के ऊपर हो रहे अत्याचार को देखते आ रहा था। 31 दिसंबर की रात को खरीदारी करने के लिए भेजे गए अन्य सिक्योरिटी गार्ड को धीरज ने नाबालिक युवती से शादी का प्रस्ताव दिया था। लड़की की पहचान को साझा नहीं किया गया है। घटना की जानकारी मिलते ही मौके पर पहुंची पुलिस ने घायल किशोरी को अपने साथ ले गई। दर्ज प्राथमिकी के आधार पर पुलिस ने नाबालिक बच्ची से घर में काम करवाने वाले और उसके ऊपर अत्याचार करने के आरोपी पति-पत्नी को गिरफ्तार कर लिया है। पुलिस दर्ज प्राथमिकी के आधार पर मामले की जांच कर रही है।

नलबाड़ी में सरकार के विरोध में प्रदर्शन

नलबाड़ी (हि.स.)। नलबाड़ी जिले के आलिया में आलिया क्षेत्रीय छात्र संघ के नेतृत्व में मंगलवार को मुख्यमंत्री डॉ. हिमंत विश्वशर्मा और मंत्री जयंत मल्ल बरुवा के पुतले जलाकर प्रदर्शन किया गया। यह प्रदर्शन बाक्सा जिले में नलबाड़ी जिले के दस गांवों को शामिल करने के विरोध स्वरूप किया गया। प्रदर्शनकारियों ने मुख्यमंत्री और बरुवा के विरुद्ध जमकर नारेबाजी की। प्रदर्शनकारियों का कहना है कि अगर इन गैर बोडो गांवों को बीटीसी में शामिल करने का फैसला वापस नहीं लिया गया तो वे आने वाले दिनों में बड़ा आंदोलन करेंगे। उनका कहना है कि सरकार हमारे अधिकारों में कटौती न करे।

असम साहित्य सभा मिथिला का भ्रमण करेगी : डॉ. हजारिका

मिथिला सांस्कृतिक समन्वय समिति गुवाहाटी असम द्वारा आज संध्या असम साहित्य सभा के नव निर्वाचित अध्यक्ष पद्मश्री डॉ सूर्य हजारिका को मिथिला पेंटिंग बाला दुपट्टा मिथिला का सम्मान पाग और असमिया फुलाम्म गामोछा से स्वागत सम्मान किया। इस अबसर पर समिति के अध्यक्ष सत्य नारायण साहू पूर्व संस्थापक अध्यक्ष और मुख्य सलाहकार प्रेम कांत चौधरी ,असम सांस्कृतिक महासभा के अध्यक्ष एवं समिति का सलाहकार पवित्र कुमार शर्मा उपस्थित थे। सम्मानोपरांत बातचीत के क्रम में डॉ हजारिका ने असम और मिथिला के पौराणिक संबंध पर चर्चा की। मिथिला के विद्वान मंडन मिश्र से लेकर सीता जन्मस्थान पूनौराधाम सहित जनकपुर पर प्रकाश डाला। बीच बीच में उनकी जिज्ञासा को समिति की ओर से यथोचित उत्तर दिया गया। उन्होंने मुख्यरूप से तीन बातों पर ध्यान दिलाया। पहला मिथिला का संक्षिप्त परिचय पुस्तिका असमिया हो ताकि असम के लोग मिथिला के संबंध में जान सके। दूसरा एक सेमिनार का आयोजन हो जिसमें दोनों भाषा के विद्वान भाग लें ।तीसरा इस वर्ष में गर्मी के बाद करीब 20 लोगों का एक शैक्षणिक यात्रा जिसमे विद्वान , शोधार्थी साथ ही दोनों संस्कृति को समझ रखने बालों का होगा जो लौट कर अपना अनुभव एक किताब के रूप में शोध पत्र प्रस्तुत करेंगें। ऐसा ही एक दल मिथिला से असम का दौरा करेंगे। दोनों भाषा संस्कृति और साहित्य के लिए उत्तम रहेगा।

मिर्जा यार्ड पर नव-विकसित गुड्स सर्कुलेटिंग एरिया शुरू

गुवाहाटी (हि.स.)। पूर्वोत्तर सीमा रेल (पूसीरे) ने हाल ही में न्यू बंगाईगांव-ग्वालपारा टाउन-कामाख्या दोहरीकरण परियोजना के क्रम में मिर्जा रेलवे स्टेशन के पास मिर्जा यार्ड पर नव विकसित गुड्स सर्कुलेटिंग एरिया को शुरू किया है। लोडिंग एवं अनलोडिंग को आसान बनाने के लिए नया सर्कुलेटिंग एरिया स्टेशन भवन और गुड्स शेड के आसपास के क्षेत्र में सड़क परिवहन के सुचारू प्रवाह को सुविधाजनक बनायेगा। पूसीरे के मुख्य जनसंपर्क अधिकारी सब्यसाची डे ने मंगलवार को एक बयान में बताया है कि इस इंजीनियरिंग योजना को 825 मीटर × 25 मीटर के गुड्स सर्कुलेटिंग एरिया के साथ गुड्स साइडिंग के प्रावधान को अनुमोदित किया गया था। मिर्जा-चंदुबी की मुख्य सड़क से गुड्स सर्कुलेटिंग एरिया को जोड़ने के लिए 950 मीटर की पहुंच सड़क के साथ गुड्स सर्कुलेटिंग एरिया का कार्य जनवरी 2021 में शुरू किया गया था और अक्टूबर 2022 में लगभग 10.5 करोड़ की लागत से पूरा हुआ। गुड्स सर्कुलेटिंग एरिया में बुनियादी सुविधाओं के साथ एक श्रम विश्राम कक्ष भी विकसित किया गया है। मौजूदा 5 (पांच) लाइन यार्ड को 7 (सात) लाइन यार्ड में तैयार किया गया है और 27 दिसंबर, 2022 को शुरू किया गया। मिर्जा में गुड्स सर्कुलेटिंग एरिया के विकास से न्यू गुवाहाटी यार्ड में परिवहन का बोझ काफी हद तक कम हो जाएगा। मिर्जा यार्ड में लोडिंग और अनलोडिंग से गुवाहाटी शहर की ओर ट्रैफिक जाम कम होगा। व्यापारी वर्ग शहरी ट्रैफिक में बिना फंसे सीधे गुड्स की डिलीवरी ले सकते हैं। मिर्जा स्टेशन पर सर्कुलेटिंग एरिया के विकास से ग्राहकों एवं व्यापारियों को मेघालय और अरुणाचल प्रदेश जैसे पड़ोसी राज्यों को माल की आपूर्ति करने में भी मदद मिलेगी।

नगांव में तीन डकैतों को स्थानीय लोगों ने दबोचा

नगांव (निसं)। हैबरगांव पुलिस चौकी के अंतर्गत तथा 34 बटालियन सीआरपीएफ बटालियन मुख्यालय के समीप हेरापट्टी इलाकें में स्थानीय लोगों ने बीते रात तीन डकैत को पकड़ कर पिटाई के बाद पुलिस को सौंप दिया। घटना के संदर्भ में मिली जानकारी के अनुसार सीआरपीएफ को खबर मिली कि तीन अज्ञात डकैत गांव में अप्रिय घटना को अंजाम देने के फिराक में है। 34 बटालियन सीआरपीएफ व स्थानीय पुलिस ने संयुक्त रूप से हेरापट्टी इलाकें में पहुंचे। तबतक स्थानीय लोगों ने तीनों डकैतों को पकड़कर उत्तम-मध्यम करते हुए पुलिस को बताया कि डकैती की घटना को अंजाम देने के फिराक में तीनों डकैत इलाके में तांडव मचा रहे थे। पकड़े गए तीनों डकैतों के नाम अविनाश राजपुत, निखिल सिंह और शिवम मिश्रा है, जो मध्यप्रदेश के चाटना जिले के निवासी हैं। पुलिस ने उक्त तीनों से दो पिस्तौल भी बरामद किया है। लेकिन पिस्तौल नकली है या असली इसकी पुष्टि पुलिस ने खबर लिखने तक नहीं की है। वहीं यह भी कहा जा रहा है कि सोना खरीदने के मकसद से उक्त तीनों डकैत इलाके में डेरा डाले हुए थे। पुलिस मामले की तहतक जाने के लिए उक्त तीनों डकैतों से गहन पुछताछ कर रही है। आखिर हकीकत क्या ? है,इसका खुलासा पुलिसिया कारवाई के बाद पता चलेगा। लेकिन मामला रहस्यमय बना हुआ है।

सड़क दुर्घटना में एक व्यक्ति की मौत

गुवाहाटी (हि.स.)। कामरूप (ग्रामीण) जिला के रंगिया के आईओसी के समीप हुई एक सड़क दुर्घटना में एक व्यक्ति की मौके पर ही मौत हो गई। पुलिस ने बताया कि मंगलवार को राष्ट्रीय राजमार्ग-27 को पार करते समय तेज रफ्तार वाहन की चपेट में आने से संकेश्वर दास नामक व्यक्ति की मौके पर ही मौत हो गई। दुर्घटना के बाद मौके से वाहन समेत चालक फरार होने में सफल रहा। घटना की खबर मिलते ही मौके पर पहुंची पुलिस ने शव को अपने कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है। पुलिस इस संबंध में एक प्राथमिकी दर्ज कर मामले की जांच कर रही है।

असम पुस्तक मेला में बच्चों ने दिया प्रकृति बचाने का संदेश

गुवाहाटी (हि.स.)। असम प्रकाशन परिषद और अखिल असम पुस्तक प्रकाशक एवं विक्रेता संघ की संयुक्त पहल पर चांदमारी स्थित असम इंजीनियरिंग कालेज खेल मैदान में गत 29 दिसंबर से जारी गुवाहाटी पुस्तक मेला में मंगलवार को बच्चों ने प्रकृति बचाने का सुंदर संदेश दिया। पुस्तक मेला आगामी 9 जनवरी तक चलेगा। प्रतिदिन पुस्तक मेला में लोगों की भारी भीड़ उमड़ती नजर आ रही है। जिसको लेकर लेखक, पुस्तक प्रकाशक काफी उत्साहित हैं। पुस्तक मेला में अब तक 1.35 कोरोड़ से ज्यादा पुस्तकें बिक चुकी हैं। पुस्तक मेला परिसर में प्रतिदिन विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया जा रहा हैं। इनमें से अनेक कार्यक्रम बच्चों के लिए भी आयोजित किए जा रहे हैं। मंगलवार पुस्तक मेला परिसर में सोनपरुयार हाही, चेमनिया चराई नामक एक गैरसरकारी संस्था के तत्वावधान में बच्चों के लिए एक रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन

किया गया था। संस्था के अध्यक्ष शुक्लेस्वर नाथ ने दीप प्रज्ज्वलन कर कार्यक्रम का शुभारंभ की। इस अवसर पर विशिष्ठ अतिथि के रूप में लक्ष्मी एडुकेशन फाउंडेशन सत्रीया संगीत विद्यालय के स्वत्वाधिकारी स्वप्ना दास, विशिष्ट समाजसेवी तथा सीए समीक्षा दास, सलाहकार अंजना गोगोई आदि उपास्थित थीं। वहीं अधीर चंद्र दास, पुतुल ठाकुरिया मेधी, दिन चाकी फाउंडेशन के चेरमैंन सुमी रहमान, अपरुपा नारी संगठन की सचिव रूना लैला, अणिमा तालुकदार दत्त, उपाध्यक्ष दिलीप कुमार नंदी मौजूद थे। इस कार्यक्रम में असम के विभिन्न स्थानों से आये बच्चे भक्तीमूलक गीत ,नृत्य, जागरूकता नृत्य, कामरूपी लोकगीत, खोल वादन आदि के प्रदर्शन के साथ-साथ, लक्ष्मी सत्रीया संगीत विद्यालय के छात्र-छात्राओं ने सत्रीया नृत्य प्रस्तुत किया। साथ में बच्चों ने संगीत के माध्यम से प्रकृति बचाने का संदेश भी दिया। कृष्णमणि बर्मन की कविता का पाठ, कहानियां और संगीत से सबका मन मोह लिया। आज के इस कार्यक्रम में सोनपरुयार हाही, चेमनिया चरा के उपाध्यक्ष दिलीप कुमार नंदी की एक कविता की किताब का विमोचन किया गया। सोनपरुयार हाही, चेमनिया चरा और नेहा प्रकाशन द्वारा प्रकाशित कबितार परश नामक कविता की पुस्तक का विमोचन जनप्रिय संगीत कलाकार गिताली देवी, सुमित सागर ने किया। साथ ही साहित्यकार डॉ भवेश दास, विनय चालिहा, शुक्लेस्वर नाथ, अभिनेत्री तनया नंदी के साथ ही अन्य गण्यमान्य व्यक्ति उपास्थित थे।

रंगिया के एनएच पर भयानक हादसा

रंगिया (निसं)। कामरूप जिले के रंगिया सेप्टी स्थित राष्ट्रीय राजमार्ग पर मंगलवार को एक भयानक सड़क हादसा हुआ जिसमें एक व्यक्ति की घटनास्थल पर ही मौत हो गई। मृतक की पहचान टंकेश्वर दास के रूप में की गई है। सड़क पार करते समय तेज रफ्तार वाहन की चपेट में आने से राहगीर टंकेश्वर दास की मौके पर ही मृत्यु हो गई।

पुआल से लदा वाहन आग में खाक

नागांव (निसं)। नगांव शहर के बहुवाभेटी इलाके में आज पुवाल से लदे एक टाटा मोबाइल वाहन में आग लग गई। बहुआ भेटी में आज दोपहर सड़क के किनारे खड़े पुआल लदे वाहन में आग लग गई। स्थानीय लोगों द्वारा सूचना देने के बाद अग्निशमन की गाड़ी मौके पर आग को बुझा दिया। लेकिन वाहन पूरी तरह से जलकर राख हो गया। आग कैसे लगी, इसका पता नहीं चल पाया है।

श्रीश्री गोरोखिया गोपाल मारली थान का वार्षिकोत्सव कार्यक्रम की लाई खुटा स्थापित

रंगिया (निसं)। रंगिया महकमा के अंतर्गत तुलसीबाड़ी स्थित ऐतिहासिक श्रीश्री गोरोखिया गोपाल मारली थान का 39 वाँ वार्षिक महोत्सव 3 दिवसीय व्यापक कार्यक्रमों के साथ आगामी 25 जनवरी को प्रारंभ किया जाएगा। इस वार्षिक महोत्सव के प्रारंभिक कार्यक्रम के रूप में इसके मुख्य पंडाल का शुभारंभ आज धार्मिक रीति-रिवाजों के साथ किया गया। इस मौके पर शंख, घंटा और उरुली से मुखरित माहौल में एक शोभायात्रा निकाली गई तथा इसके मुख्य स्तंभ को हर्सोल्लास के साथ आयोजन स्थल तक लाया गया जिसमें इलाके के विभिन्न भागों से आए भक्तों ने कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई। आयोजन स्थल धार्मिक वातावरण से सराबोर हो गया। स्थानीय विधायक तथा प्रदेश भाजपा अध्यक्ष भवेश कलिता ने इस मुख्य स्तंभ की स्थापना की। कार्यक्रम के दौरान उन्होंने आने वाले दिनों में थान के स्थायी सभागार, मंच

के साथ मंदिर प्रांगण को नए रूप से उन्नतिकरण करने का आश्वासन दिया। वहीं दूसरी ओर आयोजन समिति के अध्यक्ष अमृत चन्द्र कलिता एवं सचिव भगीरथ कलिता द्वारा इस महोत्सव में सभी की उपस्थिति सहयोगिता और मार्गदर्शन की कामना की गई है।

श्री श्याम सत्संग मंडल का श्याम वार्षिकोत्सव मना

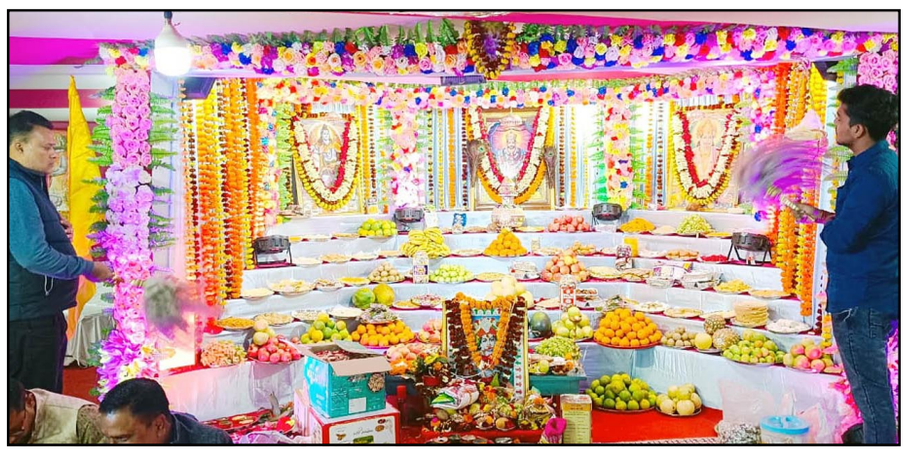

गुवाहाटी (विभास)। श्री श्याम सत्संग मंडल बेलतला में जमकर हुई भजनों की वर्षा, लोग सारी रात भजनों की अमृत गंगा में डूब कर भाव विभोर होते रहे, विदित है कि श्री श्याम सत्संग मंडल बेलतला द्वारा हर वर्ष श्री खाटू श्याम का वार्षिक उत्सव मनाया जाता है जहां पर भारत के विभिन्न राज्यों से आए हुए सुप्रसिद्ध कलाकारों द्वारा भजन और नृत्य नाटिका का आयोजन किया जाता है इस व भी कोलकाता राजस्थान व अन्य राज्यों से कलाकारों को बुलाया गया था कार्यक्रम का शुभारंभ समाज के विशिष्ट लोगों और समिति के पदाधिकारिय द्वारा खाटू श्याम बाबा के श्रृंगार और 56 भोग चढ़ाने के साथ ही अखंड ज्य जला कर किया गया इसके उपरांत बाहर से आए सुप्रसिद्ध कलाकारों के द्वा गणेश वंदना के साथ ही भजन का कार्यक्रम आरंभ किया गया जहां एक से बढ़कर एक मधुर भजनों की प्रस्तुति की गई बीच-बीच में नृत्य नाटिका और झांकियों के माध्यम से विभिन्न देवी देवताओं का गुणगान किया गया पूरी रा चले भजन कार्यक्रम के बाद दूसरे दिन अमृत भंडारे का आयोजन किया गय जहां पर हजारों की संख्या में लोगों ने प्रसाद ग्रहण किया।

आईआईटी, गुवाहाटी में कमाल : टारगेट पर सटीक गोलियां और तंग गलियों की निगरानी के लिए स्वदेशी ड्रोन तैयार

गुवाहाटी (विभास)। भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आईआईटी) गुवाहाटी का एयरोमॉडलिंग क्लब विभिन्न उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए अलग-अलग प्रकार के ड्रोन विकसित किया है। जिसमें वेयरहाउस मैनेजमेंट के लिए वेयरहाउस ड्रोन, सैन्य और कानून व्यवस्था को सुदृंढ करने के लिए रीपर ड्रोन और तंग जगहों में निगरानी के लिए पक्षियों के डिजाइन पर आधारित ऑर्निथॉप्टर ड्रोन शामिल हैं। क्लब छात्रों को एयरोमॉडलिंग में रचनात्मकता, टेक्नोलॉजी और इनोवेशन का इस्तेमाल करने और आसान इंटरफेस वाले स्मार्ट ड्रोन को विकसित करने के लिए प्रोत्साहित कर रहा है। एक अधिकारी ने यह जानकारी दी। रसायन विज्ञान विभाग में प्रोफेसर चिवुकुला वासुदेव शास्त्री ने बताया कि क्लब के विभिन्न प्रकार के ड्रोन विकसित किए हैं। जिसमें वेयरहाउस ड्रोन, रीपर ड्रोन और ऑर्निथॉप्टर ड्रोन शामिल हैं। इन परियोजनाओं के अलावा छात्रों ने सटीक निशाना लगाकर गोलियां दागने वाला एक ड्रोन भी विकसित किया है। इस ड्रोन को इस तरह से डिजाइन किया गया है कि

पायलट के अगले आदेश का इंतजार करते हुए ड्रोन पहले वाले टारगेट के पास लौट आए। रीपर ड्रोन की बात की जाए तो इसे सैन्य और कानून व्यवस्था को ध्यान में रखते हुए डिजाइन किया गया है। इस ड्रोन का उपयोग गश्त लगाने, टारगेट की पहचान करने और ट्रैकिंग को ध्यान में रखते हुए किया जा सकता है। प्रोफेसर शास्त्री ने बताया कि ड्रोन का इस्तेमाल बाढ़ और भूकंप जैसी प्राकृतिक आपदाओं के दौरान भी किया जा सकता है। आपदा प्रबंधन टीम घायलों और फंसे हुए लोगों को इसकी मदद से बचा सकते हैं। इसके अलावा ड्रोन की मदद से राष्ट्रीय उद्यानों/वन्यजीव अभयारण्यों जानवरों के व्यवहार का अध्ययन करने के लिए डेटा भी एकत्रित किया जा सकता है। इसके अलावा गोदाम प्रबंधन के लिए वेयरहाउस ड्रोन, सैन्य और कानून प्रवर्तन के लिए रीपर ड्रोन और तंग जगहों पर निगरानी के लिए पक्षियों के डिजाइन पर आधारित ऑर्निथॉप्टर ड्रोन शामिल हैं। इस संबंध में एक अधिकारी ने कहा कि क्लब छात्रों को एयरोमॉडलिंग में रचनात्मकता, प्रौद्योगिकी और नवाचार का उपयोग करने तथा आम लोगों के वास्ते स्मार्ट ड्रोन विकसित करने के लिए प्रोत्साहित कर रहा है। स्वदेशी रूप से विकसित रेवेन ऐसा ड्रोन है जिसमें पंख लगे हैं और यह लंबवत रूप से उड़ान भरने तथा उतरने में सक्षम है। उन्होंने कहा कि इन परियोजनाओं के अलावा, छात्रों ने एक ऐसा ड्रोन भी विकसित किया है जो अचूक निशाने के साथ लक्ष्यों पर गोलीबारी करने में सक्षम है। गोलीबारी तंत्र को इस तरह से डिज़ाइन किया गया है कि यह अगली गोलीबारी के लिए पायलट के आदेश की प्रतीक्षा में अपनी पिछली स्थिति में लौट आए।

नीतीश ने बिहार की जनता को धोखा दिया, प्रजातांत्रिक तरीके से देंगे जवाब : जेपी नड्डा

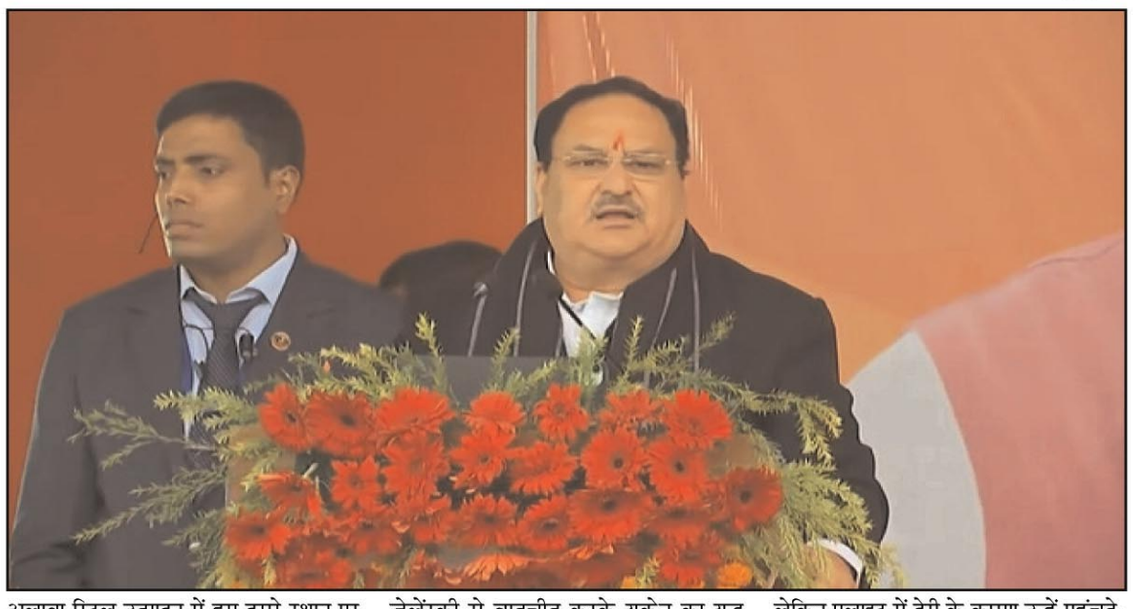

पटना/मुजफ्फरपुर/वैशाली, (हि.स.)। भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा मंगलवार को दोपहर एक बजे विशेष विमान से पटना पहुंचे और सड़क मार्ग से मुजफ्फरपुर जिले के पारु उच्च विद्यालय पहुंचे। यहां उन्होंने सभा को सम्बोधित करते हुए कहा कि नीतीश ने बिहार की जनता को धोखा दिया है। जनादेश का अनादर किया है। प्रजातांत्रिक तरीके से इसका जवाब दिया जाएगा। नड्डा ने कहा कि हम कुर्सी पर बैठने के लिए नहीं, बिहार का विकास करने के लिए सत्ता में थे। आज हजारों करोड़ रुपये के पुल बिहार में बन रहे हैं। ये सब काम नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में शुरू हुए लेकिन अब एक समस्या है। हम ऊपर से तो लक्ष्मी भेज देंगे लेकिन अगर नीचे जंगलराज हो तो काम नहीं हो पाता। विकास थम जाता है। आज मैं कह सकता हूं कि बिहार में जंगलराज आ चुका है। अगस्त महीने में ही कितनी हत्याएं हुईं। लोग बंधक बनाए गए। महिलाओं के साथ अत्याचार बढ़ गए हैं। कानून व्यवस्था ध्वस्त हो चुका है। राष्ट्रीय अध्यक्ष ने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की तारीफ करते हुए कहा कि भारत आज दुनिया की मैन्यूफ्रेक्चरिंग हब बन गया है। भारत दुनिया में मोबाइल का अब निर्यात कर रहा है। इसके अलावा स्टिल उत्पादन में हम दूसरे स्थान पर पहुंच गए है। उन्होंने कहा कि अमेरिका और यूरोप में भी कोरोना टीकाकरण पूरा नहीं हो पाया है जबकि भारत में 220 करोड़ से अधिक टीके लग चुके हैं। नड्डा ने कहा कि पुतिन और जेलेंस्की से बातचीत करके यूक्रेन का युद्ध रुकवाया और एक साथ 25 हजार विद्यार्थियों को सुरक्षित निकालकर ले आए। इसके पहले सोनपुर के हरिहरनाथ मंदिर में सुबह दस बजे जेपी नड्डा का पूजा करने का कार्यक्रम था लेकिन फ्लाइट में देरी के कारण उन्हें पहुंचते-पहुंचते मंदिर का पट बंद हो चुका था। इसके चलते वे दर्शन नहीं कर सके। इसके बाद वे तय कार्यक्रम के तहत सोनपुर से हाजीपुर होते हुए वैशाली की ओर निकल गए।

शत्रुंजय और सम्मेद शिखर की रक्षा को लेकर जैन समाज ने भरी हुंकार, सूरत में निकाली विशाल रैली

अहमदाबाद, (हि.स.)। गुजरात में पालीताणा के शत्रुंजय जैन तीर्थ स्थल पर तोड़-फोड़ और झारखंड में सम्मेद शिखर को पर्यटक स्थल घोषित करने के विरोध में जैन समाज ने मंगलवार सुबह सूरत में विशाल रैली निकाली। करीब तीन किलोमीटर लंबी रैली में बड़ी संख्या में जैनाचार्य भी शामिल हुए। इसका अयोजन शत्रुंजय महातीर्थ और सम्मेद शिखरजी तीर्थ रक्षा के लिए गठित समस्त सूरत जैन संघ की ओर से किया गया। रैली के कारण सूरत की ट्रैफिक व्यवस्था करीब दो घंटे तक ठहर गई। शहर के पाले प्वॉइंट स्थित सरगम शॉपिंग सेंटर के समीप से रैली निकाली गई जो बाद में कलक्ट्रेट पहुंची। जैन समाज के अग्रणियों ने ज्ञापन सौंप कर प्रशासन को अपनी मांगों से अवगत कराया। जैन आचार्य सागरचंद्र सागरसूरी महाराज ने कहा कि सम्मेद शिखर आदिकाल से जैन समाज का तीर्थस्थल है। सरकार की ओर से इसे इको टूरिज्म बनाने पर भी इन दोनों स्थलों की पवित्रता नष्ट होने का खतरा है। लोग चप्पल-जूते पहन कर प्रवेश करेंगे। खाने-पीने की वस्तुएं भी धड़ल्ले से बेची जाएंगी। इन गैर जरूरी प्रवृत्तियों से धार्मिक स्थल की पवित्रता पर असर होगा। अग्रणियों ने रोष व्यक्त करते हुए कहा कि जैनों के तीर्थस्थल पर असामाजिक तत्वों के कारण धार्मिक स्थल और श्रद्धालुओं की भावना को ठेस पहुंची है। उन्होंने अपने दोनों आस्था के स्थलों को तीर्थ स्थल घोषित करने की मांग की है। रैली में समस्त जैन परिवार सकल जैन समाज के तहत सूरत में रहने वाले चारों फिरकों के लोग इसमें शामिल हुए। जैन समाज के अग्रणी नरेन्द्र जई ने बताया कि हमारे तीर्थ स्थलों को सुरक्षित रखने की प्रशासन व्यवस्था रखे। पालीताणा में शत्रुंजय शिखर और झारखंड में सम्मेद शिखर को सरकार तीर्थ स्थल घोषित करे। समाज के अग्रणी मित्तल गोरडिया ने कहा कि रैली में बड़ी संख्या में जैन समाज के लोग जुड़े हैं।

सूरत समेत अन्य शहरों और राज्यों के जैन समाज के लोग हमारी मांग के समर्थन में हैं। उन्होंने कहा कहा कि जैन धर्म अहिंसा के मूल सिद्धांत पर आधारित हैं लेकिन हमारे तीर्थ स्थलों के समीप ही मांस-मदिरा की बिक्री देखी जाती है।

81 करोड़ भारतीयों के राशन में 50 फीसदी की हुई कटौती : कांग्रेस

नई दिल्ली, (हि.स.)। कांग्रेस ने आरोप लगाया है कि 81 करोड़ भारतीयों के राशन में 50 फीसदी की कटौती की गई है। कांग्रेस महासचिव जयराम रमेश ने मंगलवार को एक बयान जारी कर कहा कि नववर्ष की शुरूआत निराशाजनक खबर के साथ हुई है। प्रधानमंत्री मोदी के मंत्रिमंडल ने ह्यप्रधानमंत्री गरीब कल्याण अन्न योजना (पीएमजीकेएवाई)ह्व को बंद कर दिया है। जिससे राष्ट्रीय खाद्य स-,रक्षा अधिनियम (एनएफएसए) के लाभार्थियों को 05 किलोग्राम अतिरिक्त अनाज मिलता था।

पिछले दो वर्षों से 81 करोड़ भारतीय 10 किलोग्राम खाद्यान्न के पात्र थे, लेकिन अब उन्हें केवल 05 किलोग्राम अनाज मिलेगा यानि राशन में अचानक 50 फीसदी की कटौती हुई है। रमेश ने कहा कि प्रधानमंत्री ने गरीबों के लिए यह घातक निर्णय राज्य सरकारों से परामर्श किए बगैर और संसद में कोई चर्चा किए बिना ही लिया है। मोदी सरकार राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अधिनियम के तहत गरीबों के लिए मुफ्त 05 किलो अनाज को ऐतिहासिक निर्णय बताकर वाहवाही का झूठा ढोल पीट रही है। रमेश ने कहा कि गंभीर आर्थिक बदहाली के कारण मोदी सरकार को कोविड-19 महामारी के दौरान अतिरिक्त राशन देने के लिए मजबूर होना पड़ा था। यह आर्थिक बदहाली आज भी बनी हुई है। यूपीए सरकार के समय की तुलना में आज हर बुनियादी आवश्यकता अधिक महंगी है, अधिकांश भारतीयों की आय में वृद्धि नहीं हुई है, और बेरोजगारी रिकॉर्ड स्तर पर है। "हंगर वॉच" सर्वेक्षण में पाया गया है कि 80 फीसदी लोग किसी न किसी रूप में खाद्य असुरक्षा का अनुभव कर रहे हैं। भारत आज ग्लोबल हंगर इंडेक्स 2022 के अनुसार 121 देशों की सूची में 107वें स्थान पर है।

भाजपा विधायक लक्ष्मण जगताप का पुणे में निधन

मुंबई, (हि.स.)। भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के विधायक लक्ष्मण जगताप (59) का लंबी बीमारी के बाद मंगलवार सुबह पुणे के निजी अस्पताल में निधन हो गया। कैंसर पीड़ित जगताप पिछले कई दिनों से अस्पताल में भर्ती थे। पुणे जिले के चिंचवड़ विधानसभा क्षेत्र के विधायक जगताप ने अपना राजनीतिक सफर कांग्रेस से शुरू किया था। इसके बाद जगताप राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी में शामिल हुए थे। वर्ष 2014 में जगताप भाजपा में शामिल हो गए थे। वर्ष 2019 में हुए विधानसभा चुनाव में चिंचवड़ विधानसभा क्षेत्र से जगताप भाजपा के टिकट पर विधायक बने थे। उनकी तबीयत पिछले कई महीनों से खराब चल रही थी। उनका इलाज पुणे के निजी अस्पताल में हो रहा था, जहां आज सुबह उन्होंने अंतिम सांस ली।

भारत जोड़ो यात्रा का दूसरा चरण शुरू, उप्र में प्रवेश करेगी यात्रा

अजय कुमार

नई दिल्ली। भारत जोड़ो यात्रा का दूसरा चरण मंगलवार सुबह से प्रारंभ हुआ। कांग्रेस सांसद राहुल गांधी के साथ भारत जोड़ो यात्रा में शामिल लोग व कांग्रेसी कार्यकर्ताओं ने दिल्ली के यमुना बाजार स्थित मरघट हनुमान मंदिर में पूजा-पाठ कर यात्रा शुरू की। कांग्रेस सूत्रों का कहना है कि यह यात्रा दिल्ली के शास्त्री पार्क, गांधी नगर, धरमपुर, सीलमपुर, एसडीएम कोर्ट चौक, जाफराबाद, मौजपुर, दयालपुर पुलिस स्टेशन और गोकलपुरी चौक से होते हुई लोनी जाएगी। लोनी में दिल्ली प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष चौधरी अनिल यात्रा का झंडा उत्तर प्रदेश के प्रदेश अध्यक्ष को सौंपेंगे। अपनी उत्तर प्रदेश की यात्रा के दौरान यात्री बागपत में रुकेंगे। उल्लेखनीय है कि राहुल गांधी के नेतृत्व में भारत जोड़ो यात्रा बीते सात सितंबर से कन्याकुमारी से शुरू हुई थी। 24 दिसंबर को यात्री दिल्ली पहुंचे थे। आज यात्रा का दूसरा चरण प्रारंभ हुआ है, जिसमें यात्री उत्तर प्रदेश से होते हुए पंजाब, हिमाचल प्रदेश व जम्मू-कश्मीर तक जाएंगे।

राष्ट्रपति राजस्थान के दो दिवसीय दौरे पर, संविधान पार्क का लोकार्पण कर किया शहीदों को नमन

जयपुर, (हि.स.)। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू दो दिन के राजस्थान दौरे पर मंगलवार सुबह विशेष विमान से जयपुर पहुंचीं। वे राष्ट्रपति बनने के बाद पहली बार राजस्थान आई हैं। एयरपोर्ट पर राज्यपाल कलराज मिश्र और मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने उनकी अगवानी की। एयरपोर्ट से राष्ट्रपति ने अमर जवान ज्योति पहुंच कर शहीदों को श्रद्धांजलि दी। इसके बाद राजभवन में संविधान पार्क का लोकार्पण किया। उन्होंने राजभवन में मयूर स्तंभ, गांधी प्रतिमा, महाराणा प्रताप के घोड़े चेतक की प्रतिमा सहित सौंदर्यीकरण के कामों का अवलोकन भी किया। स्टेट हैंगर पर ही राष्ट्रपति को गार्ड ऑफ ऑनर भी दिया गया। राष्ट्रपति भवन से द्रौपदी मुर्मू 09:05 मिनट पर रवाना हुईं। 9:20 बजे पालम एयरपोर्ट पहुंचकर वे 9:30 बजे दिल्ली से रवाना हुईं। वे 10:20 बजे सेना के हेलीकॉप्टर से जयपुर एयरपोर्ट पर पहुंची। 10:50 बजे अमर जवान ज्योति पहुंच कर उन्होंने शहीदों को श्रद्धा सुमन अर्पित किए। राष्ट्रपति मुर्मू 11:10 बजे राजभवन कार्यक्रम में पहुंची। 11:20 से 12:10 बजे तक वे संविधान पार्क लोकार्पण में रही। राष्ट्रपति 12:15 से 12:40 तक विशेष आदिवासी समूह से मिल रही हैं। वे 12.45 बजे राज्यपाल की ओर से आयोजित दोपहर भोज में शामिल होंगी। दो बजे राजभवन से रवाना होकर 2.20 बजे जयपुर एयरपोर्ट पहुंच वहां से उदयपुर रवाना होंगीं। वे 3:10 बजे उदयपुर एयरपोर्ट पहुंच कर 3:20 बजे उदयपुर से सिरोही के लिए रवाना होकर 4:10 बजे मानपुर हेलीपैड पहुंचेंगी। राष्ट्रपति 4:30 बजे प्रजापिता ब्रह्मकुमारी ईश्वरीय विवि कैम्पस शांतिवन पहुंचेंगी। राष्ट्रपति कल पाली के रोहट में स्काउट गाइड की जंबूरी का उद्घाटन करने के बाद जोधपुर से दिल्ली रवाना होंगी। इस दौरान मुख्य सचिव उषा शर्मा और डीजीपी उमेश मिश्रा भी मौजूद रहे।

महाराष्ट्र में रेजिडेंट डॉक्टरों की हड़ताल से स्वास्थ्य सेवा चरमराई

मुंबई, (हि.स.)। महाराष्ट्र में राज्य सरकार और नगर निगम के अस्पतालों के रेजिडेंट डॉक्टरों की हड़ताल से स्वास्थ्य व्यवस्था चरमरा गई है। महाराष्ट्र एसोसिएशन ऑफ रेजिडेंट डॉक्टर्स (मार्ड) के नेतृत्व में चल रहे इस हड़ताल का मंगलवार को दूसरा दिन है। राज्य के चिकित्सा शिक्षा मंत्री गिरीश महाजन ने हड़ताली डॉक्टरों से काम पर लौटने की अपील की, जो बेअसर रही। महाजन ने मीडियाकर्मियों को बताया कि रेजीडेंट डॉक्टरों की अधिकांश मांगें मान ली गई हैं। जो मांगें रह गई हैं, उन बिंदुओं को चर्चा के माध्यम से निपटाया जाएगा। उन्होंने कहा कि वे हड़ताली डॉक्टरों पर सख्ती नहीं बरतेंगे। मुंबई समेत राज्यभर के अस्पतालों के करीब 6 हजार डॉक्टर हड़ताल पर हैं। इससे विभिन्न जिलों के सरकारी अस्पतालों में स्वास्थ्य सेवा काफी हद तक प्रभावित हुई है। वरिष्ठ डॉक्टर सिर्फ इमर्जेंसी सेवा में तैनात हैं।

हड़ताल का असर मुंबई के जेजे, नायर, केईएम, कूपर, सायन जैसे बड़े अस्पतालों में दिखा है। ज्यादातर मरीजों के ऑपरेशन टाल दिए गए हैं। मार्ड ने चेतावनी दी है कि अगर मांगें नहीं मानी गईं तो आंदोलन और आक्रामक होगा। मार्ड की मुख्य मांग रेजिडेंट डॉक्टरों का 2018 से बकाया भुगतान करने और वरिष्ठ डॉक्टरों की भर्ती करने की है। संगठन ने प्रदेश में 1,432 रेजिडेंट डॉक्टरों के नए पद सृजित करने की मांग की है, साथ ही राज्य के सभी रेजिडेंट डॉक्टरों को समान वेतनमान लागू करने, शासकीय चिकित्सा छात्रावासों एवं शौचालयों की बदहाली को दूर करने, मेडिकल छात्रों की संख्या के अनुसार प्रोफेसरों की भर्ती करने की भी मांग की है।

पाकिस्तान दुनिया कीआतंकवादी गतिविधियों का केंद्र : विदेश मंत्री

नई दिल्ली, (हि.स.)। विदेश मंत्री एस जयशंकर ने पाकिस्तान को दुनिया की आतंकवादी गतिविधियों का केंद्र बताया है। उन्होंने कहा कि पाकिस्तान आतंकवाद को मदद मुहैया कराता है और भारतीय संसद और मुंबई में हुए आतंकवादी हमलों के लिए जिम्मेदार है। एक यूरोपीय टेलीविजन चैनल को दिए साक्षात्कार में विदेश मंत्री जयशंकर ने पाकिस्तान को लेकर यूरोपीय देशों की चुप्पी पर भी प्रश्न उठाए। उन्होंने कहा कि पाकिस्तान में आतंकवादी गतिविधियां लगातार जारी हैं और आर्तकियों को सैन्य प्रशिक्षण दिया जाता है। जयशंकर ने रूस यूक्रेन संघर्ष के बीच साक्षात्कार में कहा कि भारत गठबंधन की नीति पर विश्वास नहीं रखता। एक स्वायत्त देश होने के नाते रूस सहित विभिन्न देशों से संबंध रखता है, जिसकी अपनी पृष्ठभूमि है। आगे उन्होंने रूस और चीन के साथ संबंधों को लेकर भारत की स्थिति स्पष्ट की। जयशंकर ने पाकिस्तान की आतंकवाद को बढ़ावा देने की नीति की कठोर शब्दों में निंदा की। विदेश मंत्री ने एक पूछे गए सवाल का जवाब देते हुए कहा कि रूस के साथ भारत के संबंध हैं, जिनकी एक पृष्ठभूमि है। पश्चिमी लोकतंत्र एक समय पाकिस्तान की सैन्य तानाशाही को सैन्य साजो-सामान मुहैया कराते थे और भारत से दूरी बनाते थे। उसी दौरान रूस भारत को हथियार देता था। यह संबंध आज भी बरकरार है। हालांकि उन्होंने यह स्पष्ट किया कि रूस के साथ भारत का कोई गठबंधन नहीं है। भारत की अपनी एक स्वतंत्र सोच है, जिसे वह समय-समय पर दुनिया के सामने स्पष्ट करता रहता है। चीन के संबंध में विदेश मंत्री ने कहा कि दोनों देशों के बीच एक समझ बनी थी कि सीमा पर सैन्य जमावड़ा नहीं किया जाएगा। आज के तकनीकी युग में सेटेलाइट से ली जाने वाली तस्वीरों से स्पष्ट हो जाता है कि कहां पर सैन्य जमावड़ा है और कब तैनाती की गई है। अफसोस है कि चीन ने दोनों देशों के बीच बनी सहमति का अनुपालन नहीं किया। उन्होंने कहा कि दोनों देशों के बीच समझौता था कि यथास्थिति में एक-तरफा बदलाव नहीं किया जाएगा। चीन ने स्थिति को बदलने की कोशिश की। इससे दोनों देशों के बीच सैन्य तनातनी है। एस जयशंकर ने इस विषय को उठाया की दुनिया की सबसे ज्यादा आबादी वाले देश बनने जा रहे भारत को संयुक्त राष्ट्र में स्थायी सदस्यता प्राप्त नहीं है। उन्होंने कहा कि मुख्य समस्या यह है कि जिन लोगों के पास वर्तमान में स्थायी सदस्यता है, वह संयुक्त राष्ट्र में शीघ्र बदलाव नहीं चाहते।

ममता की वजह से देशद्रोहियों के लिए प्रेरणा स्थल बन गया है बंगाल : दिलीप घोष

कोलकाता, (हि.स.)। भारतीय जनता पार्टी के वरिष्ठ नेता दिलीप घोष ने वंदे भारत ट्रेन पर पथराव को लेकर मुख्यमंत्री ममता बनर्जी पर तीखा हमला बोला है। उन्होंने कहा है कि ममता की तुष्टिकरण की नीति और देश विरोधी ताकतों के संरक्षण की वजह से आज बंगाल देशद्रोह का प्रेरणा स्थल बन गया है। उन्होंने कहा कि ममता बनर्जी पश्चिम बंगाल को पश्चिम बांग्लादेश के तौर पर विकसित कर रही हैं। न्यू टाउन इको पार्क में मीडिया से बातचीत के दौरान दिलीप घोष ने कहा कि जिस तरह से कश्मीर में सेना की गाड़ियों पर पथराव होते हैं क्योंकि वह भारतीयता के प्रतीक है ठीक उसी तरह से पश्चिम बंगाल में हो रहा है। यहां देश विरोधी ताकतों को संरक्षण मिला हुआ है और उनके लिए एकमात्र आदर्श ममता बनर्जी हैं। उन्होंने कहा कि वंदे भारत ट्रेन को लेकर पिछले तीन दिनों से बंगाल में उत्पात हो रहा है। घोष ने कहा कि जिस तरह से 1947 के समय देश के बंटवारे के समय जो हालात बने थे ठीक उसी तरह के हालात पश्चिम बंगाल में फिर बन रहे हैं। पुलिस देश विरोधी ताकतों के खिलाफ कार्रवाई की हिम्मत नहीं कर पाती क्योंकि उन्हें ममता बनर्जी का संरक्षण प्राप्त है।

कंझावला कांडः पुलिस ने ढूंढ निकाला दूसरी लड़की को

-सहेली ने सामने आकर बता दिया सब कूछ

अजय त्यागी

नई दिल्ली। कंझावला कांड को लेकर दिल्ली पुलिस की जांच में पता चला है कि उस स्कूटी पर दो लड़कियां सवार थीं। पुलिस ने दूसरी लड़की को ढूंढ निकाला। उसने कन्फर्म किया कि यह एक हादसा था। उस लडकी का आज बयान दर्ज किया जाएगा। उधर केंद्रीय गृह मंत्रालय ने दिल्ली पुलिस कमिश्नर संजय अरोड़ा से घटना की विस्तृत जांच के बाद रिपोर्ट सौंपने को कहा है। गृह मंत्री अमित शाह ने अरोड़ा से फोन पर बात भी की। एलजी वीके सक्सेना ने भी जांच की समीक्षा की है। प्राप्त जानकारी के अनुसार पुलिस ने दोनों लड़कियों की एक होटल में मौजूदगी की पुष्टि की है। हादसे से पहले दोनों वहां कुछ दोस्तों संग एक बर्थडे पार्टी में गई थीं। इन दोस्तों से भी पूछताछ की जा रही है। रविवार रात को स्कूटी की टक्कर ग्रे कलर की बलेनो से हुई जिसमें पांच युवक सवार थे। पांचों शराब के नशे में धुत थे। सूत्रों के अनुसार दूसरी लड़की को मामूली चोटें आईं। वह डर के मारे वहां से भाग गई। दूसरी लड़की कार के सामने गिरी और गाड़ी उसपर चढ़ गई। एक अधिकारी के मुताबिक पीडिता का पैर कार के एक्सल में फंस गया और वह 12 किलोमीटर तक घिसटती रही। दिल्ली पुलिस के हाथ कम से कम 6-7 सीसीटीवी फुटेज लगे हैं। इनमें कार और लड़कियों की मूवमेंट्स दर्ज है। एक फुटेज में लड़की रात 1.52 बजे स्कूटी पर दिख रही है। पुलिस की जांच में पता चला कि आरोपी दूसरे कैरिज-वे पर होने की वजह से दो-दो परमानेंट पुलिस पिकेट्स से बच गए। उनकी रफ्तार लगातार 40-50 किलोमीटर प्रतिघंटा के बीच रही। अपने कैरिज-वे पर पिकेट से ठीक पहले उन्होंने यू-टर्न लिया। कार चला रहा दीपक इलाके के रास्तों और पुलिस की मौजूदगी से परिचित था और करीब 90 मिनट तक कार दौड़ाता रहा। दिल्ली पुलिस ने कार सवार पांच लोगों के खिलाफ आईपीसी की धारा 304 और 120बी लगाई है। पांचों पुलिस कस्टडी में हैं। उन्हें तीन दिन की पुलिस रिमांड पर भेजा गया है। पुलिस उनकी मदद से सीन रीक्रिएट करा रही है। पुलिस यह समझना चाहती है कि कैसे उन्हें कार में तेज म्यूजिक की वजह से कुछ सुनाई नहीं दिया। इसके लिए एक डमी का इस्तेमाल किया जाए। अधिकारियों के अनुसार कार का मेकेनिकल और फोरेंसिक एग्जामिनेशन भी होगा ताकि यह कन्फर्म हो सके कि आरोपियों के दावे सही हैं। सोमवार को सोशल मीडिया पर पीडिता की हालत दिखाता वीडियो वायरल हो गया। इससे आशंकाओं को जन्म मिला कि पीडिता के साथ दुष्कर्म हुआ है। दिल्ली सरकार के बनाए मेडिकल बोर्ड ने सोमवार को पीडिता की अटॉप्सी की। पीडिता के साथ यौन शोषण रूटआउट करने के लिए पुलिस को अटॉप्सी रिपोर्ट का इंतजार है। स्पेशल सीपी सागर प्रीत हुड्डा ने एक प्रेस कॉन्फ्रेंस में कहा कि पोस्टमॉर्टम रिपोर्ट के आधार पर आरोपियों के खिलाफ धाराएं जोड़ी जा सकती हैं। पीडिता के परिवार को जांच पर सारे अपडेट दिए जा रहे हैं।

प्रधानमंत्री ने किया 108वीं भारतीय विज्ञान कांग्रेस का उद्घाटन, बोले-महिलाओं की भागीदारी बढ़ी

नई दिल्ली, (हि.स.)। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने मंगलवार को 108वीं भारतीय विज्ञान कांग्रेस का वर्चुअली उद्घाटन किया। इसी के साथ राष्ट्रसंत तुकड़ोजी महाराज नागपुर विश्वविद्यालय में भारतीय विज्ञान कांग्रेस का आगाज हो गया। प्रधानमंत्री ने मोदी ने वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से कार्यक्रम को संबोधित किया। उन्होंने कहा कि अगले 25 वर्षों में भारत जिस ऊंचाई पर होगा, उसमें भारत की वैज्ञानिक शक्ति की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण होगी। विज्ञान में जोश के साथ जब देश की सेवा का संकल्प जुड़ जाता है तो नतीजे भी अभूतपूर्व आते हैं। मोदी ने कहा कि आज भारत स्टार्टअप में शीर्ष तीन देशों में शामिल है। 2015 तक हम 130 देशों के ग्लोबल इनोवेशन इंडेक्स में 81वें स्थान पर थे। 2022 में हम 40वें स्थान पर पहुंच गए हैं। विश्वास है कि देश का वैज्ञानिक समुदाय 21वीं सदी में वो मुकाम हासिल करेगा जिसका वो हमेशा हकदार रहा है। उन्होंने कहा कि 21वीं सदी के आज के भारत में हमारे पास दो चीजे हैं। पहली डेटा और दूसरी तकनीक। इन दोनों में भारत के विज्ञान को नई बुलंदियों में पहुंचाने की ताकत है। डेटा विश्लेषण की फील्ड तेज रफ्तार से आगे बढ़ रही है। आज का भारत जिस साइंटिफिक अप्रोच के साथ आगे बढ़ रहा है, हम उसके नतीजे भी देख रहे हैं। साइंस के क्षेत्र में भारत तेजी से विश्व के टॉप देशों में शामिल हो रहा है। उल्लेखनीय है कि इस वर्ष के भारतीय विज्ञान कांग्रेस का मुख्य विषय महिला सशक्तिकरण के साथ सतत विकास के लिए विज्ञान और प्रौद्योगिकी है। इस आयोजन के दौरान सतत विकास, महिला सशक्तिकरण और इसे प्राप्त करने में विज्ञान और प्रौद्योगिकी की भूमिका के मुद्दों पर चर्चा की जाएगी। इस दौरान प्रसिद्ध महिला वैज्ञानिकों के व्याख्यान भी होंगे।

महिला लॉ इंटर्न को अदालतों में सलवार कमीज पहनने की इजाजत दी

आशीष वर्मा

नई दिल्ली। बार काउंसिल ऑफ दिल्ली ने कहा है कि महिला लॉ इंटर्न को अब अदालतों में सिर्फ सफेद शर्ट काली टाई काली पैंट और काला कोट ही नहीं बल्कि उन्हें काली और सफेद सलवार कमीज पहनने की इजाजत होगी। बीसीडी के अध्यक्ष और वरिष्ठ अधिवक्ता केके मनन ने बार एंड बेंच से कहा कि उठाया गया मुद्दा महत्वपूर्ण है और सोमवार को ही संशोधन किया जाएगा ताकि महिला इंटर्न को कोई कठिनाई न हो। मनन ने कहा कि हम यह सुनिश्चित करेंगे कि आज ही संशोधन किया जाए ताकि महिला इंटर्न जो पैंट और शर्ट पहनने में सहज नहीं हैं वे भारतीय ड्रेस में भी अदालत जा सकें। दिल्ली हाईकोर्ट के आदेश के बाद जिसने बीसीडी को राष्ट्रीय राजधानी में सभी बार एसोसिएशन से परामर्श करने और एक आम सहमति पर पहुंचने का निर्देश दिया था कि लॉ इंटर्न को कौन सी ड्रेस चाहिए बीसीडी ने 16 दिसंबर 2022 को कहा था कि लॉ इंटर्न के लिए ड्रेस कोड सफेद शर्ट काली टाई काली पैंट और काला कोट होगा। पिछले साल 1 दिसंबर को न्यायमूर्ति प्रतिभा एम सिंह ने शहादरा बार एसोसिएशन के 24 नवंबर के फैसले पर रोक लगा दी थी जिसमें दिल्ली के कड़कड़डूमा कोर्ट में इंटर्न को काले कोट पहनने से प्रतिबंधित किया गया था उन्हें 1 दिसंबर से सफेद शर्ट नीला कोट और पैंट पहनने के लिए कहा गया था।

सभी इंटर्न के लिए एक समान ड्रेस कोड निर्धारित करने के मद्देनजर न्यायमूर्ति सिंह ने बीसीडी को राष्ट्रीय राजधानी में सभी बार एसोसिएशन और अन्य हितधारकों की एक बैठक आयोजित करने के लिए कहा था ताकि इस बात पर आम सहमति बन सके कि लॉ इंटर्न को कौनसी ड्रेस पहननी चाहिए।

उत्तर प्रदेश शिक्षा सेवा चयन आयोग का गठन जल्द : मुख्यमंत्री

- एक ही आयोग से होगा बेसिक, माध्यमिक, उच्च एवं तकनीकी शैक्षिक संस्थानों में शिक्षकों का चयन

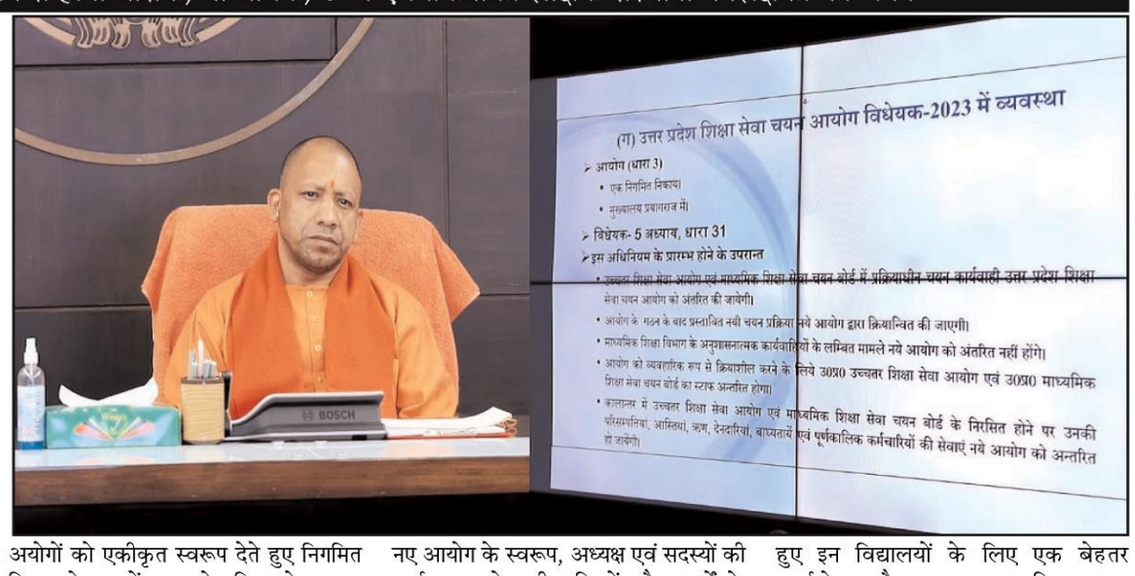

लखनऊ, (हि.स.)। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने मंगलवार को प्रदेश में शैक्षिक संस्थानों में शिक्षक भर्ती प्रक्रिया की समीक्षा करते हुए कहा कि शिक्षकों के समयबद्ध चयन के लिए सरकार गंभीर है। उत्तर प्रदेश शिक्षा सेवा चयन आयोग का जल्द गठन किया जाएगा। उत्तर प्रदेश में एक ही आयोग से बेसिक, माध्यमिक, उच्च एवं तकनीकी शिक्षा के कॉलेजों में शिक्षकों का चयन होगा। यही आयोग टीईटी की परीक्षा भी कराएगा। मुख्यमंत्री ने एकीकृत आयोग के रूप में 'उत्तर प्रदेश शिक्षा सेवा चयन आयोग' के गठन के संबंध में निर्देश देते हुए कहा कि विगत पांच-साढ़े पांच वर्ष की अवधि में प्रदेश में संचालित विभिन्न चयन आयोगों की कार्यप्रणाली में शासन स्तर से अनावश्यक हस्तक्षेप न होने से आयोगों की कार्यप्रणाली में शुचिता और पारदर्शिता आई है। मेरिट के आधार पर योग्य अभ्यर्थियों का चयन हो रहा है। प्रदेश में आये इस बदलाव का सीधा लाभ युवाओं को मिल रहा है। प्रदेश के बेसिक, माध्यमिक, उच्च एवं तकनीकी शिक्षण संस्थानों में योग्य शिक्षकों के चयन के लिए अलग-अलग प्राधिकारी, बोर्ड एवं आयोग संचालित हैं। परीक्षा नियामक प्राधिकारी, माध्यमिक शिक्षा सेवा चयन आयोग और उच्चतर शिक्षा सेवा चयन आयोग के अलावा उत्तर प्रदेश लोक सेवा आयोग के माध्यम से भी चयन की व्यवस्था लागू है। नीतिगत सुधारों के क्रम में भविष्य की आवश्यकताओं को देखते हुए शिक्षक चयन आयोगों को एकीकृत स्वरूप दिया जाना उचित होगा। मुख्यमंत्री ने कहा कि शिक्षक चयन आयोगों को एकीकृत स्वरूप देते हुए निगमित निकाय के रूप में उत्तर प्रदेश शिक्षा सेवा चयन आयोग का गठन किया जाना चाहिए। शिक्षकों के समयबद्ध चयन, मानव संसाधन का बेहतर उपयोग और वित्तीय अनुशासन सुनिश्चित करने में आयोग उपयोगी सिद्ध होगा। योगी ने कहा कि उत्तर प्रदेश शिक्षा चयन आयोग को एक स्वायत्तशासी निगमित निकाय का स्वरूप दिया जाना चाहिए। अध्यापकों की नियुक्ति के संबंध में चयन परीक्षा, साक्षात्कार आदि के माध्यम से चयन की प्रक्रिया पूरी करते हुए अभ्यर्थियों की नियुक्ति के लिए नियुक्ति प्राधिकारी को संस्तुति की जाएगी। उक्त बिंदुओं के अनुरूप नए आयोग के स्वरूप, अध्यक्ष एवं सदस्यों की अर्हता, आयोग की शक्तियों और कार्यों के संबंध में रूपरेखा तय करते हुए आवश्यक प्रस्ताव तैयार किया जाए। प्रदेश में 60, 70, 80 वर्ष अथवा और अधिक पुराने बहुत से माध्यमिक विद्यालय हैं। प्रदेश के शैक्षिक माहौल को समृद्ध करने में इन संस्थानों की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। राज्य सरकार से सहायता प्राप्त इन माध्यमिक विद्यालयों में आज अवस्थापना सुविधाओं के विकास की आवश्यकता है। ऐसे में शिक्षकों, विद्यार्थियों एवं अभिभावकों के व्यापक हित को देखते हुए प्रबंध तंत्र की अपेक्षाओं और आवश्यकताओं का ध्यान रखते हुए इन विद्यालयों के लिए एक बेहतर कार्ययोजना तैयार कर प्रस्तुत किया जाए। प्राथमिक तथा उच्च प्राथमिक स्तर की शिक्षक पात्रता परीक्षा का आयोजन भी इस नए आयोग के माध्यम से किया जाना चाहिए। यह सुनिश्चित किया जाए कि टीईटी समय पर हो। मुख्यमंत्री ने कहा कि संस्कृत विद्यालयों का उन्नयन सरकार की प्राथमिकता में है। संस्कृत विद्यालयों में अवस्थापना सुविधाओं के विकास के साथ-साथ अध्ययनरत विद्यार्थियों के प्रोत्साहन के लिए छात्रवृत्ति भी दी जानी चाहिए। इस संबंध में विस्तृत कार्ययोजना तैयार कर यथाशीघ्र प्रस्तुत करें।

भारत जोड़ो यात्रा पूरी तरह फ्लाप : केशव प्रसाद मौर्य

लखनऊ, (हि.स.)। कांग्रेस नेता राहुल गांधी की भारत जोड़ो यात्रा पर उत्तर प्रदेश के उप मुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य ने तंज कसा है। उपमुख्यमंत्री ने कहा कि भारत जोड़ो यात्रा पूरी तरह फ्लाप हो गयी है। राहुल गांधी खुद मान चुके हैं कि कांग्रेस का अस्तित्व नहीं है। इसीलिए उत्तर प्रदेश में मात्र तीन दिन ही यात्रा का समय रखा है। जनता भी कांग्रेस को गंभीरता से नहीं ले रही है। उत्तर प्रदेश के बेसिक शिक्षा मंत्री संदीप सिंह ने भी राहुल गांधी की भारत जोड़ो यात्रा पर तंज कसते हुए कहा कि इस यात्रा का उत्तर प्रदेश में कोई असर नहीं पड़ेगा। संदीप सिंह ने कहा कि यह लोकतंत्र है। सबको यात्रा निकालने का अधिकार है लेकिन उत्तर प्रदेश की जनता भाजपा के साथ है। उल्लेखनीय है कि कांग्रेस की भारत जोड़ो यात्रा आज गाजियाबाद पहुंची है। यहां से यात्रा बागपत पहुंचेगी। वहीं यात्रा का ठहराव होगा। यात्रा में राहुल गांधी और प्रियंका गांधी मौजूद हैं।

देश की पहली महिला शिक्षक सावित्री बाई फुले की जयंती मनी

वाराणसी, (हि.स.)। नारी मुक्ति आंदोलन की प्रणेता एवं देश की पहली महिला शिक्षक सावित्री बाई फुले की 192वीं जयंती मंगलवार को सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय में मनाई गई। इस दौरान विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. हरेराम त्रिपाठी ने सावित्री बाई फुले के चित्र पर माल्यार्पण कर उन्हें याद किया। प्रोफेसर हरेराम त्रिपाठी ने कहा कि भारत की पहली महिला शिक्षक, महाराष्ट्र में महिलाओं की शिक्षा के प्रति अपना जीवन समर्पित करने वाली सावित्रीबाई फुले का जन्म महाराष्ट्र के सतारा जिले के एक छोटे से गांव नयागांव में तीन जनवरी 1831 को हुआ था। वह दलित परिवार में जन्मी थीं। उनके पिता का नाम खंदोजी नैवेसे और मां का नाम लक्ष्मीबाई था। सावित्री बाई फुले को भारत की पहली शिक्षिका होने का श्रेय जाता है। उन्होंने यह उपलब्धि तब हासिल की जब महिलाओं का शिक्षा ग्रहण करना तो दूर की बात थी, उनका घर से निकलना भी दूभर था। कुलपति ने कहा कि आजादी से पहले भारत में महिलाओं के साथ काफी भेदभाव होता था। समाज में दलितों की स्थिति अच्छी नहीं थी। महिला दलित होती थीं तो यह भेदभाव और भी बड़ा होता था। जब सावित्री बाई स्कूल जाती थीं, तो लोग उन्हें पत्थर मारते थे। उन्होंने हिम्मत नहीं हारी और कड़ा संघर्ष करते हुए शिक्षा हासिल की। सावित्रीबाई फुले का जीवन महिला सशक्तिकरण के लिए समर्पित था। उन्होंने सामाजिक कुरीतियों के खिलाफ आवाज उठाई। जब वह महज नौ वर्ष की थीं, तब उनका विवाह 13 साल के ज्योतिराव फुले से कर दिया गया था। जिस समय सावित्रीबाई फुले की शादी हुई थी, उस समय वह अनपढ़ थीं। पढ़ाई में उनकी लगन देखकर ज्योतिराव फुले प्रभावित हुए और उन्होंने सावित्रीबाई को आगे पढ़ाने का मन बनाया। ज्योतिराव फुले भी शादी के दौरान कक्षा तीन के छात्र थे लेकिन तमाम सामाजिक बुराइयों की परवाह किए बिना सावित्रीबाई की पढ़ाई में पूरी मदद की। सावित्रीबाई ने अहमदनगर और पुणे में टीचर की ट्रेनिंग ली और शिक्षक बनीं। पति के साथ मिलकर सावित्रीबाई फुले ने 1848 में पुणे में लड़कियों का स्कूल खोला। इसे देश में लड़कियों का पहला स्कूल माना जाता है। कुलपति ने कहा कि फुले दंपति ने देश में कुल 18 स्कूल खोले। ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी ने उनके योगदान को सम्मानित भी किया। इस स्कूल में सावित्रीबाई फुले प्रधानाध्यापिका थीं। ये स्कूल सभी जातियों की लड़कियों के लिए खुला था। दलित लड़कियों के लिए स्कूल जाने का ये पहला अवसर था। कुलपति प्रो. त्रिपाठी ने बताया कि पुणे में प्लेग फैला तो सावित्रीबाई फुले मरीजों की सेवा में जुट गईं। इसी दौरान उन्हें प्लेग हो गया और 1897 में उनकी मृत्य हो गई। उनके पति ज्योतिराव का निधन उनसे पहले 1890 में हो गया था। पति के निधन के बाद सावित्रीबाई फूले ने ही उनका दाह संस्कार किया था। जयंती कार्यक्रम में विभागाध्यक्ष और वरिष्ठ प्रोफेसर भी मौजूद रहे।

गोरक्षनाथ की भूमि पर 13 जनवरी से निषाद पार्टी का 10 संकल्प दिवस कार्यक्रम होगा

- पार्टी अध्यक्ष डॉ संजय निषाद ने मुख्यमंत्री को कार्यक्रम का दिया आमंत्रण

लखनऊ, (हि.स.)। निषाद पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं कैबिनेट मंत्री डॉ संजय कुमार निषाद ने मंगलवार को लोकभवन में मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ से मुलाकात की। उन्होंने मुख्यमंत्री के साथ हुई बैठक की जानकारी देते हुए बताया कि निषाद पार्टी का 10 संकल्प दिवस कार्यक्रम 13 जनवरी को गुरू गोरक्षनाथ जी की पावन पवित्र भूमि पर प्रस्तावित है। मुख्यमंत्री को निषाद पार्टी के 10वें संकल्प दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में मुख्य अतिथि स्वरूप शिकरत करने का आमंत्रण देने गए थे। मुख्यमंत्री ने कार्यक्रम के सफल होने की शुभकामनाओं के साथ ही उसमें शिरकत करने की स्वीकृति भी प्रदान की है। साथ ही निषाद राज जयंती को भव्य एवं विशाल बनाने के लिए भी जिम्मेदारी तय की जाएगी। डॉ संजय निषाद ने बताया कि स्वदेश दर्शन योजना के अंतर्गत मयार्दा पुरुषोत्तम प्रभु श्री राम के आत्मबल सखा महाराजा गुह्य राज निषाद की मिलन स्थली व अद्भुत किले श्रृंगवेरपुर धाम को पर्यटक स्थल घोषित करने और उनकी गले लगी मूर्ति लगवाने को लेकर मुख्यमंत्री को धन्यवाद और आभार व्यक्त किया।

निषाद ने पार्टी गठबंधन को उत्तर प्रदेश सरकार में राजनीतिक नियुक्तियों एवं निगम/बोर्ड में कार्यकताओं के समाहित करने की मांग भी मुख्यमंत्री के समक्ष रखी। इस दौरान उप्र सरकारी आवास संघ के निदेशक राम ललित चौधरी भी मौजूद रहें।

लखनऊ में बूथ स्तरीय संरचना की मजबूती परखेंगे बीएल संतोष

लखनऊ, (हि.स.)। भाजपा के राष्ट्रीय महामंत्री (संगठन) बीएल संतोष का लखनऊ में दो दिवसीय दौरे का आज दूसरा दिन है। पहले दिन उन्होंने भाजपा के प्रदेश पदाधिकारियों और मोर्चों के अध्यक्षों के साथ चरणवार बैठकें कीं और नेताओं को आवश्यक दिशा निर्देश दिये। दो दिवसीय लखनऊ प्रवास के दूसरे दिन वह लखनऊ महानगर की कार्यसमिति की बैठक में हिस्सा लेंगे। लखनऊ महानगर कार्यसमिति की बैठक निरालानगर स्थित भाजपा के क्षेत्रीय कार्यालय पर रखी गयी है। इस बैठक में बीएल संतोष पार्टी द्वारा चलाये जा रहे अभियानों व कार्यक्रमों की समीक्षा करेंगे और बूथ स्तरीय संरचना की मजबूती परखेंगे। इसके अलावा वह कुछ महत्वपूर्ण लोगों से भेंट भी करेंगे। उनके साथ भाजपा के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष व प्रदेश प्रभारी राधामोहन सिंह, भाजपा की राष्ट्रीय उपाध्यक्ष रेखा वर्मा व भाजपा के प्रदेश संगठन मंत्री धर्मपाल भी रहेंगे।

झारखंड यूपीए गठबंधन की झूठ और लूट के तीन साल पूरे : भाजपा

लोहरदगा, (हि.स.)। जिला भारतीय जनता पार्टी के नगर मंडल कार्यालय में मंगलवार को आयोजित प्रेस कांफ्रेंस में पार्टी के प्रदेश प्रवक्ता प्रदीप सिन्हा ने कहा कि झारखंड यूपीए गठबंधन की झूठ और लूट के तीन साल पूरे हुए हैं। झारखंड में भ्रष्टाचार चरम पर है। इसको जेएमएम, कांग्रेस, राजद की संयुक्त सरकार का खुला संरक्षण प्राप्त है। उन्होंने कहा कि हेमंत सोरेन मुख्यमंत्री के निर्वाचन जिले में तो भ्रष्टाचार का एक इतिहास ही रच दिया गया है। झारखंड ऐसा पहला राज्य है जहां मुख्यमंत्री ने अपने हस्ताक्षर से खनन पट्टा लिया हो। राज्य सरकार वकीलों पर करोड़ो रुपये खर्च कर जनता की गाढ़ी कमाई लूटा रही है। योजनाओं, ठेका-टेंडर व विभिन्न विभागों में मंत्री टेंडर मैनेज कर रहे हैं। आलमगीर आलम पर हाई कोर्ट की टिप्पणी राज्य सरकार के लिए शर्म की बात है।

सिन्हा ने कहा कि झारखंड में हर माह करीब 100 करोड़ तक का बालू का अवैध कारोबार डंके की चोट पर किया जा रहा है। राज्य में विकास के सारे कार्य ठप है। अपराधियों की समानांतर सरकार चल रही है। हत्या के मामले में 4.1 की दर से झारखंड पूरे देश में अव्वल है। सरकारी आंकड़े के अनुसार तीन साल में 5258 लोगों की हत्या हो चुकी है। वहीं, 4813 बलात्कार की घटनाएं घट चुकी है। अपहरण की 4485 घटनाएं हुईं। यह राज्य में ध्वस्त लॉ एंड ऑर्डर का प्रमाण है।

धनबाद के जालान हॉस्पिटल में तीमारदारों का हंगामा

धनबाद, (हि.स.)। धनबाद के चर्चित एशियन जालान अस्पताल में मंगलवार की सुबह एक मरीज की मौत के बाद उसके परिजनों ने जमकर हंगामा किया। सूचना पर पहुंची सदर थाना पुलिस ने आक्रोशित लोगों को समझा-बुझाकर शांत कराया। बताया जाता है कि टुंडी थाना क्षेत्र के कदैया निवासी ट्रक ड्राइवर जसीम अंसारी को लीवर की बीमारी थी। उसे जालान अस्पताल में भर्ती कराया गया था। अस्पताल ने इलाज का खर्च 55 हजार रुपये बताया लेकिन देर रात ऑपरेशन के दौरान मरीज की मौत हो गई। इसके बाद अस्पताल प्रबंधन ने मृतक के परिजन को एक लाख चार हजार रुपये का भुगतान करने को कहा। इसके बाद ही शव देने की बात कही। मृतक के परिजनों के साथ ऐसे व्यवहार से नाराज लोगों ने अस्पताल प्रबंधन के खिलाफ नारेबाजी करते हुए हंगामा शुरू कर दिया। कदैया निवासी मुखिया ने जालान अस्पताल प्रबंधन पर आरोप लगाते हुए कहा कि जालान अस्पताल में मरीजों से अवैध रूप से धन वसूला जा रहा है। अस्पताल प्रबंधन पर सख्त कार्रवाई होनी चाहिए। मृतक के परिजनों का कहना था कि उनके मरीज का रक्तचाप कम था। चिकित्सकों ने उसकी सर्जरी कर दी, जो जानलेवा साबित हुआ। उन्होंने कहा कि नर्सिंग होम के खिलाफ सख्त से सख्त कार्रवाई होनी चाहिए। इस बाबत धनबाद थाना के एसआई मुकेश कुमार ने बताया कि दोनों पक्षों को समझा-बुझाकर मामला शांत करवाया गया है।

सम्मेद शिखर को पर्यटन स्थल बनाने के खिलाफ रांची में जैन समाज ने निकाली मौन रैली

रांची, (हि.स.)। झारखंड के गिरिडीह जिले में स्थित जैन तीर्थ स्थल सम्मेद शिखरजी को पर्यटन स्थल घोषित करने के खिलाफ जैन समाज ने मंगलवार को रांची में मौन रैली निकाली। रैली अपर बाजार स्थित जैन मंदिर से जाकिर हुसैन पार्क स्थित राजभवन तक पहुंची। इसके बाद राज्यपाल को ज्ञापन सौंपा गया। दिगंबर जैन समाज के उपाध्यक्ष प्रदीप जैन ने कहा कि आंदोलन कई महीनों से चल रहा है। जैन समाज की मांग है कि सम्मेद शिखर तीर्थ स्थल को पर्यटन स्थल ना बनाया जाये। अगर सरकार उनकी मांग पूरी नहीं करेगी तो जैन समाज का आंदोलन तेज होगा। सरकार इसे पवित्र क्षेत्र घोषित करे। जितेंद्र जैन ने कहा कि सम्मेद शिखर जैन समाज का सदियों से आस्था का केंद्र रहा है। इस जगह पर तीर्थ शंकर और ऋषि-मुनियों ने तपस्या कर मोक्ष प्राप्त किया। सम्मेद शिखर का कण-कण पवित्र है। यहां की भूमि पूजनीय है, अगर उस स्थल को पर्यटन स्थल बनायेंगे तो यह कतिपय मंजूर नहीं होगा। क्योंकि, पर्यटन स्थल और तीर्थ स्थल दोनों के भाव अलग होते हैं। चेतन जैन ने कहा कि सरकार जल्द से जल्द इस मामले पर संज्ञान ले। सम्मेद शिखर जैन समाज का प्रमुख आस्था का केंद्र है। भारत में सभी धर्म और आस्था के लोग रहते हैं। जैसे हिंदुओं के लिए वैष्णो देवी है। सिखों के लिए अमृतसर का स्वर्ण मंदिर है। इसी तरह जैनों के लिए सम्मेद शिखर है। सरकार इसको जल्द धार्मिक तीर्थ स्थल घोषित करे। इस दौरान हजारों की संख्या में महिला पुरुष मौजूद थे। सभी हाथों में तख्तियां लेकर चल रहे थे।

पटना में गो एयर की एक फ्लाइट से टकराया पक्षी, बड़ा हादसा टला

पटना, (हि.स.)। बेंगलुरु से पटना आ रही गो एयर की एक फ्लाइट मंगलवार दोपहर को पटना एयरपोर्ट पर हादसे का शिकार होते-होते बच गयी। दरअसल गो एयर की फ्लाइट संख्या G8 274 बेंगलुरु से पटना आ रही थी। पटना एयरपोर्ट में उतरते समय विमान में बर्ड हिट हुआ। पटना में सुबह के समय दृश्यता कम होने के कारण विमान पट्टी के पास गहरा कुहासा देखा गया। उसी दौरान वहां एक पक्षी के विमान के लैंडिंग मार्ग में आने से बर्ड हिट हुआ, जिसमें बड़ी दुर्घटना टल गई। बताया जा रहा है कि विमान कुल फ्लाइट में कुल 130 यात्री सवार थे। जो बेंगलुरू से पटना आ रहे थे। पायलट की तत्परता से बड़ा हादसा टल गया। विमान को अंतिम समय में सुरक्षित रूप से लैंड करा लिया गया जिससे विमान हादसा टल गया। हालांकि हादसे को लेकर विमानपत्तन प्राधिकार की ओर से अभी तक कोई आधिकारिक बयान जारी नहीं किया गया है। एयरपोर्ट से जुड़े सूत्रों के अनुसार इस हिट की वजह से फ्लाइट के राइट विंग का कुछ हिस्सा पिचक गया है। इसके अलावा फ्लाइट को कोई बड़ा नुकसान नहीं हुआ है। इसी फ्लाइट को पटना से G8-144 बनकर दिल्ली के लिए जाना था। जिसे कैंसिल कर दिया गया है। इसे लेकर दिल्ली जाने वाले पैसेंजर्स ने एयरपोर्ट के अंदर हंगामा किया।

डीएम ने कहा-जल जीवन हरियाली अभियान का सफल क्रियान्वयन जिला प्रशासन की प्राथमिकता

मधुबनी, (हि.स.)। जिला मुख्यालय स्थित डीआरडीए सभागार में जल जीवन हरियाली दिवस पर मंगलवार को कार्यक्रम हुआ। प्रभारी डीएम विशाल राज की अध्यक्षता में जल जीवन हरियाली दिवस पर मुख्यमंत्री की पटना में आयोजित कार्यक्रम का सीधा प्रसारण भी किया गया। अवसर प्रदत्त विषयक " ग्रामीण क्षेत्रों में जल जीवन हरियाली अभियान का क्रियान्वयन" रखा गया। आयोजन के दौरान ज्ञान भवन, गांधी मैदान से माननीय मुख्यमंत्री के संबोधन का भी सीधा प्रसारण भी दिखाया गया।लाइव प्रसारण में मुख्यमंत्री द्वारा जल जीवन हरियाली अभियान की उपादेयता पर प्रकाश डाला गया। प्रभारी डीएम ने कहा कि जल जीवन हरियाली अभियान का जुड़ाव सीधा हमारे जीवन से है। आधुनिकरण के दौर में आमजन का जीवन प्रदूषण की भेंट चढ़ रहा। सभी को पर्यावरण संरक्षण की दिशा में अविलंब आवश्यक कदम उठाने की जरूरत बताया। कहा कि जल जीवन हरियाली अभियान सरकार द्वारा पर्यावरण संरक्षण को प्रोत्साहित करने का महत्वकांक्षी प्रयास है। इस कड़ी में जिले के सार्वजनिक जल स्रोतों को अतिक्रमण मुक्त कराया जा रहा है। हरित आवरण के आच्छादन को बढ़ाने के उद्देश्य से लगातार पौधरोपण चल रहे हैं। डीडीसी विशाल राज ने कहा कि जनहित में जल जीवन हरियाली अभियान को सफल बनाने की दिशा में प्रयास आवश्यक है। निदेशक डीआरडीए राजेश्वर प्रसाद के नेतृत्व में जल जीवन हरियाली अभियान में अपना योगदान सुनिश्चित करने के लिए विभिन्न आशय का संकल्प भी लिया गया। प्रत्येक वर्ष पौधा लगाकर उसकी देखभाल करना, आसपास के तालाबों, नदियों व अन्य जलस्रोतों को प्रदूषित नहीं करने, आवश्यकता से अधिक भूगर्भीय जल का उपयोग न करने, पास पड़ोस के लोगों को जल संचयन हेतु प्रेरित करने, बिजली का सदुपयोग करने, कूड़े का समुचित निस्तारण करने, प्लास्टिक का उपयोग बंद करने, जीव जंतुओं के प्रति प्रेम भाव रखने, निजी तौर पर ईंधन की खपत को रोकने को पैदल चलने साइकिल का उपयोग करने, कागज का सदुपयोग करने तथा खुले में शौच न करने का संकल्प व्यक्त किया। अवसर पर अधिकांश विभागों के वरीय पदाधिकारी उपस्थित रहे।

केंद्रीय मंत्री रिजिजू ने बोधगया में दलाई लामा इंस्टीट्यूट ऑफ नालंदा ट्रेडिशन का किया शिलान्यास

गया, (हि.स.)। केंद्रीय कानून मंत्री किरण रिजिजू ने मंगलवार को बोधगया में दलाई लामा की मौजूदगी में दलाई लामा इंस्टीट्यूट ऑफ नालंदा ट्रेडिशन का शिलान्यास किया। इस मौके पर बिहार के पूर्व उप मुख्यमंत्री और राज्यसभा सदस्य सुशील मोदी भी मौजूद थे। इस इंस्टीट्यूट के भवन के लिए दलाई लामा ट्रस्ट को बिहार सरकार ने 30 साल के लिए 30 एकड़ भूमि देने की मंजूरी दी है। यह भूखंड मगध विश्वविद्यालय के गेट नंबर दो के पास है। नालंदा परंपरा यानी प्राचीन नालंदा विश्वविद्यालय जिसमें तमाम साहित्यिक गतिविधियों के साथ नालंदा कल्चर को लेकर रिसर्च के लिए इस इंस्टिट्यूट की स्थापना की जा रही है। बौद्ध धर्म गुरु दलाई लामा इन दिनों बोधगया के प्रवास पर हैं।

बोधगया के कालचक्र मैदान में तीन दिनों का टीचिंग प्रोग्राम आयोजित किया गया था, जिसमें देश विदेश के सैकड़ों लोग शामिल हुए। टीचिंग कार्यक्रम के बाद आज केंद्रीय मंत्री किरण रिजिजू बोधगया पहुंचे।

जीवन भर नहीं भूलूंगा नवादा वासियों का प्यार : डॉ मंगला

नवादा, (हि.स.)। नवादा से स्थानांतरित एसपी डॉ गौरव मंगला ने कहा है कि जीवन भर नवादा वासियों का प्यार नहीं भूलूंगा। विधि व्यवस्था संधारण में आम नागरिकों का जो सहयोग मिला है। उसकी सराहना जितनी ज्यादा की जाए, कम ही कही जाएगी ।वे सारण रवाना होने के पूर्व पुलिस अधिकारियों द्वारा आयोजित विदाई समारोह में बोल रहे थे। उन्होंने कहा कि नवादा में अपराध नियंत्रण नागरिकों ने काफी सहयोग किया ।यही वजह रही कि साइबर अपराधियों, बालू व दारू माफियाओं के विरूद्ध सख्त अभियान चलाकर उनके विरुद्ध व्यापक स्तर पर कार्रवाई हो सकी। उन्होंने कहा कि निश्चित तौर पर अपराधियों के विरुद्ध मेरा अभियान चलता रहेगा। डॉ गौरव मंगला ने नवादा के एसपी के रूप में पदभार संभालते ही अपराधियों को औकात बतानी शुरू कर दी थी।उनके आने के पूर्व साइबर अपराधियों ने नवादा में तांडव मचा कर रखा था। सैकड़ों बैंक खाते खाली कर दिए गए थे। जिसके विरूद्ध गौरव मंगला ने व्यापक अभियान चलाकर अपराधियों को जेल में डाला। तब कहीं स्थिति पर नियंत्रण हो सकी।गौरव मंगला ने नवादा के पुलिस अधिकारियों, पत्रकारों को तथा आम नागरिकों को भी सहयोग के लिए बधाई दी है। डॉ मंगला के स्थानांतरण से नवादा वासी भी काफी मरमत है उनकी पहचान नवादा में एक बेहतर पुलिस अधिकारी के रूप में रही इसका कायल नवादा वासी है।

संपादकीय

विपक्ष एक बार फिर साबित हुआ गलत

नोटबंदी पर केन्द्र सरकार की घेराबंदी के प्रयास एक बार फिर विफल हो गए हैं। कांग्रेस के नेता एवं यूपीए सरकार में वित्त मंत्री रहे वरिष्ठ अधिवक्ता पी. चिदंबरम सहित 58 लोगों द्वारा न्यायालय में याचिका दायर की गई थी कि केंद्र सरकार ने गैर-कानूनी ढंग से नोटबंदी की प्रकिया की। सर्वोच्च न्यायालय की पांच सदस्यों की संवैधानिक पीठ ने सभी याचिकाओं की सुनवाई करने के बाद निर्णय सुनाते हुए कहा कि 500 और 1000 के नोट बंद करने की प्रक्रिया में कोई गड़बड़ी नहीं हुई है। सरकार ने भारतीय रिजर्व बैंक की सहमति से यह निर्णय लिया था। इसके साथ ही सर्वोच्च न्यायालय ने सभी याचिकाओं को खारिज कर दिया है। सर्वोच्च न्यायालय का यह निर्णय उन लोगों को आईना दिखाता है जो जबरन नोटबंदी के निर्णय को गलत बताकर सरकार को घेरने के प्रयास करते रहते हैं। उल्लेखनीय है कि कांग्रेस सहित कुछ विपक्षी दल और उनके सहयोगी बुद्धिजीवी पहले दिन से ही नोटबंदी को गलत बताते रहे हैं जबकि परेशानी उठाने के बाद भी सरकार के इस ऐतिहासिक निर्णय का जनता ने खूब स्वागत किया था। यानी एक तरह से नोटबंदी का विरोध करनेवाले लोग सरकार को घेरने के चक्कर में जनभावनाओं को भी नजरअंदाज करते रहे हैं। कांग्रेस समर्थित पत्रकारों ने जब कतार में लगे लोगों से ऐन-केन-प्रकारेण नोटबंदी पर प्रतिकूल टिप्पणी लेने का प्रयास किया था, तब भी उन्हें सफलता नहीं मिली थी। जनता ने ऐसे लोगों को खूब आईना दिखाने का प्रयास किया। उसके बाद हुए लोकसभा चुनाव में भी नोटबंदी को चुनावी मुद्दा बनाने का प्रयास विपक्षी दलों ने किया, तब भी जनता ने नोटबंदी पर अपना समर्थन मोदी सरकार को देकर संदेश देने का काम किया। लेकिन अंध विरोध का स्तर इतना अधिक है कि ये सब सच स्वीकार करने को तैयार ही नहीं हैं। भले ही सर्वोच्च न्यायालय ने स्पष्ट कर दिया हो कि नोटबंदी पर सरकार का निर्णय गलत नहीं था, लेकिन इसकी उम्मीद कम ही है कि अब मोदी विरोधी समूह नोटबंदी पर अपने कुतर्क और बेबुनियाद आरोपों को दोहराना बंद कर देगा। नोटबंदी के कारण एवं उद्देश्य सबके ध्यान में हैं। सरकार ने यह निर्णय जाली नोट, कालाधन, और आतंकवाद की चुनौती से निपटने के लिए नेक नीयत के साथ लिया था। इसके साथ ही डिजिटल लेन-देन को बढ़ावा देना भी एक उद्देश्य था। केंद्र सरकार इन उद्देश्यों को प्राप्त करने में बहुत हद तक सफल भी हुई। आज देश में डिजिटल लेन-देन में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। यदि नोटबंदी नहीं होती तब डिजिटल लेन-देन की यह क्रांति कितनी देर से हमारे यहाँ आती, कहा नहीं जा सकता। आज बड़े से लेकर अत्यंत छोटे कारोबारी भी डिजिटल लेन-देन कर रहे हैं। यह भी समझने की आवश्यकता है कि नोटबंदी के निर्णय की सराहना राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय आर्थिक संस्थाओं और विशेषज्ञों ने की थी। बहरहाल, सर्वोच्च न्यायालय के निर्णय के बाद अब विपक्षी दलों एवं उनके सहयोगियों को नोटबंदी के पीछे भागना बंद करने आगे की सुध लेनी चाहिए।

> सरकार ने भारतीय रिजर्व बैंक की सहमति से यह निर्णय लिया था। इसके साथ ही सर्वोच्च न्यायालय ने सभी याचिकाओं को खारिज कर दिया है। सर्वोच्च न्यायालय का यह निर्णय उन लोगों को आईना दिखाता है जो जबरन नोटबंदी के निर्णय को गलत बताकर सरकार को घेरने के प्रयास करते रहते हैं। उल्लेखनीय है कि कांग्रेस सहित कुछ विपक्षी दल और उनके सहयोगी बुद्धिजीवी पहले दिन से ही नोटबंदी को गलत बताते रहे हैं जबकि परेशानी उठाने के बाद भी सरकार के इस ऐतिहासिक निर्णय का जनता ने खूब स्वागत किया था। यानी एक तरह से नोटबंदी का विरोध करनेवाले लोग सरकार को घेरने के चक्कर में जनभावनाओं को भी नजरअंदाज करते रहे हैं। कांग्रेस समर्थित पत्रकारों ने जब कतार में लगे लोगों से ऐन-केन-प्रकारेण नोटबंदी पर प्रतिकूल टिप्पणी लेने का प्रयास किया था, तब भी उन्हें सफलता नहीं मिली थी। जनता ने ऐसे लोगों को खूब आईना दिखाने का प्रयास किया। उसके बाद हुए लोकसभा चुनाव में भी नोटबंदी को चुनावी मुद्दा बनाने का प्रयास विपक्षी दलों ने किया, तब भी जनता ने नोटबंदी पर अपना समर्थन मोदी सरकार को देकर संदेश देने का काम किया।

अमृत कलश

विश्व एक नीड़ हो जाएगा

संभावित अणुयुद्ध की महाविभीषिका से संत्रस्त, सत्ताधारियों के अत्याचार से पीड़ित, धनपतियों के शोषण से जर्जरित मानव के सामने एक दूसरा महान संदेहास्पद प्रश्न है- हमारे वर्तमान राष्ट्रों का, हमारी पृथ्वी का भविष्य क्या होगा? त्रिकालदर्शी ऋषि विवेकानंद ने अपनी दिव्य दृष्टि से व्यष्टि और समष्टि दोनों के भविष्य को देखा था। तभी तो उन्होंने एक प्रसिद्ध व्याख्यान 'बहुतत्व में एकत्व' में स्पष्ट शब्दों में घोषणा की है-क्रमशः राष्ट्रों में परस्पर मेल होता जा रहा है और मेरी यह दृढ़ धारणा है कि एक दिन ऐसा आएगा, जब राष्ट्र नाम की कोई वस्तु नहीं रह जाएगी। राष्ट्र राष्ट्र का भेद दूर हो जाएगा हम चाहे इच्छा करें या ना करें हम जिस एकत्व की ओर अग्रसर होते जा रहे हैं, वह एक दिन प्रकाशित होगा ही। हम लोगों के मन में संदेह ना रह जाए इसलिए अपनी इस भविष्यवाणी के पीछे जो शाश्वत सिद्धांत है, जो दृढ़ आधार है वह भी स्वामी जी ने हमें बताया है। उसी व्याख्यान में वे आगे कहते हैं -वास्तव में हम सबके बीच भ्रातृ संबंध स्वाभाविक ही है पर हम सब इस समय पृथक हो गए हैं। ऐसा समय अवश्य आएगा जब यह सब विभिन्न भाव आकर मिल जाएंगे। प्रत्येक व्यक्ति वैज्ञानिक विषय के ही समान आध्यात्मिक विषयों में भी व्यवहार कुशल हो जाएगा और तब वह एकत्व सम्मिलित जगत में व्याप्त हो जाएगा। तब सारा जगत जीवन मुक्त हो जाएगा। अपनी ईर्ष्या, घृणा, मेल और विरोध में से होते हुए हम उसी एक दिशा में चले जा रहे हैं।

-स्वामी सत्यरूपानंद

बोध कथा

नूतन ज्ञान का आनंद

स्वामी रामतीर्थ विदेशों में भारतीय संस्कृति का प्रसार किया। भारतीय संस्कृति को लोकप्रिय बनाने के लिए स्वामी जी देशाटन करते थे। यात्रा के दौरान जब वे समुद्री जहाज के डेट पर पहुंचे तो उन्हें एक वृद्ध जापानी पुरुष मिला। स्वामी जी ने देखा कि वह अत्यंत दुर्बल था और उसके नेत्रों की ज्योति क्षीण हो चुकी थी। फिर भी वही वृद्ध व्यक्ति एक युवा विद्यार्थी की तरह अध्ययन में रत था। वृद्ध व्यक्ति को प्रयत्नशील देखकर स्वामी जी को आश्चर्य हुआ। वह उसके निकट गए तो देखा कि वह चीनी भाषा सीख रहा है। इस भाषा को सीखने के लिए काफी श्रम और समय चाहिए जबकि वह जर्जर व्यक्ति कुछ समय ही जीवित रहने योग्य था। स्वामी जी को उसकी क्रियाशीलता अनावश्यक प्रतीत हुई लेकिन उसकी लगन देखकर उन्हें जिज्ञासा हुई। उन्होंने वृद्ध को नमस्कार कर परिचय दिया। स्वामी जी ने पूछा- यदि आपने आठ 10 वर्षों में चीनी भाषा सीख ली तो इसका उपयोग कब और कैसे करेंगे। यह सुनकर वृद्ध व्यक्तियों के झुर्रीदार मुख पर मुस्कान आई उसने स्वामी जी से पूछा तुम्हारी उम्र कितनी है स्वामी जी ने उत्तर दिया मेरी अवस्था लगभग 30 वर्ष है। वृद्ध खिलखिला कर हंसा और बोला- मेरे भारतीय मित्र, तुम मेरे पोते की उम्र के हो, पर लगता है कि तुम बूढ़े होने लगे हो। मैं जब तक जीवित रहूंगा तब तक कुछ ना कुछ सीखता रहूंगा। जीवित रहते एक-एक दिन का उपयोग ना करूं तो मृत ही समझो। कुछ ना कुछ सीखते जाना ही जीवन का आनंद है। मैं इस नूतन और अनोखे आनंद को छोड़ नहीं सकता। यह बात सुनकर स्वामी रामतीर्थ के मन में उसके प्रति श्रद्धा उमड़ आई। वह उसके चरणों में झुक गए।

जैन समाज की आस्था एवं भक्ति से खिलवाड़ है, उनकी धार्मिक भावनाओं को आहत करना है

जैन तीर्थ के अस्तित्व एवं अस्मिता से खिलवाड़ क्यों?

ललित गर्ग

> हर जैन धर्मावलम्बी के लयि यह ऐसा तीर्थ है, जहां जीवन में बार-बार दर्शन की भावना रहती है, जहां मुंहपट्टी लगाए रखते थे या मुंह खोलते ही नहीं थे ताकि किसी जीव की हिंसा न हो जाए। बिना जूते-चप्पल जाते हैं। बिना आहार ग्रहण करने की भावना रहती है, ऐसा पवित्र भाव जिस तीर्थ के लिए करोड़ों लोगों के दिल में रहता हो, यदि उसे सरकार एक पर्यटन लस्थ बना दे तो वहां क्या नहीं होगा? तब क्या वहां लोग मौज-मजा करने के लिए नहीं आने लगेंगे? वे वहां शराब पियेंगे, मांसाहार करेंगे और बहुत-से अनैतिक काम भी वहां होने लगेंगे, सारे भारत का जैन समाज इस आशंका से उद्वेलति है।

जैन समाज के सर्वोच्च तीर्थ सम्मेद शिखर को लेकर देशभर में गुस्सा और आक्रोश का उबरना झारखंड सरकार की दूषित नीति को दर्शा रहा है। गिरिडीह जिले में स्थित पारसनाथ पहाड़ी को पर्यटन केन्द्र घोषित किया जाना, जैन समाज की आस्था एवं भक्ति से खिलवाड़ है, उनकी धार्मिक भावनाओं को आहत करना है। इसके खिलाफ देशभर में जैन समाज के लोग इसलिये प्रदर्शन कर रहे हैं कि पारसनाथ पहाड़ी दुनिया भर के जैन धर्मावलंबियों में सर्वोच्च तीर्थ सम्मेद शिखर के तौर पर प्रसिद्ध है। इसे पर्यटन केन्द्र घोषित करने से इसकी पवित्रता खण्डित होगी, मांस-मदिरा का सेवन करने वाले लोग आने लगेंगे। यह मौज-मस्ती का अड्डा एवं अनेक अधार्मिक गतिविधियों का यह केन्द्र बन जायेंगा। किसी व्यक्ति के बारे में सबसे बड़ी बात जो कही जा सकती है, वह यह है कि "उसने अपने चरित्र पर कालिख नहीं लगने दी।" जब व्यक्ति अपने पर कालिख नहीं लगने देता तो उसकी धार्मिक आस्था के सर्वोच्च पर कालिख पोतने के प्रयासों को कैसे सहन कर सकेगा? अपने धर्म दीप को दोनों हाथों से सुरक्षित रखकर प्रज्वलित रखने का प्रयास जायज है। ऐसा करना हर व्यक्ति, धर्म, आस्था के मानने वाली परम्परा का लोकतांत्रिक अधिकार है, इस पर किसी सरकार के द्वारा कालिख पोतने का प्रयास एक तरह से आकाश में पैबंद लगाना या सछिद्र नाव पर सवार होना है। इस तीर्थस्थल की श्वेतांबर और दिगंबर जैनियों के लिए वही पवित्रता, महत्ता, दिव्यता है, जो मक्का-मदीना, येरुशलम, स्वर्ण मंदिर और वैष्णो देवी मंदिर आदि की है। चूंकि पर्यटन स्थल विकसित किया जाना है, लिहाजा सरकारी अधिसूचना में मछली और मुर्गी पालन का उल्लेख है। पर्यटकों के लिए होटल, रिजॉर्ट बनेंगे, लिहाजा पेड़ों के अवैध कटान और खनन अभी से जारी हैं। वन-विभाग अलग-अलग संगठनों और कंपनियों को जमीन बेच रहा है, नतीजतन अभी से अतिक्रमण शुरू हो गए हैं। बोर्ड तोड़ दिए गए हैं, असामाजिक तत्त्व सक्रिय हैं, वाहनों की आवाजाही बढ़ गई है, लिहाजा पर्यावरण छिल रहा है। इसका अर्थ यह नहीं है कि श्री सम्मेद शिखरजी जैसे सुरम्य पर्वतीय स्थलों पर पर्यटक जाएं ही नहीं। वे वहां जाएं लेकिन उनका आचरण नियंत्रित हो, मर्यादित हो और धर्मप्रेमी लोगों का ध्यान भंग करनेवाला न हो। श्री सम्मेद शिखरजी ऐसा पवित्र स्थल है, इस

पुण्य क्षेत्र में जैन धर्म के 24 में से 20 तीर्थंकरों (सर्वोच्च जैन गुरुओं-तीर्थंकरों) ने मोक्ष की प्राप्ति की। यहीं 23 वें तीर्थकर भगवान पार्श्वनाथ ने भी निर्वाण प्राप्त किया था। हर जैन धर्मावलम्बी के लिये यह ऐसा तीर्थ है, जहां जीवन में बार- बार दर्शन की भावना रहती है, जहां मुंहपट्टी लगाए रखते थे या मुंह खोलते ही नहीं थे ताकि किसी जीव की हिंसा न हो जाए। बिना जूते-चप्पल जाते हैं। बिना आहार ग्रहण करने की भावना रहती है, ऐसा पवित्र भाव जिस तीर्थ के लिए करोड़ों लोगों के दिल में रहता हो, यदि उसे सरकार एक पर्यटन स्थल बना दे तो वहां क्या नहीं होगा? तब क्या वहां लोग मौज-मजा करने के लिए नहीं आने लगेंगे? वे वहां शराब पियेंगे, मांसाहार करेंगे और बहुत-से अनैतिक काम भी वहां होने लगेंगे, सारे भारत का जैन समाज इस आशंका से उद्वेलित है। क्योंकि "सम्मेद शिखरजी" जैन संस्कृति है, सभ्यता है, आस्था है, इतिहास है, विरासत है और धार्मिकता का सर्वोच्च शिखर है। सम्मेद शिखरजी 1,350 मीटर (4,430 फुट) ऊँचा यह पहाड़ झारखंड का सबसे ऊंचा स्थान भी है। यहाँ हर साल लाखों जैन धर्मावलंबियों आते है, साथ-साथ अन्य पर्यटक भी पारसनाथ पर्वत की वंदना करना जरूरी समझते हैं। गिरिडीह स्टेशन से पहाड़ की तलहटी मधुवन तक क्रमशः 14 और 18 मील है। पहाड़ की चढ़ाई उतराई तथा यात्रा करीब 18 मील की है। यह जैन तीर्थों में सर्वश्रेष्ठ माना जाता है। यह 'सिद्धक्षेत्र' कहलाता है और जैन धर्म में इसे तीर्थराज अर्थात 'तीर्थों का राजा' कहा जाता है। जैन ग्रंथों के अनुसार सम्मेद शिखर और अयोध्या, इन दोनों का अस्तित्व सृष्टि के समानांतर है। इसलिए इनको 'शाश्वत' माना जाता है। प्राचीन ग्रंथों में यहाँ पर तीर्थंकरों और तपस्वी संतों ने कठोर तपस्या और ध्यान द्वारा मोक्ष प्राप्त किया। यही कारण है कि जब सम्मेद शिखर तीर्थयात्रा शुरू होती है तो हर तीर्थयात्री का मन तीर्थंकरों का स्मरण कर अपार श्रद्धा, आस्था, उत्साह और खुशी से भरा होता है। इन स्थितियों की जगजाहिर जानकारी के बावजूद झारखंड सरकार ने क्या सोचकर इसे पर्यटन केन्द्र घोषित किया। वैसे भी कोई भी धार्मिक स्थल पर्यटन केन्द्र नहीं हो सकता। जैन शास्त्रों में लिखा है कि अपने जीवन में सम्मेद शिखर तीर्थ की एक बार भावपूर्ण यात्रा करने पर मृत्यु के बाद व्यक्ति को पशु योनि और नरक प्राप्त नहीं होता। यह भी लिखा गया है कि जो व्यक्ति सम्मेद शिखर आकर पूरे मन, भाव और निष्ठा से भक्ति करता है, उसे मोक्ष प्राप्त होता है और इस संसार के सभी जन्म-कर्म के बंधनों से अगले 49 जन्मों तक मुक्त वह रहता है। यह सब तभी संभव होता है, जब यहाँ पर सभी भक्त तीर्थंकरों को स्मरण कर उनके द्वारा दिए गए उपदेशों, शिक्षाओं और सिद्धांतों का शुद्ध आचरण के साथ पालन करें। इस प्रकार यह क्षेत्र बहुत पवित्र माना जाता है। पर्यटन केन्द्र बन जाने से इसकी पवित्रता कैसे सुरक्षित रहेगी? क्योंकि पर्यटन केन्द्र बन जाने से लोग वहां भक्ति के लिये मनोरंजन के लिये जाने लगेंगे। सम्मेद शिखर तीर्थ का धार्मिक के साथ साथ सांस्कृतिक, सामाजिक एवं ऐतिहासिक महत्व भी है। इस क्षेत्र की पवित्रता और सात्विकता के प्रभाव से ही यहाँ पर पाए जाने वाले शेर, बाघ आदि जंगली पशुओं का स्वाभाविक हिंसक व्यवहार नहीं देखा जाता। इस कारण तीर्थयात्री भी बिना भय के यात्रा करते हैं। संभवतः इसी प्रभाव के कारण प्राचीन समय से कई राजाओं, आचार्यों, भट्टारक, श्रावकों ने आत्म-कल्याण और मोक्ष प्राप्ति की भावना से तीर्थयात्रा के लिए विशाल समूहों के साथ यहाँ आकर तीर्थंकरों की उपासना, ध्यान और कठोर तप किया। इसके तीर्थ के महत्व को बहुगुणित करने की बजाय उस पर कालिख लगाने की कुचेष्टा एवं षडयंत्र असहनीय ही माना जायेगा। प्रश्न है कि इसके लिये जैन समाज का सर्वोच्च राजनीतिक नेतृत्व क्या सोचकर चुप्पी साधे रहा? देश की अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण हिस्सेदारी निभाने वाले इस अहिंसा एवं शांति के पुजारी समाज को आखिर क्यों आहत किया जा रहा है? प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी एवं गृहमंत्री अमित शाह को इसमें दखल देकर जैन समाज के उबलते गुस्से को शांत करना चाहिए।

ऋषि दयानन्द क्या चाहते थे?

> महाभारत के बाद ऐसा कोई विद्वान नहीं हुआ है जिसने वेदों के सत्य, यथार्थ तथा महर्षि यास्क के निरुक्त ग्रन्थ के अनुरूप व्यवहारिक, उपयोगी, कल्याणकारी एवं ज्ञान-विज्ञान के अनुरूप अर्थ किये हों। वेदों का यथार्थ ज्ञान हो जाने पर मनुष्य ईश्वर, जीवात्मा और प्रकृति के सत्य रहस्यों व ज्ञान-विज्ञान से परिचित हो जाता है ।ऋषि दयानन्द से पूर्व उन जैसा वेदों का विद्वान व प्रचारक न होने के कारण विगत पांच हजार वर्षों से मनुष्य ईश्वर व जीवात्मा के सत्य स्वरूप के विषय में शंकित व भ्रमित था। इस बीच बड़ी संख्या में मत-मतान्तर उत्पन्न हुए परन्तु वह वेद, दर्शन व उपनिषदों के होते हुए भी ईश्वर के सत्यस्वरूप को लेकर भ्रमित रहे। सभी मतों के आचार्यों में विवेक का अभाव प्रतीत होता है अन्यथा वह जड़ पूजा, मिथ्या पूजा व मूर्तिपूजा का विरोध व खण्डन अवश्य करते और जनसामान्य को बताते कि ईश्वर सच्चिदानन्द एवं निराकार आदि गुणों वाला है और उसकी प्राप्ति वा साक्षात्कार उस सर्वव्यापक एवं सर्वान्तरयामी सत्ता की उपासना व ध्यान करने सहित स्तुति, प्रार्थना व उपासना के माध्यम से ही की जा सकती है।

ऋषि दयानन्द महाभारत के बाद विगत लगभग पांच हजार वर्षों में वेदों के मंत्रों के सत्य अर्थों को जानने वाले व उनके आर्ष व्याकरणानुसार सत्य, यथार्थ तथा व्यवहारिक अर्थ करने वाले ऋषि हुए हैं। महाभारत के बाद ऐसा कोई विद्वान नहीं हुआ है जिसने वेदों के सत्य, यथार्थ तथा महर्षि यास्क के निरुक्त ग्रन्थ के अनुरूप व्यवहारिक, उपयोगी, कल्याणकारी एवं ज्ञान-विज्ञान के अनुरूप अर्थ किये हों। वेदों का यथार्थ ज्ञान हो जाने पर मनुष्य ईश्वर, जीवात्मा और प्रकृति के सत्य रहस्यों व ज्ञान-विज्ञान से परिचित हो जाता है। ऋषि दयानन्द से पूर्व उन जैसा वेदों का विद्वान व प्रचारक न होने के कारण विगत पांच हजार वर्षों से मनुष्य ईश्वर व जीवात्मा के सत्य स्वरूप के विषय में शंकित व भ्रमित था। इस बीच बड़ी संख्या में मत-मतान्तर उत्पन्न हुए परन्तु वह वेद, दर्शन व उपनिषदों के होते हुए भी ईश्वर के सत्यस्वरूप को लेकर भ्रमित रहे। सभी मतों के आचार्यों में विवेक का अभाव प्रतीत होता है अन्यथा वह जड़ पूजा, मिथ्या पूजा व मूर्तिपूजा का विरोध व खण्डन अवश्य करते और जनसामान्य को बताते कि ईश्वर सच्चिदानन्द एवं निराकार आदि गुणों वाला है और उसकी प्राप्ति वा साक्षात्कार उस सर्वव्यापक एवं सर्वान्तयामी सत्ता की उपासना व ध्यान करने सहित स्तुति, प्रार्थना व उपासना के माध्यम से ही की जा सकती है। महर्षि दयानन्द क्या चाहते थे? इसके उत्तर में यह कह सकते हैं कि वह संसार को ईश्वर, जीवात्मा तथा प्रकृति का सत्यस्वरूप बताना चाहते थे जो सृष्टि के आरम्भ में सर्वव्यापक ईश्वर ने अपने ज्ञान वेदों के द्वारा अमैथुनी सृष्टि में उत्पन्न चार ऋषियों अग्नि, वायु, आदित्य तथा अंगिरा को दिया था। ऋषि दयानन्द ने ईश्वर व जीवात्मा विषयक वेदों के समस्त ज्ञान को अपने प्रयत्नों से प्राप्त किया था और इतिहास में पहली बार इसे सरल लोकभाषा हिन्दी सहित संस्कृत में देश-देशान्तर में पहुंचाया। ईश्वरीय ज्ञान ''वेद" सब सत्य विद्याओं का ग्रन्थ है। इस कारण वह इसे सभी देशवासियों सहित विश्व के लोगों तक पहुंचाना चाहते थे जिससे वह वेदों का आचरण कर मनुष्य जीवन के पुरुषार्थ एवं उद्देश्य धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष को प्राप्त हो सकें। वह इस कार्य में आंशिक रूप से सफल भी हुए। आज इसका प्रभाव समस्त विश्व पर देखा जा सकता है। इसी कार्य के लिये ऋषि दयानन्द ने आर्यसमाज की स्थापना की थी। इस कार्य को सम्पादित करने के लिये उन्होंने अनेक ग्रन्थों का प्रणयन किया जिनमें ऋग्वेद (आंशिक) तथा यजुर्वेद के संस्कृत व हिन्दी भाष्य सहित सत्यार्थप्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका, संस्कारविधि, पंचमहायज्ञविधि, आर्याभिविनय, व्यवहारभानु, गोकरूणानिधि आदि ग्रन्थ हैं। देश व विश्व के लोग ईश्वर व आत्मा के सत्यस्वरूप तथा गुण-कर्म-स्वभाव को जानें और सही विधि से ईश्वरोपासना करें, इसके लिये उन्होंने पंचमहायज्ञविधि लिखी जिसमें उन्होंने प्रातः व सायं ध्यान विधि से ईश्वर की उपासना की विधि ''सन्ध्या" के नाम से प्रस्तुत की है। ईश्वर का ध्यान करने की यही विधि सर्वोत्तम है। इसका ज्ञान सभी उपासना पद्धतियों सहित सन्ध्या का अध्ययन करने से होता है। अतीत में अनेक पौराणिक विद्वानों ने भी अपनी सन्ध्या व उपासना पद्धतियों को छोड़कर ऋषि दयानन्द लिखित संन्ध्या पद्धति की शरण ली है। पं. युधिष्ठिर मीमांसक जी ने अपनी आत्माकथा में इसका उल्लेख करते हुए बताया है कि काशी में जिस उच्च कोटि के विद्वान पं. देवनारायण तिवारी जी से वह पढ़ते थे उन्होंने यह जाने बिना की पुस्तक किसकी लिखी हुई है, इसे सर्वोत्तम जानकर इसी विधि से उपासना करना आरम्भ कर दिया था। बाद में जब उन्हें यह पता चला कि वह सन्ध्या की पुस्तक स्वामी दयानन्द सरस्वती ने लिखी है तो उन्हें ऋषि दयानन्द की विद्वता को जानकर सुखद आश्चर्य हुआ था। महर्षि दयानन्द ने 10 अप्रैल, 1875 को मुम्बई नगरी में आर्यसमाज की स्थापना की थी। इसके बाद लाहौर में आर्यसमाज के 10 नियम बनाये गये जिनमें से आठवां नियम है 'अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिये।' हम इससे पूर्व किसी संस्था व देश के संविधान में इस नियम का विधान नहीं पाते। यह नियम ऐसा नियम है कि जो समाज व देश इस नियम को अपना ले, वह ज्ञान व विज्ञान में शिखर स्थान प्राप्त कर सकता है। आश्चर्य है कि हमारे देश में इसे अब तक लागू नहीं किया जा सका। ऋषि दयानन्द अपने ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश में देश के सभी बालक व बालिकाओं के लिये वेदानुमोदित शास्त्रीय व ज्ञान-विज्ञान की शिक्षा का विधान करते हैं। वह लिखते हैं कि शिक्षा व विद्या देश के सभी बालक व बालिकाओं को निःशुल्क व समान रूप से मिलनी चाहिये। वैदिक शिक्षा में बच्चों को गुरुकुल में रहकर शिक्षा प्राप्त करनी होती है। राजा हो या रंक, सबको शिक्षा का अधिकार है, इसका विधान ऋषि दयानन्द ने किया है। उन्होंने यह भी लिखा है कि किसी भी विद्यार्थी के साथ किसी भी प्रकार का भेदभाव नहीं होना चाहिये। सबको समान रूप से वस्त्र, भोजन एवं अन्य सभी सुविधायें मिलनी चाहियें। यह भी कहा है कि शिक्षा सभी बालक व बालिकाओं के लिये अनिवार्य होनी चाहिये। जो माता-पिता अपने बच्चों को गुरुकुल, पाठशाला व विद्यालयों में न भेंजे, वह दण्डनीय होने चाहिये। मनुष्य जब ईश्वर व जीवात्मा के विषय को यथार्थ रूप में जान लेता है तब वह सभी प्रकार के अज्ञान व अन्धविश्वासों सहित मिथ्या परम्पराओं से भी परिचित होकर सत्य का ग्रहण और असत्य का त्याग करता है। जन्मना जातिवाद पर भी ऋषि दयानन्द ने प्रहार किया है। जन्मना जाति व्यवस्था को ऋषि दयानन्द ने मरण व्यवस्था की संज्ञा वा उपमा दी थी। वह इस व्यवस्था से दुःखी थे। उन्होंने वेदों के ज्ञान व अपने विवेक से युवक व युवती के विवाह का विधान कर उनके गुण, कर्म व स्वभाव की समानता व अनुकूलता पर बल दिया है। वह बेमेल विवाह व बाल विवाह के विरोधी थे। वह इन्हें वेद विरुद्ध एवं देश व समाज की उन्नति में बाधक मानते थे। ऋषि दयानन्द ने युवावस्था की विधवाओं व विधुरों का विरोध नहीं किया। यद्यपि वह सभी प्रकार के पुनर्विवाहों को उचित नहीं मानते थे परन्तु आर्यसमाज इसे आपदधर्म के रूप में स्वीकार करता है। वेद में भी विधवा स्त्री के पुनर्विवाह का विधान है। सभी सामाजिक परम्पराओं पर महर्षि दयानन्द की विचारधारा प्रकाश डालती है। ऋषि दयानन्द देश में स्वराज्य देखना चाहते थे। इस विषय में उन्होंने सत्यार्थप्रकाश में स्वदेशीय राज्य को सर्वोपरि उत्तम बताया है और कहा है कि मत-मतान्तर के आग्रह रहित, अपने और पराये का पक्षपातशून्य, प्रजा पर पिता माता के समान कृपा, न्याय और दया के साथ विदेशियों का राज्य पूर्ण सुखदायक नहीं हो सकता। उनके इन विचारों के परिणामस्वरूप कालान्तर में देश में आजादी के लिये गरम व नरम विचारधारायें सामने आयीं। देश की आजादी के आन्दोलन में सबसे अधिक योगदान भी आर्यसमाज ने ही किया। आर्यसमाज ने देश की आर्य हिन्दू जाति को धर्मान्तरण से बचाया।

नागरिक बोध

वोट और इलाजः दो सुंदर पहल

आज दो खबरें ऐसी हैं, जो भारत ही नहीं, सारे पड़ौसी देशों के लिए भी लाभकारी और प्रेरणादायक हैं। पहली खबर तो यह है कि भारत के चुनाव आयोग ने एक ऐसी मशीन बनाई है, जिसके जरिए लोग कहीं भी हों, वे अपना वोट डाल सकेंगे। अभी तो मतदान की जो व्यवस्था है, उसके अनुसार आप जहाँ रहते हैं, सिर्फ वहीं जाकर वोट डाल सकते हैं। लगभग 30 करोड़ लोग इसी कारण वोट डालने से वंचित रह जाते हैं। भारत के लोग केरल से कश्मीर तक मुक्त रूप से आते-जाते हैं और एक-दूसरे के प्रांत में रहते भी हैं। जरा सोचिए कि कोई मलयाली आदमी सिर्फ वोट डालने के लिए कश्मीर से केरल क्यों जाएगा? कोई हारे या जीते, वह अपने हजारों रूपए और कई दिन उनके लिए क्यों खपाएगा? यदि देश में यह नई सुविधा कायम हो गई तो कुल मतदाताओं की संख्या 100 करोड़ से भी ज्यादा हो जाएगी। भारतीय लोकतंत्र की यह बड़ी उपलब्धि मानी जाएगी। कई देशों में तो अब ऐसी व्यवस्था भी आ गई है कि आप को मतदान-केंद्र तक भी जाने की जरूरत नहीं है। आप घर बैठे ही वोट डाल सकते हैं। भारत में भी ऐसी व्यवस्था शुरु होने में देर नहीं होनेवाली है। चुनाव आयोग को इस नई व्यवस्था को लागू करना के पहले सर्वदलीय सहमति और जन-समर्थन भी जुटाना होगा। इसका स्वागत तो सभी पक्ष करेंगे। दूसरी बात, जो अद्भुत हुई है, वह है हरियाणा की मनोहरलाल खट्टर सरकार की यह घोषणा कि जिन परिवारों की आय 15 हजार रू. माह से कम है, वे निजी अस्पतालों में भी मुफ्त इलाज करवा सकेंगे। आजकल देश के निजी अस्पताल ठगी के बड़े साधन बन गए हैं। देश के गरीब तो क्या, वहाँ अमीरों के भी छक्के छूट जाते हैं। वहाँ लूटपाट इतनी तगड़ी होती है कि मरीज़ के साथ-साथ उसके परिवारजन भी रोगी हो जाते हैं। हरियाणा सरकार के ताजा आदेश के मुताबिक अब इन निजी अस्पतालों को गरीबों का 5 लाख का इलाज बिल्कुल मुफ्त करना होगा और यदि खर्च 10 लाख रु. आएगा तो उसका सिर्फ 10 प्रतिशत ही वे मरीज से ले सकेंगे। ऐसे मरीजों के लिए उन्हें अस्पतालों के 20 प्रतिशत पलंग आरक्षित करके रखने होंगे। हर गरीब मरीज़ को इन अस्पतालों को भर्ती करना ही होगा। वे उसके इलाज़ से मना नहीं कर सकते। अगर मना करेंगे तो उन अस्पतालों को मुफ्त में दी गई जमीन वापिस ले ली जाएगी। यह नियम तो अच्छा है, सराहनीय है लेकिन देखना है कि यह कहां तक क्रियान्वित होता है। देश की सभी प्रादेशिक सरकारों के लिए हरियाणा सरकार की यह पहल अनुकरणीय है। वैसे केंद्र सरकार ने भी इस संबंध में कुछ उत्तम पहल की हैं लेकिन देश में शिक्षा और चिकित्सा सर्वसुलभ हो, इसके लिए जरुरी है कि ये दोनों लगभग मुफ्त हों।

देश दुनीया से

हर दोष पुलिस में ही क्यों ढूंढा जाता है

किसी भी समाज की व्यवस्था, विकास और सुरक्षा के लिए पुलिस बल जैसी संस्थाओं का होना अति आवश्यक होता है। पुलिस तंत्र आदिकाल से ही शासन व्यवस्था बनाए रखने के लिए कार्यरत रहा है तथा पुलिस विभाग हमेशा अच्छाइयों व बुराइयों द्वारा मिश्रित रूप से प्रभावित होता आ रहा है। एक ओर आकर्षक व बलिष्ठ शरीर, अनुशासन प्रियता तथा कत्र्तव्य निष्ठा, पुलिस जवानों का विशिष्ट गुण होता है, वहीं यह भी कटु सत्य है कि पुलिस जवान तनाव में रहते हुए कई व्यसनों के शिकार भी हो जाते हैं। सभी पुलिस कर्मचारियों व अधिकरियों को प्रशिक्षण के दौरान निष्पक्षता एवं निष्ठा से कत्र्तव्य पालन का सबक सिखाया जाता है। पुलिस से यही अपेक्षा की जाती है कि वह अपराधियों का उन्मूलन कर कानून व्यवस्था बनाए रखने में अपना पूरा सहयोग दे। अपने इस कत्र्तव्य पालन में हर पुलिस कर्मचारी व अधिकारी को दोधारी तलवार पर चलना पड़ता है। पुलिस कर्मचारी कितना भी कुशल व निपुण क्यों न हो, उसे जनता से प्रशंसा बहुत कम मिलती है तथा अन्य विभागों की नाकामियों के लिए भी पुलिस को ही बलि का बकरा बनाया जाता है। वास्तव में जैसे जैसे समय बीतता गया, सरकार ने पुलिस की संख्या बढ़ाने की तरफ कम ध्यान दिया तथा कानून व्यवस्था को बनाए रखने के लिए अन्य विभागों को भी पुलिस के समानांतर अधिकार दे दिए गए तथा यह सभी विभाग अपनी नाकामियों पर पर्दा डालने के लिए पुलिस को ही मोहरा बनाते चले आ रहे हैं। उदाहरणतः वन विभाग, खनन व आबकारी विभाग कुछ ऐसे विभाग हैं जिन्हें अपराधियों पर नकेल डालने के सभी अधिकार दे दिए गए हैं, मगर जब यह विभाग अपने कार्य का निष्पादन सही ढंग से नहीं कर पाते तो ये सारा दोष पुलिस के माथे पर ही मढ़ देते हैं तथा दूसरी तरफ कहीं न कहीं अपराधियों के साथ अपनी पूरी साठगांठ करते हुए अपना काम निकालते रहते हैं। अनधिकृत खनन को रोकने के लिए खनन विभाग को अपराधियों पर शिकंजा कसने का पूरा अधिकार दिया गया है, मगर न जाने अचानक कितनी गाडियां रेत व बजरी को अवैध ढंग से ले जाती हुई पाई जाती हैं तथा जब उनको कोई न्यायालय या मीडिया के लोग उनकी लाचारी का कारण पूछते हैं तब इस विभाग के अधिकारी यह कह कर अपना पल्ला झाड़ लेते हैं कि उनके पास पर्याप्त स्टाफ नहीं होता तथा अपराधियों से अपनी सुरक्षा करने के लिए कोई हथियार इत्यादि भी नहीं होते। ऐसे में आम जनता भी इस सबके लिए पुलिस को ही जिम्मेदार ठहराती है। इसी तरह वन विभाग के अधिकारियों को वनों के अवैध कटान इत्यादि को रोकने के लिए पूर्ण अधिकार दिए गए हैं तथा यहां तक कि वन पुलिस स्टेशन भी खोले गए हैं। यह विभाग केवल छोटे-मोटे अपराधों में जुर्माना इत्यादि करके ही अपना काम चलाता रहता है तथा जब किसी बड़े अपराध की घटना हो तो रिपोर्ट बनाकर पुलिस के हवाले करके मरा हुआ सांप उनके गले में डाल देते हैं। अगर हम आबकारी विभाग की बात करें तो शराब के तमाम बड़े ठेकेदार बिना परमिट के शराब की काफी बड़ी मात्रा अपने स्टाक में रखते हैं तथा यह ठेकेदार छोटे-छोटे दुकानदारों को घर-घर जाकर अवैध शराब की आपूर्ति करते रहते हैं तथा सरकार पुलिस को एक-एक, दो-दो बोतलें पकडने का काम दे देती है। यदि ठेकेदारों पर विभाग की कड़ी कार्रवाई होती रहे तो घर-घर पर अवैध शराब की आपूर्ति सम्भव न हो पाती। ऐसा न करने से केवल पुलिस को ही इसके लिए जिम्मेदार ठहराया जाता है। इसी तरह यदि हम मादक पदार्थों व दवाईयों की बात करें तो कैमिस्टों पर ड्रग कन्ट्रोलर व उसके अन्य कर्मचारियों का नियन्त्रण होता है, मगर उनकी मिलीभगत से दुकानदार इन प्रतिबंधित दवाइयों का काला धन्धा करते रहते हैं। इस विभाग ने ऐसे नियम बना रखे हैं कि पुलिस कैमिस्टों की दुकान पर अचानक छापा भी नहीं मार सकती तथा ऐसा करने के लिए उन्हें ड्रग निरीक्षक को साथ लेना आवश्यक रखा गया है।

> सभी पुलसि कर्मचारियों व अधिकरियों को प्रशिक्षण के दौरान निष्पक्षता एवं निष्ठा से कत्र्तव्य पालन का सबक सिखाया जाता है। पुलसि से यही अपेक्षा की जाती है कि वह अपराधियों का उन्मूलन कर कानून व्यवस्था बनाए रखने में अपना पूरा सहयोग दे। अपने इस कत्र्तव्य पालन में हर पुलसि कर्मचारी व अधिकारी को दोधारी लतवार पर चलना पड़ता है। वास्तव में जैसे जैसे समय बीतता गया, सरकार ने पुलसि की संख्या बढ़ाने की तरफ कम ध्यान दिया तथा कानून व्यवस्था को बनाए रखने के लिए अन्य विभागों को भी पुलसि के समानांतर अधिकार दे दिए गए तथा यह सभी विभाग अपनी नाकामियों पर पर्दा डालने के लिए पुलसि को ही मोहरा बनाते चले आ रहे हैं।

दक्षिण कोरिया के साथ साझा परमाणु अभ्यास से बाइडन का इनकार, किम ने शीर्ष सैन्य अधिकारी को हटाया

वाशिंगटन/प्योंगयांग ।
उत्तर व दक्षिण कोरिया के बीच लगातार तनाव के बीच अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडन ने बड़ी बात कही है। उन्होंने साफ कहा है कि फिलहाल उनका देश दक्षिण कोरिया के साथ साझा परमाणु अभ्यास नहीं करेगा। दक्षिण कोरिया के राष्ट्रपति ने पड़ोसी देश के तानाशाह शासक किम जोंग उन की ओर से बढ़ते खतरे को देखते हुए साझा अभ्यास की पेशकश की थी। उधर, किम जोंग ने उत्तर कोरिया के दूसरे सबसे ताकतवर सैन्य अधिकारी को हटा दिया।

नए साल की छुट्टियां मनाकर सोमवार रात वाशिंगटन लौटे राष्ट्रपति बाइडन ने कहा कि अमेरिका दक्षिण कोरिया के साथ साझा परमाणु अभ्यास पर कोई चर्चा नहीं कर रहा है। एक पत्रकार ने उनसे पूछा था कि क्या वह दक्षिण कोरिया के साथ साझा परमाणु अभ्यास पर चर्चा कर रहे हैं इससे साफ इनकार करते हुए उन्होंने दक्षिण कोरिया के राष्ट्रपति यून सुक येओल के इससे संबंधित प्रस्ताव को खारिज कर दिया। इससे पहले दक्षिण कोरिया के राष्ट्रपति येओल ने कहा था कि परमाणु हथियार अमेरिका के हैं, लेकिन इनसे संबंधित योजना, सूचनाएं साझा करना, साझा अभ्यास, प्रशिक्षण आदि के बारे में फैसला दोनों देशों को मिलकर करना चाहिए।

तानाशाह किम जोंग उन ने ताकतवर सैन्य अधिकारी को हटाया - उधर, प्योंगयांग से मिली खबर के अनुसार उत्तर कोरिया के तानाशाह किम जोंग उन ने देश के दूसरे सबसे ताकतवर सैन्य अधिकारी पाक जोंग चोन का पद से हटा दिया। किम जोंग ने यह फैसला क्यों, लिया यह नहीं बताया गया है, लेकिन उत्तर कोरिया इस तरह का सैन्य बदलाव करता रहता है। साल के अंत में होने वाली पार्टी में इस तरह की नियुक्तियों व नीतियों में परिवर्तनों का एलान किया जाता है। उत्तर कोरिया की सत्तारूढ़ वर्कर्स पार्टी के केंद्रीय सैन्य आयोग के उपाध्यक्ष और पार्टी की केंद्रीय समिति के सचिव पाक को पिछले सप्ताह समिति की वार्षिक बैठक में हटाने का फैसला किया गया। उनकी जगह योंग गिल को नियुक्त किया गया है।

सिर नीचे कर के बैठे थे पाक - उत्तर कोरिया के सरकारी टेलीविजन ने बैठक के दौरान पाक जोंग चोन को अग्रिम पंक्ति में सिर नीचे करके बैठे हुए दिखाया गया। बाद में उनकी सीट खाली दिखाई गई।

दुनिया का सबसे बड़ा परमाणु शस्त्रागार बनाने का लक्ष्य - किम जोंग ने यह बदलाव ऐसे वक्त किया है, जब वर्ष 2023 में अमेरिका और दक्षिण कोरिया के खिलाफ व्यापक अंतरमहाद्वीपीय बैलेस्टिक मिसाइलों का बड़ा भंडार बनाने का एलान किया है।

न्यूज ब्रीफ

मैं अपने भाई और पिता को वापस चाहता हूं...आत्मकथा रिलीज से पहले सामने आया प्रिंस हैरी का वीडियो

लंदन । ब्रिटेन के शाही परिवार से अलग होने के बाद प्रिंस हैरी की आने वाली आत्मकथा स्पेयर ने काफी हो हल्ला मचा रखा है। 10 जनवरी को इस आत्मकथा का विमोचन होना है। इससे पहले आठ जनवरी को रिलीज होने वाले उनके दो इंटरव्यू को लेकर भी मामला गर्म है। प्रिंस हैरी को यह कहते हुए सुना गया है कि वह अपने पिता और भाई को वापस चाहते हैं। उन्होंने आरोप लगाते हुए कहा कि उनके खिलाफ झूठी कहानियां गढ़ी गई कि उन्होंने और उनकी पत्नी मेघन मार्कल ने शाही दायित्वों से पीछे हटने का प्रयास किया। प्रोमो क्लिप में हैरी यह कहते हुए दिखाई दे रहे हैं कि उन्हें लगता है कि हमें किसी तरह खलनायक के रूप में रखना बेहतर है और उन्होंने सुलह करने की बिल्कुल भी इच्छा नहीं दिखाई। हालांकि, प्रोमो क्लिप में यह स्पष्ट नहीं था कि वह किसका जिक्र कर रहे थे। एक मिनट के क्लिप में हैरी से शाही परिवार से दूर जाने के बाद सार्वजनिक रूप से जीवन जीने के बारे में सवाल पूछा गया, वहीं महल से उनके बारे में सामने आईं कहानियों पर भी सवाल किए गए। हैरी ने कहा, मेरे और मेरी पत्नी के खिलाफ कहानियां गढ़ी गईं कि हमनें शाही कर्तव्यों से पीछे हटने का प्रयास किया। मैं अपने पिता और अपने भाई को वापस चाहता हूं। बता दें, महारानी एलिजाबेथ के जिंदा रहते प्रिंस हैरी अपनी पत्नी मेघन मार्कल के साथ ब्रिटेन महल की सुख-सुविधाओं से अलग हो गए थे। फिलहाल वह कैलिफोर्निया में आम लोगों की तरह ही अपना जीवन गुजार रहे हैं। वहीं उनकी जिंदगी के बारे में एक डॉक्यूमेंट्री सीरीज हैरी एंड मेगन बनाई गई है, जो ओटीटी प्लेटफॉर्म नेटफ्लिक्स पर लॉन्च कर दी गई है। इस डॉक्यूमेंट्री में हैरी और मेघन ने शाही महल को लेकर कई खुलासे किए थे और अपने पिता और भाई विलियम से मनमुटव के बारे में खुलकर बात की थी।

क्यों पूरी दुनिया की चिंता बढ़ा रही चीन की कोरोना लहर

बीजिंग । पिछले महीने प्रतिबंध हटाने के बाद से चीन में कोरोना के मामलों में भारी उछाल आया है। दुनिया के कई देश अब इस बात से चिंतित होने लगे हैं कि चीन कोरोना के सही आंकड़े पेश नहीं कर रहा है जिससे यह अंदाजा लगाना मुश्किल हो रहा है कि कोरोना के प्रसार की वास्तविक स्थिति क्या है यानी ड्रैगन की अपारदर्शिता लोगों के लिए खतरा बनकर सामने आ सकती है। बता दें कि भारी दबाव के बाद चीन ने सात दिसंबर को प्रतिबंधों को खोलना शुरू कर दिया जिसके बाद वहां 15 लोगों की मौत की सूचना सामने आई। इसके तुरंत बाद सरकार ने उन मानदंडों को संकुचित कर दिया जिनके द्वारा वायरस से होने वाली मौतों को दर्ज किया जाता है। चीन के स्वास्थ्य अधिकारियों ने पिछले हफ्ते स्वीकार किया था कि एकत्र किए गए डाटा का पैमाना अनिवार्य सामूहिक पीसीआर परीक्षण की तुलना में बहुत छोटा है। सीडीसी अधिकारी यिन वेनबु ने कहा कि अधिकारी अब अस्पतालों और स्थानीय सरकारी सर्वेक्षणों के साथ-साथ आपातकालीन कॉल वॉल्यूम और बुखार की दवा की बिक्री से डेटा संकलित कर रहे हैं। संयुक्त राज्य अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया और कनाडा सहित कई देशों ने पिछले सप्ताह कहा था कि वे संक्रमण डाटा पर पारदर्शिता की कमी के कारण चीन से आगमन पर परीक्षण प्रतिबंध लगा रहे हैं। बीजिंग ने स्वीकार किया है कि पिछले महीने अनिवार्य सामूहिक परीक्षण के अंत के बाद प्रकोप के पैमाने को ट्रैक करना असंभव गया है।

यूरोप में बुरा हाल, जनवरी में रिकॉर्ड तोड़ गर्मी, नए साल में दर्ज किए गए सबसे गर्म दिन

लंदन । इसे जलवायु परिवर्तन का असर मानें या यूक्रेन जंग की गर्मी कि समूचे यूरोप में कड़ाके की ठंड के दिनों में रिकॉर्डतोड़ गर्मी पड़ रही है। जनवरी के पहले दो दिन जबर्दस्त गर्म रहे। नए साल के पहले दो दिन सबसे गर्म दिन के रूप में दर्ज किए गए। यूरोप के कम से कम आठ देशों में ऐसे हालात देखे गए। मीडिया रिपोर्ट के अनुसार पोलैंड, डेनमार्क, चेक गणराज्य, नीदरलैंड, बेलारूस, लिथुआनिया और लातविया में जनवरी का अब तक का सबसे गर्म दिन दर्ज किया गया। यूरोप के मौसमविदों ने बताया कि पिछले कुछ दिनों में पूरे यूरोप में मौसम का रिकॉर्ड हैरान करने वाले ढंग से टूट रहा है।

तालिबान ने माना भारतीय फौज का लोहा

पाकिस्तान को दी धमकी, तस्वीर शेयर कर कहा- हमला हुआ तो 1971 जैसा अंजाम होगा

काबुल ।
पाकिस्तान के गृहमंत्री राणा सनाउल्लाह की धमकी के तुरंत बाद तालिबान ने पलटवार किया है। वरिष्ठ तालिबानी नेता व अफगानिस्तान के उप प्रधानमंत्री अहमद यासिर ने ट्विटर पर 1971 में भारतीय सेना के सामने पाकिस्तान के आत्मसमर्पण की एतिहासिक तस्वीर साझा करते हुए लिखा है कि पाकिस्तान ने उन पर सैन्य हमला किया तो उसे ऐसी ही शर्मनाक स्थिति का सामना करना पड़ेगा। उन्होंने पाक मंत्री को अंजाम भुगतने की भी धमकी दी।

दरअसल, बीते गुरुवार को पाक मंत्री राणा सनाउल्लाह ने तालिबान को धमकी दी थी। कहा था कि अगर तहरीक-ए-तालिबान पाकिस्तान ने उनके देश पर हमले नहीं रोके तो पाकिस्तानी फौज अफगानिस्तान में घुसकर टीटीपी आतंकियों के ठिकानों को खत्म करेगी। उन्होंने आरोप लगाया कि टीटीपी आतंकी पाकिस्तान में हमला करके अफगानिस्तान में छिप जाते हैं, जहां तालिबान सरकार उनका समर्थन करती है।

भूलिए मत...यह अफगानिस्तान है

तालिबान मंत्री ने ट्वीट किया, राणा सनाउल्लाह! बहुत बढ़िया! अफगानिस्तान...सीरिया, पाकिस्तान या तुर्किए नहीं है। यह अफगानिस्तान है। यहां बड़ी-बड़ी हुकूमतों की कब्रगाहें हैं। हम पर सैन्य हमले के बारे में मत सोचिए, अन्यथा भारत के साथ शर्मनाक सैन्य समझौते जैसी स्थिति होगी।

1971 की जंग के बाद पाकिस्तान के हो गए थे दो टुकड़े

अफगान नेता ने जो तस्वीर साझा कर पाकिस्तान को धमकी दी है, उस 1971 की भारत-पाक जंग के बाद पाकिस्तान के दो टुकड़े हो गए थे। इस जंग में पाकिस्तान को शर्मनाक स्थिति का सामना करना पड़ा था और पाक सेना के 90 हजार सैनिकों ने भारतीय फौज के सामने आत्मसमर्पण कर दिया था। इसी के बाद बांग्लादेश एक अलग मुल्क बना था। तस्वीर में पाकिस्तान की तरफ से लेफ्टिनेंट जनरल आमिर अब्दुल्लाह खान नियाजी ने दस्तखत किए थे। उनके दूसरी तरफ भारत के लेफ्टिनेंसट जनरल जगजीत सिंह अरोढ़ा मौजूद थे।

तालिबान विदेश मंत्रालय ने भी जारी किया बयान

पाक मंत्री के आरोप के बाद, तालिबान के विदेश मंत्रालय ने भी बयान जारी किया है। विदेश मंत्रालय ने कहा कि पाकिस्तान उस पर बेबुनियाद आरोप लगा रहा है। अफगानिस्तान, टीटीपी आतंकियों का पनाहगाह नहीं है। पाकिस्तान को इस मुगालते में नहीं रहना चाहिए कि हम कमजोर हैं। हमें अच्छे से पता है कि हमें अपनी हिफाजत कैसे करनी है।

जनरल बाजवा ने बैठक के दौरान इमरान खान को कहा था प्लेबॉय, पूर्व पाक पीएम का दावा

लाहौर । पाकिस्तान के पूर्व प्रधानमंत्री इमरान खान ने एक बार फिर पूर्व सेना प्रमुख जनरल कमर जावेद बाजवा पर हमला बोला है। सोमवार को लाहौर स्थित अपने आवास पर मीडिया से बातचीत में पाकिस्तान तहरीक-ए-इंसाफ (पीटीआई) पार्टी के अध्यक्ष खान ने कहा कि जनरल बाजवा ने पिछले साल अविश्वास प्रस्ताव के जरिए संवैधानिक पद से हटाने से पहले उनकी आखिरी बैठक के दौरान उन्हें प्लेबॉय कहा था। अपने कथित ऑडियो के बारे में बात करते हुए पीटीआई अध्यक्ष ने कहा कि हम अपने युवाओं को अश्लील ऑडियो और वीडियो के जरिए क्या संदेश दे रहे हैं। साथ ही उन्होंने अप्रत्यक्ष रूप से इस तरह के ऑडियो रिकॉर्ड करने के लिए पाक सेना को दोषी ठहराया। बता दें, क्रिकेट से राजनीति में आए इमरान खान के हाल ही में तीन कथित ऑडियो क्लिप लीक हुए हैं। पाकिस्तान के गृह मंत्री राणा सनाउल्लाह ने दावा किया था कि ये ऑडियो क्लिप असली हैं और खान के इस तरह के वीडियो क्लिप आने वाले दिनों में सामने आ सकते हैं। इमरान खान ने नए साल के पहले दिन देश की सेना और पूर्व शासकों पर हमले किए थे। उन्होंने आरोप लगाया था कि पूर्व सेनाध्यक्ष जनरल कमर जावेद बाजवा ने 'एस्टेब्लिशमेंट' में जो ढांचा बनाया, वही अभी भी काम कर रहा है। उन्होंने आरोप लगाया कि यह ढांचा देश में 'कानून का राज' नहीं चाहता है। इमरान यहीं तक नहीं रुके। उन्होंने पूर्व सैनिक तानाशाह जनरल परवेज मुशर्रफ को भी घेरे में लिया और इल्जाम लगाया कि जनरल मुशर्रफ ने 'आतंकवाद की बिक्री कर करोड़ो डॉलर कमाए'।

अमेरिका-भारत समेत कई देशों की कार्रवाई से बौखलाया चीन, यात्रियों पर दी प्रतिबंध लगाने की धमकी

बीजिंग ।
चीन ने पिछले महीने जीरो कोविड पॉलिसी से कदम वापस खींच लिए थे। इसके बाद ये यहां कोरोना के मामलों में एकाएक उछाल देखा गया। यहां लाखों की संख्या में कोरोना मरीज सामने आए, जिसने दुनिया के तमाम देशों की चिंता बढ़ा दी है। इसको देखते हुए कई देशों ने चीनी यात्रियों के लिए कई तरह के प्रतिबंध लागू किए हैं, जिससे चीनी प्रशासन बौखला गया है।

दरअसल, अमेरिका, कनाडा, फ्रांस, जापान, भारत उन देशों में शामिल हैं, जहां पर चीनी यात्रियों के लिए अनिवार्य कोरोना रिपोर्ट को लागू किया गया है। यहां चीन से आने वाले यात्रियों के पास कोरोना निगेटिव रिपोर्ट होना अनिवार्य है। इस कदम की चीन ने निंदा की है और जवाबी कार्रवाई करने की भी धमकी दे डाली है।

कोरोना पर चीन को किया जा रहा लक्षित

चीनी विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता ने माओ निंग ने कहा है कि कुछ देशों ने केवल चीनी यात्रियों को लक्षित कर प्रवेश संबंधी प्रतिबंध लागू किए हैं। उन्होंने कहा, इसमें वैज्ञानिक आधार का अभाव है और इस तरह के उपाय अस्वीकार्य हैं। उन्होंने कहा, चीन इस आधार पर जवाबी कार्रवाई कर सकता है।

चीन में भारी संक्रमण का अनुमान

पिछले महीने, कुछ स्थानीय और क्षेत्रीय अधिकारियों ने अनुमानित दैनिक संक्रमण को साझा करना शुरू किया था। क्योंकि, कोरोना के आंकड़े स्पष्ट नहीं थे। झेजियांग के तटीय प्रांत में स्वास्थ्य अधिकारियों का मानना था कि पिछले सप्ताह हर दिन दस लाख निवासी संक्रमित हो रहे थे। कहा कि कम से कम 30 प्रतिशत आबादी ने वायरस की चपेट में थी। किंगदाओ के पूर्वी तटीय शहर ने भी लगभग 500,000 नए दैनिक मामलों का अनुमान लगाया है और डोंगगुआन के दक्षिणी विनिर्माण केंद्र ने 300,000 तक का अनुमान लगाया है। द्वीप प्रांत हैनान के अधिकारियों ने शुक्रवार को अनुमान लगाया कि वहां संक्रमण दर 50 प्रतिशत को पार कर गई है। चीन ने दैनिक संक्रमण और मृत्यु के आंकड़े प्रकाशित करना बंद किया।

चीन ने तोड़े समझौते, पाक चला रहा आतंकी अड्डे, जयशंकर का दोनों पड़ोसियों पर निशाना

विएना ।
ऑस्ट्रिया यात्रा पर पहुंचे विदेश मंत्री एस. जयशंकर ने चीन व पाकिस्तान पर सीधा निशाना साधा है। दोनों देशों को कठघरे में खड़ा करते हुए उन्होंने कहा कि चीन ने समझौते तोड़े और एलएसी की स्थिति एक तरफा ढंग से बदलने की कोशिश की। इसी कारण चीन के साथ तनाव कायम है। वहीं, पाकिस्तान आतंकवाद का अड्डा बना हुआ है।

विदेश मंत्री जयशंकर ने विएना से चीन व पाकिस्तान को जमकर आड़े हाथों लिया। सधे शब्दों में उन्होंने दुनिया को बताया कि चीन ने किस तरह से वास्तविक नियंत्रण रेखा को बदलने का प्रयास किया। जयशंकर ने कहा कि यह सैटेलाइट युग है, इसमें सीमावर्ती क्षेत्रों की तस्वीरें साफ दिखती हैं। इनसे इनकार नहीं किया जा सकता। विदेश मंत्री ने कहा कि चीन के साथ हमारा समझौता है कि सीमावर्ती क्षेत्रों में बड़े पैमाने पर सेना तैनात नहीं करेंगे, लेकिन उसने इस समझौते का पालन नहीं किया। इस कारण दोनों देशों के बीच अभी तनावपूर्ण स्थिति है। इसी तरह दोनों देशों के बीच एलएसी को एकतरफा नहीं बदलने का समझौता है, इसके बाद भी उन्होंने ऐसा करने की कोशिश की। जयशंकर ने कहा कि हमने सैन्य दबाव झेला, इसका कोई औचित्य नहीं है। रेकॉर्ड बहुत स्पष्ट है, क्योंकि आज बहुत पारदर्शिता है। उनके पास उपग्रह की तस्वीरें हैं। यदि आप देखोगे तो पता चलेगा कि सीमावर्ती क्षेत्रों में पहले किसने सेना भेजी

पाकिस्तान में दिनदहाड़े चल रहे आतंकी शिविर - पाकिस्तान को लेकर जयशंकर ने कहा कि पाकिस्तान आतंकवादी भर्ती शिविर व अड्डे चला रहा है। ये सब वह दिनदहाड़े कर रहा है। ऐसे में यह कैसे माना जा सकता है कि एक संप्रभु देश, जो अपनी सरजमीं का नियंत्रण करता है, उसे इसकी जानकारी नहीं है इन अड्डों में आतंकियों को खासतौर को सेना और युद्ध की रणनीति का प्रशिक्षण दिया जा रहा है। विदेश मंत्री ने पाकिस्तान को कड़ी फटकार लगाते हुए कहा, मैं उसके आतंकवाद के केंद्र से ज्यादा कठोर शब्द इस्तेमाल कर सकता था, लेकिन हमारे साथ जो हो रहा है, उसे ध्यान में रखते हुए इसे एपिक सेंटर कहा।

अमेरिकी महिला ने तीन साल की बच्ची को धक्का देकर ट्रेन की पटरी पर गिराया, वीडियो में कैद हुई घटना

ओरेगॉन ।
अमेरिका के ओरेगॉन प्रांत से दिल दहलाने वाली खबर व वीडियो सामने आया है। एक रेलवे प्लेटफॉर्म पर खड़ी अनजान महिला ने तीन साल की मासूम बच्ची को ट्रेन की पटरी पर धक्का दे दिया। इस घटना का वीडियो अब सामने आया है। इसमें महिला मासूम बच्ची को पटरी पर धक्का देती नजर आ रही है। आरोपी महिला को गिरफ्तार कर लिया गया है।

अमेरिका में यह हृदय विदारक घटना 28 दिसंबर को हुई थी। इसकी वीडियो क्लिप मुल्तानोमाह काउंटी के डिस्ट्रिक्ट अटॉर्नी कार्यालय ने अपनी वेबसाइट पर पोस्ट की है। जिला अभियोजन कार्यालय के अनुसार 3 साल की लड़की अपनी मां के साथ प्लेटफॉर्म पर खड़ी होकर ट्रेन के आने का इंतजार कर रही थी, तभी एक अजनबी महिला उसे रेलवे ट्रैक पर धकिया देती है। आरोपी महिला की पहचान 32 साल की ब्रायना लेस वर्कमैन के रूप में हुई है।

मासूम बच्ची को रेलवे ट्रैक व पत्थरों की सिर व चेहरे पर गंभीर चोटें आई हैं। हालांकि वहां मौजूद अन्य लोग तुरंत हरकत में आए और ट्रेन आने से पहले उन्होंने बच्ची को पटरियों से उठा लिया, वरना बड़ी घटना हो जाती है।

बेघर है पीड़ित लड़की

अचानक हुए इस घटनाक्रम से वहां मौजूद लोगों में हड़कंप मच गया। एक यात्री ब्लेन डेनले ने एनबीसी 15 चैनल को बताया कि वह यह देखकर हैरान हो गए कि कैसे कोई किसी बच्ची को पटरी पर गिरा सकता है। पूरी घटना प्लेटफॉर्म पर लगे सीसीटीवी में कैद हो गई थी। जांच के बाद अभियोजन कार्यालय ने इसका वीडियो जारी किया है। घटना में गंभीर रूप से घायल बच्ची की पहचान पोर्टलैंड की बेघर लड़की के रूप में की है।

बिना जमानत चले मुकदमा

मुल्तानोमाह के अटॉर्नी कार्यालय के अनुसार आरोपी महिला को गिरफ्तार कर लिया गया है। उसके खिलाफ हमले के प्रयास, लोक परिवहन को बाधित करने, लापरवाही से किसी की जान को खतरे में डालने जैसे आरोपों में केस दायर किया गया है। कोर्ट से अनुरोध किया गया है कि उसके खिलाफ जमानत दिए बगैर मुकदमा चलाया जाए।

चांद पर कब्जा न जमा ले चीन ! रोक सकता है

अन्य देशों की लैंडिंग, नासा को सता रही है चिंता

वाशिंगटन ।
चांद की सतह पर इंसानी जिंदगी ढूंढने के लिए दुनिया के तमाम देशों के बीच दौड़ जारी है। हालांकि, अमेरिका और चीन इस दौड़ में सबसे आगे हैं। सही मायनों में देखा जाए तो चीन, अमेरिका से भी आगे निकलता दिख रहा है, जिसकी नासा को चिंता सता रही है। नासा को डर है कि कहीं चीन चंद्रमा पर अपना कब्जा न जमा ले और वहां मौजूद संसाधनों पर अपना दावा ठोककर अन्य देशों की लैंडिंग तक को रोक दे। नासा के प्रमुख बिल नेल्सन ने इसको लेकर चेतावनी जारी की है। उन्होंने कहा है कि अमेरिका और चीन के साथ एक अंतरिक्ष दौड़ में शामिल हैं और देश को देखने की जरूरत है कि उसका प्रतिद्वंद्वी चांद पर पैर जमाने की कोशिश न करे। नेल्सन ने कहा कि चीन अंतत: चंद्रमा के संसाधनों व समृद्ध क्षेत्रों पर स्वामित्व का दावा कर सकता है।

अगले दो साल तय करेंगे कौन कहां

नासा प्रमुख नेल्सन ने कहा, अमेरिका और चीन के बीच प्रतिस्पर्धा तेज हो रही है और अगले दो साल यह निर्धारित कर सकते हैं कि कौन सा देश इस दिशा में लाभ प्राप्त करता है। उन्होंने कहा, यह एक तथ्य है कि हम एक अंतरिक्ष दौड़ में हैं और यह सच है कि हमें बेहतर ढंग से देखने की जरूरत है कि चीन वैज्ञानिक अनुसंधान की आड़ में चंद्रमा पर कब्जा न जमा ले। और इस संभावना से भी इनकार नहीं किया जा सकता कि चीन कह दे कि यह हमारा क्षेत्र है, यहां से बाहर रहो।

चीन ने स्पैटली द्वीपों के साथ क्या किया

नेल्सन ने दक्षिण चीन सागर में चीनी आक्रामकता का हवाला देते हुए कहा कि अगर किसी को संदेह है कि चीन ऐसा नहीं करेगा, तो इस बात पर गौर किया जाना चाहिए कि उसने स्प्रैटली द्वापों के साथ क्या किया उन्होंने कहा, बीजिंग ने अपनी क्षेत्रीय महत्वाकांक्षा के तहत वहां सैन्य ठिकाने स्थापित किए हैं।

चीन ने खारिज किया दावा

उधर, वाशिंगटन में चीनी दूतावास के प्रवक्ता लियू पेंग्यू ने कहा कि अमेरिका के दावे झूठे हैं। उन्होंने कहा, कुछ चीनी अधिकारियों ने चीन के सामान्य और वैध अंतरिक्ष प्रयासों को गलत तरीके से पेश किया है। यह गैर-जिम्मेदाराना है। चीन हमेशा बाहरी अंतरिक्ष के शांतिपूर्ण उपयोग की वकालत करता है, बाहरी अंतरिक्ष में शस्त्रीकरण और हथियारों की दौड़ का विरोध करता है। उन्होंने कहा, चीन अंतरिक्ष क्षेत्र में मानव जाति के लिए एक साझा भविष्य की दिशा में सक्रिय रूप से काम कर रहा है।

नशीले पदार्थों की तस्करी में शामिल लोगों की संपत्ति जब्त करेगी पंजाब सरकार

मुख्यमंत्री ने गांवों को नशा मुक्त बनाने के लिए ग्रामीणों से प्रस्ताव पारित करने की अपील की

चंडीगढ़ (हिंस)। पंजाब के मुख्यमंत्री भगवंत मान ने अधिकारियों को नशा तस्करी में शामिल तस्करों की संपत्ति कुर्क करने के आदेश दिए हैं। मुख्यमंत्री ने गांवों को नशा मुक्त बनाने के लिए ग्रामीणों से सर्वसम्मति बनाने का प्रयास करने की अपील भी की। मंगलवार को मुख्यमंत्री मान राज्य में अमन-कानून की व्यवस्था की समीक्षा करने के लिए आयोजित बैठक की अध्यक्षता कर रहे थे। बैठक में मुख्यमंत्री मान ने नशे की बीमारी को जड़ से उखाड़ने के लिए राज्य सरकार की दृढ़ वचनबद्धता दोहराई। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार ने नशीले पदार्थों की तस्करी में शामिल बड़ी मछली को पहले ही जेल की सलाखों के पीछे पहुंचा दिया है। मुख्यमंत्री ने नशीले पदार्थों की तस्करों में शामिल लोगों के खिलाफ सख्त

कार्रवाई करते हुए उनकी संपत्ति जायदाद जब्त करने के निर्देश दिए हैं। मुख्यमंत्री ने कहा कि यदि इसके लिए कानून में अपेक्षित संशोधन करने की जरूरत हुई तो तुरंत किया जाएगा। मुख्यमंत्री ने यह भी स्पष्ट किया कि यदि किसी पुलिस अधिकारी के अधिकार क्षेत्र में नशा की बिक्री का मामला सामने आया तो इस कोताही के लिए वह अधिकारी भी जवाबदेह होगा। भगवंत मान ने कहा कि नशीले पदार्थों की तस्करी में शामिल अधिकारियों के खिलाफ भी सख्त से सख्त कार्रवाई की जाएगी। मुख्यमंत्री ने अधिकारियों को कहा कि गांव वासियों की तरफ से अपने-अपने गांवों को नशा मुक्त बनाने के लिए सर्वसम्मति से प्रस्ताव पास करने को यकीनी बनाया जाए। मुख्यमंत्री मान ने कहा कि ऐसे प्रस्ताव पास करने वाले गांवों को ग्रामीण विकास फंड के अंतर्गत दी जाने वाले अनुदान और अन्य लाभ देने में प्राथमिकता और सुरक्षा प्रदान की जाएगी।

आईना दिखाने वाली एजेंसी को निशाना बना रही है सरकार : पूर्व सीएम हुड्डा

रोहतक (हिंस)। पूर्व मुख्यमंत्री भूपेंद्र सिंह हुड्डा ने कहा कि गठबंधन सरकार सच्चाई देखने के ब जाए आंकड़े पेश करने वाली एजेंसी को निशाना बना रही है। यह वही सीएमआईई है, जिसके आंकड़ों का हवाला देकर जेजेपी 2019 से पहले बीजेपी सरकार को घेरती थी। यह वही सीएमआईई है जिसकी रिपोर्ट को दिखाकर गुजरात और यूपी सरकार वाहवाही लूटती है। जो एजेंसी बीजेपी शासित अन्य राज्य के लिए सही है तो वह हरियाणा में आकर गलत कैसे हो जाती है। पूर्व सीएम मंगलवार को अपने आवास पर पत्रकारों से बातचीत कर रहे थे। भूपेंद्र सिंह हुड्डा ने कहा कि खेल मंत्री को अपने पद से इस्तीफा देना चाहिए। साथ ही इस मामले की निष्पक्षता से जांच होनी चाहिए।

अब सरपंच बोले, माफी मांगे मंत्री नहीं तो करेंगे मंत्री और सीएम के कार्यक्रम का विरोध

फतेहाबाद (हिंस)। गांव नाढ़ोडी में आयोजित कार्यक्रम में विकास एवं पंचायत मंत्री देवेंद्र बबली द्वारा गांव के मौजूदा सरपंच को खुले मंच से चेतावनी देने का मामला तूल पकड़ने लगा है। पंचायत मंत्री के बयान की वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल होने के बाद गांव के सरपंच नरेंद्र मंगलवार शाम को अन्य सरपंचों के साथ उपायुक्त से मिलने फतेहाबाद पहुंचे और पंचायत मंत्री पर उन्हें अपमानित करने के आरोप लगाते हुए माफी की मांग की। सरपंच नरेंद्र ने कहा कि जब तक मंत्री गांव में आकर माफी नहीं मांगते तब तक वे उनका विरोध जारी रखेंगे। साथ ही सरपंच ने चेतावनी दी कि 23 जनवरी को मंत्री द्वारा करवाए जा रहे मधुर मिलन समारोह का भी वे विरोध करेंगे। उनके साथ गांव ढांड के सरपंच चंद्रमोहन पोटलिया, किरढान से राजेश भिंचर, खासा पठाना के सरपंच मांगे राम भी मौजूद रहे। डीसी मिलने पहुंचे सरपंच नरेंद्र ने कहा कि उनके परिचित बीकानेर एडमिट हैं, जिसका पता लेने वे वहां गए हुए थे। मंत्री के भाई ने उन्हें फोन कर बताया कि बाबा रामदेव मंदिर के सामने कार्यक्रम होगा, लेकिन बाद में कार्यक्रम वहां कैंसिल कर गांव के पूर्व

सरपंच रविंद्र के निवास पर रख दिया। रविंद्र धारनिया उनका राजनीतिक विरोधी है और चुनाव में उसकी पूरी खिलाफत की गई थी, इसलिए वे उसके निवास पर आयोजित कार्यक्रम में कैसे जा सकते थे। उन्होंने कहा कि कार्यक्रम में मंत्री ने उन पर द्वेष भावना रखने के आरोप लगाए और उन्हें राईट टू रिकॉल के तहत हटाने की बात कही है। वे द्वेष भावना नहीं रखते लेकिन उन्होंने मंत्री द्वारा समर्थित कैंडिडेट को एक वोट से हरा दिया था इसलिए उनसे द्वेष भावना रखते हुए भेदभाव किया जा रहा है। उन्हें दबाने का प्रयास किया जा रहा है। उन्होंने अभी तक गांव में एक ईंट तक नहीं लगाई, जबकि उनके ऊपर भ्रष्टाचार के आरोप लगाए जा रहे हैं।

सम्मेद शिखर की अधिसूचना के खिलाफ आमरण अनशन पर बैठे मुनि ने त्यागे प्राण

जयपुर (हिंस)। झारखंड में जैन तीर्थ सम्मेद शिखर को पर्यटन स्थल बनाने की अधिसूचना का विरोध कर रहे जैन मुनि सुज्ञेयसागर महाराज ने मंगलवार को प्राण त्याग दिए। वे 72 साल के थे। मुनि झारखंड सरकार के फैसले के खिलाफ पिछले 10 दिन से सांगानेर में आमरण अनशन कर रहे थे। मंगलवार सुबह उनकी डोल यात्रा सांगानेर संघी मंदिर से निकाली गई। इस दौरान आचार्य सुनील सागर सहित बड़ी संख्या में जैन समाज के लोग मौजूद रहे। जैन मुनि को जयपुर के सांगानेर में समाधि दी गई। झारखंड सरकार ने गिरिडीह जिले में स्थित पारसनाथ पहाड़ी को पर्यटन स्थल बनाने की अधिसूचना जारी की है। इसके खिलाफ देशभर में जैन समाज के लोग प्रदर्शन कर रहे हैं। पारसनाथ पहाड़ी दुनिया भर के जैन धर्मावलंबियों में सर्वोच्च तीर्थ सम्मेद शिखर के तौर पर प्रसिद्ध है। सुज्ञेयसागर महाराज अधिसूचना के खिलाफ 25 दिसंबर से आमरण अनशन पर थे। अखिल भारतीय जैन बैंकर्स फोरम के अध्यक्ष भागचन्द्र जैन ने बताया कि मुनि ने सम्मेद शिखर को बचाने के लिए बलिदान दिया है। वे उससे जुड़े हुए थे। जैन मुनि महाराज सुनील सागर ने कहा कि पवित्र तीर्थ सम्मेद शिखर हमारे लिए शान है, आज 6 बजे मुनि सुज्ञेय सागर महाराज का समाधि मरण हो गया। जब उन्हें मालूम पड़ा कि सम्मेद शिखर को पर्यटन स्थल घोषित किया गया है, तो वे इसके विरोध में लगातार उपवास पर थे। राजस्थान की इस भूमि पर धर्म के लिए अपना समर्पण किया है।

आबकारी विभाग ने तीन सौ पेटी शराब बरामद, एक गिरफ्तार

चंडीगढ़ (हिंस)। पंजाब के आबकारी विभाग ने बड़ी कार्रवाई करते हुए करीब सात लाख रुपए की भारत में बनी विदेशी शराब की तीन सौ पेटियां जब्त की हैं। इस शराब को तस्करी करके चंडीगढ़ से पंजाब लाया गया था। पुलिस ने एक व्यक्ति को भी हिरासत में लिया है। मंगलवार को आबकारी विभाग के प्रवक्ता ने बताया कि आबकारी पुलिस ने एक सूचना पर कार्रवाई करते हुए सोमवार की रात फतेहगढ़ साहिब जिले के माधोपुर के नजदीक एक कैंटर को रोक कर तलाशी ली। इस दौरान कैंटर से विदेश शराब आईएमएफएल की तीन सौ पेटियां बरामद हुई। इन बोतलों पर *सिर्फ चंडीगढ़ में बिक्री के लिए* लिखा था और इन पेटियों में तीन अलग-अलग ब्रांडों की शराब थी। इन ब्रांडों में *999* ब्रांड की बोतल एम्पायर अलकोबरेव, प्लाट नं. 58 इंडस्ट्रियल एरिया चंडीगढ़ और *नैना* ब्रांड की बोतलें रॉक एंड स्टॉर्म बोटलिंग प्लांट, प्लाट नं. 214, इंडस्ट्रियल एरिया चंडीगढ़ की थीं। प्रवक्ता ने बताया कि इस संबंध में एक व्यक्ति को मौके पर गिरफ्तार किया गया है। प्रवक्ता ने बताया कि पंजाब के वित्त, आबकारी और कराधान मंत्री एडवोकेट हरपाल सिंह चीमा ने इस मामले की गहराई से जांच करने के निर्देश विभाग को दिए हैं।

रिटायर्ड पेंशनर्स व वरिष्ठ नागरिक संयुक्त रूप से चलाएंगे आंदोलन

हिसार (हिंस)। रिटायर्ड पेंशनर्स व वरिष्ठ नागरिकों ने मंगलवार को हिसार में बैठक करके संयुक्त रूप से आंदोलन चलाने का ऐलान किया है। इस संबंध में बैठक आजाद नगर पार्क में हुई जिसमें मास्टरज एथलेटिक प्रतियोगिता में 82 वर्ष के अमर सिंह श्योराण द्वारा गोल्ड मैडल जीतने पर उनको पगड़ी पहनाकर सम्मानित किया गया। इस मौके पर रणधीर सिंह बामल का जन्मदिन भी मनाया गया और उन्हें उपहार स्वरुप पगड़ी भेंट की गई। वरिष्ठ नेता एमएल सहगल ने अपने विचार रखते हुए सभी सदस्यों से नये वर्ष में संघर्ष तेज करने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि यह सरकार जनहित के फैसले न लेकर सभी मध्यम वर्ग के लोगों को परेशान कर रही है, इसलिए वर्ष 2023 में सरकार के विरुद्ध बड़ा जन

आंदोलन चलाना होगा। उदयवीर दुहन ने सभी पेंशनर्ज व वरिष्ठ सदस्यों को अपने अधिकारों के लिए लड़ने के लिए प्रेरित किया तथा आने वाली 24 फरवरी को सभी वरिष्ठ पेंशनर्ज द्वारा जिला स्तर पर धरना दिया जाएगा तथा उपायुक्त को ज्ञापन भी देंगे। अन्य वक्ताओं ने भी इस धरने में बढ़ चढ़ कर भाग लेने का आह्वान किया। बैठक में राजेंद्र नैन, भरत सिंह पूनिया, राजबीर सिंधु, राजपाल नैन, वेदप्रकाश शर्मा, लीलूराम, सुरेश गिरधर, महेंद्र चोपड़ा, शीशराम ओला, रामप्रकाश शर्मा, इन्द्र सिंह, दिलबाग नैन, पूर्णमल बिश्नोई, किरणदत्त, रामकुमार दुहन, चतर सिंह सुंडा, रामकुमार सिहाग, बलवान सहारण, राजेंद्र झाझडिया, धर्मपाल पूनिया, सतपाल लोरा, धर्मपाल चहल, राजेंद्र पचार, रामेश्वर, नंदकिशोर चावला, रुपसिंह बोस, हरज्ञान ख्यालिया, सत्यवीर बूरा, अमरजीत मलिक, नेहरा एडवोकेट, विजय जागलान, रामदास नापा, बिहारीलाल शर्मा, सतबीर गढ़वाल, दलजीत बामल, सुभाष सैनी, दिलबाग पनिहार, सतनारायण, रामकुमार शर्मा, देसराज, हवासिंह आदि सदस्यों ने भाग लिया।

सांसद दीया ने कुंभलगढ़ को टाइगर रिजर्व घोषित करने की मांग को फिर मजबूती से रखा

राजसमंद (हिंस)। राजसमंद सांसद दीया कुमारी ने बांदीपुर टाइगर रिजर्व में 22वीं एनटीसीए की बैठक में भाग लिया। बैठक की अध्यक्षता केंद्रीय मंत्री भूपेंद्र यादव ने की। बैठक के दौरान सांसद दीया कुमारी ने कुंभलगढ़ को टाइगर रिजर्व घोषित करने की मांग को एक बार फिर से प्रामाणिकता और मजबूती के साथ रखा। इस पर एनटीसीए के अधिकारियों एवं केंद्रीय मंत्री यादव ने अवगत कराया कि एनटीसीए के द्वारा दो बार राज्य सरकार को पत्र लिखने के बावजूद राज्य सरकार इसका प्रस्ताव केंद्र सरकार को नहीं भेज रही है। यह प्रस्ताव पिछले 2 सालों से राज्य सरकार के द्वारा लटकाया जा रहा है जबकि एनटीसीए

की विशेषज्ञ कमेटी ने 2 वर्ष पूर्व ही अपनी रिपोर्ट दे दी थी। रिपोर्ट में कुंभलगढ़ को टाइगर रिजर्व के लिए उपयुक्त माना गया था, लेकिन न जाने क्यों राज्य सरकार हर बार इस प्रस्ताव को ठंडे बस्ते में डाल देती है। राजसमंद में पर्यटन के विकास में राज्य सरकार रोड़ा बन रही है। सांसद दीया ने कुंभलगढ़ को टाइगर रिजर्व की मांग के साथ कहा कि टाइगर मूवमेंट के लिए टाइगर कॉरिडोर विकसित किया जाए तथा इनब्रीडिंग की समस्या से बचने के लिए टाइगर रिलोकेशन एक राज्य से दूसरे राज्य में हो।

अंतराष्ट्रीय ऊंट उत्सव 13 जनवरी से

बीकानेर (हिंस)। अंतराष्ट्रीय ऊंट उत्सव का आयोजन 13 से 15 जनवरी तक होगा। उत्सव का मुख्य आकर्षण बीकानेर कॉर्निवल होगा। इसमें बीकानेर की वास्तुकला, वाद्य यंत्र और वेश-भूषा आधारित झांकी होगी। वहीं विंटेज कार, बीएसएफ के ऊंटों का दस्ता, इन्फील्ड सवार बाईकर्स, स्कूली और कॉलेज विद्यार्थी, बीकानेर की उस्ता, मिनिएचर तथा मथेरण कला की झांकियां, सेना और बीएसएफ के बैंड तथा सजे-धजे ऊंटों पर बैठे देशी-विदेशी पर्यटक आकर्षण के मुख्य केंद्र होंगे। उत्सव की तैयारियों को लेकर पर्यटन विभाग के उपनिदेशक अनिल राठौड़ सहित अनेक पर्यटन अधिकारियों ने रायसर के धोरों का अवलोकन किया।

अजमेर में देवनारायण मंदिर की दीवार तोड़ने से गुर्जरों में रोष, गरमाई राजनीति

अजमेर (हिंस)। राजस्थान के अजमेर जिला मुख्यालय पर गौरवपथ स्थित भगवान देवनारायण के मंदिर की दीवार को तोड़ने के मामले ने मंगलवार को गुर्जरों में रोष व्याप्त हो गया, साथ ही सामाजिक और राजनीतिक सरगर्मी बढ़ गई। प्रशासन ने यह कार्रवाई रात के अंधेरे में की, मगर यह समाचार आग की तरह पूरे जिले में फैल गया और रात से ही जिले भर से गुर्जर समाज के लोगों का मंदिर के बाहर पहुंचना शुरू हो गया जो सुबह होते होते मेले के रूप में तब्दील हो गया। इसको लेकर न केवल गुर्जर समाज ने बल्कि भाजपा ने भी जबरदस्त विरोध किया है। भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष सतीश पूनिया ने ट्वीट कर गहलोत सरकार से पूछा है आखिर कितनी बार आस्था पर हमला होगा? कितनी बार हिंदुओं के मंदिरों को तोड़ा जाएगा? पूनिया ने अपने ट्वीट में गहलोत सरकार को कहा कि यदि तुरंत भगवान देवनारायण के मंदिर को पहुंची क्षति का समाधान नहीं हुआ तो सरकार को बहुत भारी पड़ेगा। दूसरी तरफ गुर्जर समाज में इसको लेकर जबरदस्त रोष है समाज के अग्रणी नेताओं के सानिध्य में गुर्जर समाज की महापंचायत हुई जिसके तुरंत बाद अजमेर में जाम लगा दिया गया। समाज के लोगों ने मुख्य रोड को जाम कर दिया। मौके पर पुलिस का अतिरिक्त जाब्ता मौजूद रहा। लोगों को ऑफिस से घर और घर से ऑफिस जाने में भारी परेशानियों को सामना करना पड़ा। समाज से जुड़े जनप्रतिनिधि, पंच-पटेल देवनारायण मंदिर की दीवार की पुनर्निर्माण और अधिकारियों पर कार्रवाई की मांग को लेकर अडिग रहे। जिसे बाद में गुर्जर समाज के लोगों के गुस्से के आगे प्रशासन ने मान लिया। प्रशासन और गुर्जर नेताओं के बीच वार्ता होने पर प्रशासन सहमति जताई की दीवार का निर्माण फिर से करा दिया जाएगा। दोषियों के खिलाफ भी जांच होगी। प्रदर्शन करने व प्रशासन से वार्ता में कांग्रेस व भाजपा सहित समाज के नेता पुजारी व महंत शामिल थे।

अनुसूचित जाति आयोग के पदाधिकारियों का शपथ ग्रहण समारोह संपन्न

चंडीगढ़ (हिंस)। हरियाणा के सहकारिता मंत्री डॉ. बनवारी लाल की अध्यक्षता में मंगलवार को चंडीगढ़ में अनुसूचित जाति आयोग के पदाधिकारियों का पद ग्रहण समारोह आयोजित किया गया। इसमें आयोग चेयरमैन के रूप में पूर्व विधायक रविंद्र बलियाला, वाइस-चेयरमैन बिजेंद्र बडुन्जर तथा रवि तारांवाली, मीना नरवाल एवं रतन लाल बामनियां ने बतौर सदस्य पद की शपथ ग्रहण की। इस मौके पर सहकारिता मंत्री लाल ने कहा कि सरकार ने आयोग के पदाधिकारियों को समाज हितों के लिए जो जिम्मेदारी व दायित्व सौंपा है, उसे बखूबी निभाएंगे। इसके गठन से अनुसूचित जाति के पीड़ित लोगों की समस्याओं का समाधान सुनिश्चित होगा। राज्य में काफी समय से अनुसूचित जाति आयोग का गठन करने की मांग उठाई जा रही थी। सरकार ने आयोग का गठन कर समाज के लोगों की लंबित मांग पूरी की है। इससे समाज के लोगों में खुशी है और इससे सामाजिक सुरक्षा व न्याय पक्ष और मजबूत होगा। उन्होंने आयोग का गठन करने पर मुख्यमंत्री मनोहर लाल का आभार जताया। सहकारिता मंत्री ने कहा कि आयोग अनुसूचित जाति के लोगों की हर प्रकार के समस्याओं एवं मामलों की सुनवाई करेगा और उनका समाधान भी सुनिश्चित करेगा। सरकार ने राज्य के गरीब लोगों का जीवन-स्तर ऊंचा उठाने के लिए *मुख्यमंत्री अंत्योदय परिवार उत्थान योजना* शुरू की है। इस योजना को पीपीपी पोर्टल से जोड़ा गया है। इसके तहत अत्यंत गरीब परिवारों की पहचान करके उनकी वार्षिक आय बढ़ाकर कम से कम 1.80 लाख रुपए करने का लक्ष्य निर्धारित किया है ताकि ऐसे परिवारों का सामाजिक एवं आर्थिक उत्थान हो सके। बनवारी लाल ने कहा कि सरकार ने राज्य में तीन चरणों में 822 अंत्योदय मेले लगाए गए। इनमें 1 लाख 55 हजार 366 युवाओं ने भाग लिया। इनमें से 25 हजार 349 लोगों को स्वरोजगार के लिए बैंकों के माध्यम से ऋण मंजूर करवाए गए। इसके साथ ही युवाओं निजी क्षेत्र में नौकरियां व कौशल विकास की योजनाओं से भी जोड़ा गया है। उन्होंने कहा कि सरकार ने अपने 8 साल के कार्यकाल में युवाओं को नौकरियां देने के अलावा स्वरोजगार से भी जोड़ कर आत्मनिर्भर एवं स्वाललंबी बनाने का कार्य किया है। इस मौके पर आयुक्त पंकज अग्रवाल, निदेशक मनीराम शर्मा सहित कई अधिकारी एवं पदाधिकारी मौजूद रहे।

बीएसएफ ने पाकिस्तान के घुसपैठिया को मार गिराया

अमृतसर (हिंस)। सीमा सुरक्षा बल (बीएसएफ) ने अमृतसर में भारत-पाकिस्तान सीमा पर पाकिस्तान से भारत में घुसपैठ करने वाले एक व्यक्ति को मार गिराया। घुसपैठिए के पास एक इंपोर्टेड पंप गन बरामद हुई। इस साल घुसपैठ की यह पहली कोशिश है, जिसे बीएसएफ ने विफल कर दिया। घुसपैठ की यह घटना अमृतसर सेक्टर के बीओपी चन्ना में हुई है। बीएसएफ की 73 बटालियन के जवान सीमा पर गश्त कर रहे थे। इसी बीच घने कोहरे में उन्हें किसी के आने का आभास हुआ। यह घुसपैठिया भारतीय सीमा से 500 मीटर अंदर बने सुरक्षा घेरे तक पहुंच गया था। बीएसएफ जवानों के शोर मचाने पर घुसपैठिए ने छिपने की कोशिश की। इसलिए जवानों को फायरिंग करनी पड़ी। मारे गए घुसपैठिए के पास से एक पंप गन बरामद हुई है।

हरियाणा सरकार ने ग्रुप सी व डी के खाली पदों का मांगा ब्यौरा

चंडीगढ़ (हिंस)। हरियाणा सरकार ने सीईटी के माध्यम से ग्रुप-सी और डी के पदों को भरने का फैसला किया है। इसके लिए विभागों से रिक्त पदों का ब्यौरा मांगा गया है। सरकारी प्रवक्ता ने मंगलवार को बताया कि राज्य सरकार ने सभी विभागों, बोर्डों, निगमों और विश्वविद्यालयों को निर्देश दिए हैं कि वह 7 जनवरी तक ग्रुप-डी पदों की अपनी नई व लंबित मांग हरियाणा कर्मचारी चयन आयोग (एचएसएससी) को भेज दें।

आरोप लगने से कोई दोषी नहीं बन जाता : मुख्यमंत्री

चंडीगढ़ (हिंस)। हरियाणा के मंत्री संदीप सिंह पर लगे छेड़छाड़ के आरोपों के बाद मुख्यमंत्री मनोहर लाल ने मंगलवार को इस मुद्दे पर चुप्पी तोड़ी। मुख्यमंत्री ने साफ किया कि आरोप लगने से कोई दोषी नहीं हो जाता। जांच रिपोर्ट आने के बाद ही इस मामले में कार्रवाई की जाएगी। मुख्यमंत्री ने मंगलवार को पत्रकारों से कहा कि एक महिला खिलाड़ी द्वारा संदीप सिंह पर छेड़छाड़ और यौन उत्पीड़न के आरोप लगाए गए हैं। आरोप लगाने से किसी को भी दोषी नहीं माना जा सकता है। इस मामले में चंडीगढ़ पुलिस केस दर्ज कर चुकी है। हरियाणा पुलिस की एक टीम तथ्यों का पता लगा रही है। संदीप सिंह के पास अब खेल विभाग नहीं है। मुख्यमंत्री ने कहा कि इस मामले की हर पहलू से जांच करवाई जा रही है। जांच रिपोर्ट आने के बाद ही इस मामले में कार्रवाई की जाएगी। मुख्यमंत्री ने कहा कि विपक्ष इस मामले में सिर्फ बयानबाजी के बल पर जनता को गुमराह कर रहा है। कानून अपना काम कर रहा है। संदीप सिंह या सरकार का इसमें किसी तरह का हस्तक्षेप नहीं है।

जम्मू : माता रानी बाबा दरबार में प्रसाद वितरण कार्यक्रम

जम्मू। शिव सेना हिंदुस्तान पार्टी यूथ प्रदेश अध्यक्ष गणेश चौधरी आज हमने माता रानी बाबा दरबार में प्रसाद हलवे का प्रसाद लगाया है। गणेश चौधरी ने दुर्गा मां से दुआ की कि पूरे जम्मू-कश्मीर में कृपा बनी रहे। दुर्गा मां का पूरे जम्मू-कश्मीरवासियों पर आशीर्वाद बना रहे और हमारे युवा नशे से दूर रहे और पढ़ाई में ध्यान दे, अपने माता-पिता की सेवा करें और देश का नाम रोशन करें। दुर्गा मां कृपा शिव सेना हिंदुस्तान पार्टी पर बनी रहे। दुर्गा मां सभी शिव सैनिकों पर अपना आशीर्वाद बनाए रखें और जनता से अपील की कि शिव सेना हिंदुस्तान पार्टी के साथ जुड़े सभी शिव सैनिक मौजूद थे।

चूरू-फतेहपुर और माउंट आबू में पारा माइनस में

जयपुर (हिंस)। राजस्थान में मौसम साफ होते ही कड़ाके की सर्दी का दौर शुरू हो गया है। जमाव बिन्दू के पास पारा होने के कारण ठिठुरन बढ़ती जा रही है। जयपुर समेत पूरा उत्तरी-पूर्वी राजस्थान आज घने कोहरे की चपेट में रहा। जयपुर में कोहरे के कारण विजिबिलिटी 50 मीटर से भी कम रही। सर्द हवा के कारण फतेहपुर, माउंट आबू, चूरू में तेज सर्दी से खुले इलाकों में बर्फ जम गई। चूरू में सीजन की सबसे सर्द रात रही, जहां पहली बार पारा माइनस में रहा। कोहरे का सबसे ज्यादा असर जयपुर, अलवर, दौसा, भरतपुर के अलावा श्रीगंगानगर, हनुमानगढ़, झुंझुनूं में रहा। एक साथ तीन शहरों चूरू, फतेहपुर और माउंट आबू में पारा माइनस में पहुंचा। मौसम केंद्र जयपुर ने आगामी 3 दिन के लिए तेज कड़ाके की सर्दी की चेतावनी जारी करते हुए जयपुर, भरतपुर और बीकानेर संभाग के जिलों के लिए ऑरेंज अलर्ट जारी किया है। यहां 4 जनवरी तक घना कोहरा पड़ने, जबकि 6 जनवरी तक तेज कोल्ड-वेव (शीत लहर) चलने और फसलों में पाला पड़ने की आशंका जताई गई है। मौसम केंद्र जयपुर ने कई जिलों में शीतलहर का अलर्ट जारी किया है। शीतलहर का दौर अगले 4-5 दिन तक जारी रहेगा। कुछ स्थानों पर पाला पड़ सकता है। माउंट आबू की वादियों में सोमवार को इस सीजन की सबसे सर्द रात रही। माउंट में इस सीजन में पहली बार न्यूनतम तापमान माइनस 1.5 डिग्री पर पहुंच गया। कड़ाके की सर्दी से जनजीवन प्रभावित रहा। जयपुर में दिन के तापमान में हल्की गिरावट हुई। मौसम केंद्र जयपुर के अलर्ट के अनुसार छह जनवरी तक प्रदेश के कई जिले शीतलहर और घने कोहरे के आगोश में रहेंगे। जयपुर, अलवर के ग्रामीण इलाकों में तो कोहरे के कारण विजिबिलिटी 10 मीटर तक ही रही। कोहरे के कारण जयपुर से दिल्ली, सीकर, टोंक, आगरा और अजमेर बाइपास पर गाड़ियों की आवाजाही भी प्रभावित रही। जयपुर एयरपोर्ट पर भी सुबह कोहरे के कारण विजिबिलिटी 50 मीटर ही रही, जिसके कारण फ्लाइट्स भी प्रभावित हुई। चूरू में इस सीजन में पहली बार पारा माइनस में गया है। आज यहां न्यूनतम तापमान -0.9 डिग्री सेल्सियस दर्ज हुआ। इससे एक दिन पहले चूरू में तापमान 1.6 डिग्री सेल्सियस था। यही स्थिति सीकर के फतेहपुर में आज पारा माइनस में रहा, जिसके चलते यहां खेतों में बर्फ जम गई। कार-गा?यों की सीटों पर ओंस की बूंदे बर्फ में तब्दील हो गई। यही स्थिति हिल स्टेशन माउंट आबू में रही। यहां भी आज दूसरे दिन पारा जमाव बिंदु से नीचे दर्ज हुआ।

EXPRESSION OF INTEREST

The District Administration of Kamrup Metropolitan District wishes to build Astrospace Centres (Astronomy Laboratory) in mining affected area under Kamalajari and Helagog Higher Secondary Schools from DMFT fund of Kamrup Metropolitan Distict.

Therefore, Expression of Interest is invited from the willing firms/institutions that have requisite experience in this field along with Plan & Estimate/budget proposal. The Quotations affixing court fee stamp of Rs.8.25 (Rupees eight and twenty five paise) only in sealed cover will be received by the undersigned up to **3.00 PM** on **20/01/2023** during the office hours.

The undersigned reserves the right to accept or reject any or all the quotations without assigning any reasons thereof. The undersigned is also not bound to accept at the lowest rate, if the rates so quoted are found to be of very inferior quality.

TERMS AND CONDITIONS

1. The company or person must have established more than 100 Astronomy Labs.
2. Must have experience of working with Government sector.
3. The rate should be quoted including all taxes as per PWD norms.
4. Procurement of construction materials should be strictly from GST registered firm/shop only.
5. Registration Certificate of firm.
6. Copy of PAN Card should be furnished.
7. A minimum of 4 years Experience, specifically in setting up astronomy laboratory is compulsory.
8. The firm/institution/person shall be responsible for observance of all standing financial and other rules and procedure, provisions of AFRBM Act, 2005 and extant guidelines and shall be accountable to the District Authority and subject to Audit by AG.
9. For any dispute, the jurisdiction of the court should be within Kamrup (M) District.

The quotations will be opened on 25/01/2023 at 3PM item wise details may be obtained from tne office of the undersigned.

Deputy Commissioner
Kamrup Metropolitan District.

-- Janasanyog /C/17525/22

एचडीएफसी बैंक ने माइक्रोसॉफ्ट से की साझेदारी, डिजिटल सेवाओं को आधुनिक व सुरक्षित बनाने के लिए हुआ करार

नई दिल्ली ।
एचडीएफसी बैंक भारत में निजी क्षेत्र का सबसे बड़ा बैंक है। बैंक ने अपनी डिजिटल सेवाओं में बदलाव के अगले चरण के लिए माइक्रोसॉफ्ट के साथ साझेदारी की है। यह करार बैंक के एप्लिकेशन पोर्टफोलियो व डेटा परिदृश्य को आधुनिक बनाने के लिए किया गया है। साथ ही इस करार का उद्देश्य माइक्रोसॉफ्ट क्लाउड के इस्तेमाल के साथ अपनी सेवाओं और सुरक्षित बनाना है। एचडीएफसी बैंक की ओर से बताया गया है कि वह अपनी फ्यूचर रेडी रणनीति के एक हिस्से के रूप में इनहाउस आईपी विकसित कर रहा है। इसके साथ ही बैंक ने कहा है कि प्रौद्योगिकी आईपी के सह-निर्माण के लिए फिनटेक सहित कई कंपनियों के साथ उसने साझेदारी की है। बैंक की ओर से दी गई जानकारी के अनुसार वह आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का उपयोग करके एंटरप्राइज रिपोर्टिंग और उन्नत एनालिटिक्स में अपनी सूचना प्रबंधन क्षमताओं को विस्तार देगा। इसके लिए बैंक एंटरप्राइज डेटा परिदृश्य को समेकित और आधुनिक बनाने के लिए माइक्रोसॉफ्ट एजूर प्लेटफॉर्म की मदद लेगा। माइक्रोसॉफ्ट एजूर स्टैक पर निर्मित बैंकिंग प्रणालियों को अपनाकर बैंक अपनी कार्यप्रणाली को लोकतांत्रिक और मुद्रीकृत करने में सक्षम होगा। ये समाधान एकीकृत वास्तुकला, सहयोगी इंजीनियरिंग वातावरण, उद्योग-अग्रणी सुरक्षा और एआई/एमएल आधारित इकोसिस्टम से संचालित होंगे। इसके अलावा, बैंक ऐप इनोवेशन व ऑटोमेशन फैक्ट्री स्थापित करने के लिए माइक्रोसॉफ्ट पावर प्लेटफॉर्म की क्षमताओं का लाभ उठाएगा। ऐप फैक्ट्री बैंक को अपने एप्लिकेशन पोर्टफोलियो को स्थानांतरित करने, आधुनिकीकरण करने और बदलने में सक्षम करेगी। एचडीएफसी बैंक के ग्रुप हेड (इंफॉर्मेशन टेक्नोलॉजी) और चीफ इन्फॉर्मेशन ऑफिसर रमेश लक्ष्मीनारायणन ने कहा, माइक्रोसॉफ्ट के साथ ये साझेदारी भविष्य के बैंकनिर्माण में निवेश के हमारे एजेंडे का एक हिस्सा है। इसके केंद्र में हमारे ग्राहकों को एक नियो बैंकिंग अनुभव प्रदान करने की क्षमता का विकास करना है जो किसी भी मामले में कम नहीं होगा। हम प्रोपराइटरी आईपी में निवेश के साथ-साथ इसी तरह के अन्य गठजोड़ों के जरिए ऐसा कर रहे हैं। माइक्रोसॉफ्ट इंडिया के प्रबंध निदेशक शशि श्रीधरन ने कहा, हम एचडीएफसी बैंक की डिजिटल परिवर्तन यात्रा का हिस्सा बनकर और सर्वश्रेष्ठ उत्पादों व सेवाओं का निर्माण करने के लिए हुई इस साझेदारी से खुश हैं।

न्यूज ब्रीफ

एनडीटीवी के शेयर के लिए ज्यादा पैसे देंगे अडाणीः ओपन ऑफर में 294 रु. भाव से खरीदे थे, अब 48 रुपए प्रति शेयर एक्स्ट्रा देंगे

नई दिल्ली। अडाणी ग्रुप ने ओपन ऑफर के तहत खरीदे गए न्यू दिल्ली टेलीविजन लिमिटेड के शेयरों के लिए 48.65 रुपए प्रति शेयर की अतिरिक्त कीमत का भुगतान करने का फैसला किया है। दरअसल, 30 दिसंबर को अडाणी ग्रुप ने एनडीटीवी के फाउंडर और प्रमोटर प्रणय रॉय और राधिका रॉय से 342.65 रुपए प्रति शेयर के हिसाब से मीडिया फर्म की 27.26प्रतिशत हिस्सेदारी खरीदी थी, जबकि ओपन ऑफर में खरीदी गई हिस्सेदारी का भाव 294 रुपए प्रति शेयर था। एनडीटीवी में 26प्रतिशत हिस्सेदारी (1.67 करोड़ शेयर) खरीदने के लिए अडाणी ग्रुप का ओपन ऑफर 22 नवंबर से सब्सक्रिप्शन के लिए खुला था और 5 दिसंबर को बंद हुआ था। इस ओपन ऑफर में 8.32प्रतिशत यानी टोटल 5.33 मिलियन (53.3 लाख) इक्विटी शेयर 294 रुपए के भाव पर टेंडर किए गए थे। इसके बाद अडाणी ग्रुप की मीडिया फर्म में हिस्सेदारी बढ़कर 37.5प्रतिशत हो गई थी। प्रमोटर के शेयर खरीदने से 64.71प्रतिशत हिस्सेदारी हुई इसके बाद मीडिया नेटवर्क्स लिमिटेड ने अपनी इनडायरेक्ट सब्सिडियरी के माध्यम से, राधिका रॉय और प्रणय रॉय से एनडीटीवी में 27.26प्रतिशत हिस्सेदारी का अधिग्रहण किया। इससे अडाणी ग्रुप की एनडीटीवी में हिस्सेदारी बढ़कर 64.71प्रतिशत हो गई थी। राधिका रॉय और प्रणय रॉय की अब मीडिया फर्म में केवल 5प्रतिशत हिस्सेदारी बची है। अपनी हिस्सेदारी बेचने की घोषणा करते हुए राधिका-प्रणय ने कहा था कि उन्होंने साल 1988 में एनडीटीवी की शुरुआत इस विश्वास के साथ की थी कि भारत में जर्नलिज्म वर्ल्ड-क्लास है, लेकिन एक मजबूत और प्रभावी ब्रॉडकास्ट प्लेटफॉर्म की जरूरत है, जो इसे बढ़ने और चमकने दे।

जोमैटो के सह-संस्थापक गुंजन पाटीदार ने दिया इस्तीफा, कंपनी के शेयर और लुढ़के

नई दिल्ली । ऑनलाइन फूड डिलीवरी प्लेटफॉर्म जोमैटो लिमिटेड ने कहा कि उसके सह-संस्थापक और मुख्य प्रौद्योगिकी अधिकारी गुंजन पाटीदार ने सोमवार को पद से इस्तीफा दे दिया है। जोमैटो ने शेयर बाजारों को भेजी सूचना में कहा कि पाटीदार जोमैटो के उन कुछ कर्मचारियों में से एक थे जिन्होंने कंपनी के लिए कोर टेक सिस्टम का निर्माण किया था। जोमैटो ने कहा है कि पिछले दस से अधिक वर्षों में उन्होंने एक शानदार तकनीकी नेतृत्व टीम का भी पोषण किया जो आगे चलकर तकनीकी कार्य का नेतृत्व करने में सक्षम है। जोमैटो के निर्माण में उनका योगदान अमूल्य रहा है।

वैश्विक चुनौतियों के बावजूद वृद्धि की राह पर अर्थव्यवस्था, आगामी तिमाहियों में होगा और सुधार

नई दिल्ली । कोरोना महामारी से उत्पन्न चुनौतियों से निपटने के बाद 2022 में भारतीय अर्थव्यवस्था में सुधार हुआ है। यह आगामी तिमाहियों में भारत की विकास दर में और सुधार की उम्मीद है। हालांकि, अर्थव्यवस्था के समक्ष भू-राजनीतिक तनाव, डॉलर में मजबूती और उच्च महंगाई जैसे जोखिम भी हैं। फिर भी आर्थिक वृद्धि के सकारात्मक रुझान और बुनियादी गतिविधियों में सुधार आने से देश को वैश्विक स्तर की उन प्रतिकूल परिस्थितियों का सामना करने में मदद मिलेगी, जिनका आने वाले महीनों में भारत के निर्यात पर बुरा असर पड़ सकता है। नीति आयोग के पूर्व उपाध्यक्ष अरविंद पनगढ़िया ने कहा, अगर बजट में कुछ ऐसा नहीं होगा, जिसका नकारात्मक असर पड़े तो वर्ष 2023 में सात फीसदी की वृद्धि दर कायम रहनी चाहिए। उन्होंने कहा कि उच्च महंगाई के साथ डॉलर के मुकाबले रुपये के मूल्य में गिरावट नीति निर्माताओं के लिए परेशानी का सबब रहा। इससे आयात महंगा हुआ और देश के चालू खाते का घाटा (कैड) बढ़ गया। आने वाले महीनों में भी रुपये पर दबाव बना रहेगा। एसएंडपी ग्लोबल रेटिंग्स में सॉवेरन एंड इंटरनेशनल पब्लिक फाइनेंस रेटिंग्स के निदेशक एंड्रयू वुड ने कहा, बाजार मूल्य पर जीडीपी में तेज वृद्धि और राजस्व में बढ़ोतरी का भारत को लाभ मिल रहा है। हालांकि, वैश्विक स्तर पर नरमी, ऊंची ब्याज दरें और महंगाई जैसे जोखिम भी भारत के सामने हैं।

सीईएस 2023 की फिजिकल फॉर्मेट में वापसी

पहले वायरलेस ओएलईडी टीवी से लेकर स्मार्ट रिंग पेश होंगे, 5 से 8 जनवरी के बीच इवेंट

लास वेगास।
दो साल बाद कंज्यूमर इलेक्ट्रॉनिक्स शो 2023 फिजिकल फॉर्मेट में वापसी कर रहा है। 5 से 8 जनवरी के बीच इसका आयोजन लास वेगास कन्वेंशन सेंटर में होगा। दुनिया के इस सबसे बड़े टेक शो में करीब 2,400 कंपनियां हिस्सा ले रही है। सोनी, सैमसंग, जैसे प्रमुख कंज्यूमर टेक ब्रांड भी इसमें शामिल है। आइए जानें इस साल सीईएस क्या कुछ नया देखने को मिलेगा

पहला वायरलेस ओएलईडी टीवी

सीईएस में दुनिया का पहला वायरलेस ओएलईडी टीवी प्रदर्शित किया जा सकता है। इसे अमेरिकी कंपनी डिस्प्लेस ने तैयार किया है। यह टीवी 2023 के आखिर में बाजार में उपलब्ध होगा। यह टच और वॉयस कमांड से चलेगी। इसे हाथ के इशारों से कंट्रोल किया जा सकेगा। बड़ी स्क्रीन बनाने के लिए दो टीवी जोड़ी जा सकेगी।

हाई-एंड गेमिंग मॉनिटर

एलजी लेटेस्ट फ्लैगशिप गेमिंग मॉनिटर- एलजी अल्ट्रागियर ओएलईडी पेश करेगी। इसमें 240 हर्ट्ज रिफ्रेश रेट जैसी सुविधाएं होंगी। कंपनी ओएलईडी व वेब ओएस टेक्नोलॉजी के साथ नए स्मार्ट टीवी, साउंडबार और स्पीकर्स के अलावा स्मार्टफोन कैमरा भी पेश सकती है।

दुनिया का पहला डुअल यूएचडी गेमिंग मॉनिटर

सैमसंग इलेक्ट्रॉनिक्स ने अपने मॉनिटर लाइनअप में नए मॉडल पेश करने की घोषणा की है। इसमें दुनिया का पहला डुअल यूएचडी गेमिंग मॉनिटर ओडिसी नियो जी9 शामिल है। सैमसंग की ओडिसी, व्यूफिनिटी और स्मार्ट मॉनिटर लाइनअप में नई पेशकश शानदार इमेज क्वालिटी प्रदान करेगी। इसमें कई सारे इनोवेटिव फीचर भी मिलेंगे। डेल अपने नए गेमिंग लैपटॉप की घोषणा करेगा, जिसमें नेक्स्ट जेनरेशन एलियनवेयर एक्स सीरीज़ और एलियनवेयर एम सीरीज़ के लैपटॉप शामिल हैं। ये 13 वीं जेनरेशन के इंटेल कोर सीपीयू और जीपीयू की आरटीएक्स 4000 सीरीज से पावर्ड हो सकते हैं। ये लैपटॉप अपने पहले के लैपटॉप्स की तुलना में पतले होने की संभावना है और बेहतर कूलिंग सॉल्यूशन से लैस होंगे।

हेल्थ ट्रैक के लिए स्मार्ट रिंग

हेल्थकेयर सॉल्यूशंस कंपनी मोनवो हेल्थ विशेष रूप से महिलाओं की सेहत को ट्रैक करने के लिए एक स्मार्ट रिंग 'एवी' डिजाइन की है। सीईएस 2023 में इसका प्रदर्शन किया जाएगा। एवी हार्ट रेट, एसपीओ2, ब्लड में ऑक्सीजन के लेवल की जानकारी देगी। इसके अलावा ओव्यूलेशन ट्रैकिंग, मासिक धर्म के लक्षणों की ट्रैकिंग, एक्टिविटी प्रोफाइल आदि की भी जानकारी देगी। स्मार्ट रिंग की कीमत करीब 25,000 रुपए हो सकती है।

सैमसंग नया फ्रिज पेश करेगी

सैमसंग 32 इंच टचस्क्रीन डिस्प्ले के साथ नया फ्रिज 'बिस्पोक रेफ्रिजरेटर फैमिली हब प्लस' पेश करेगी। पिछले सैमसंग फैमिली हब रेफ्रिजरेटर्स में 21.5 इंच का डिस्पले था। नया फ्रिज का इंटीग्रेटेड स्मार्टथिंग्स हब कई स्मार्टथिंग्स डिवाइसेस को नियंत्रित और मॉनिटर कर सकता है। यह छह स्मार्टथिंग्स होम लाइफ सर्विसेस - एयर केयर, होम केयर, पेट केयर, कपड़ों की देखभाल, एनर्जी और कुकिंग को सपोर्ट करता है।

दुनिया का सबसे महंगा फैब्रिक

4 लाख से ज्यादा की होती है इससे बनी शर्ट, राजवंश और अमीरों के पहनावे में शामिल

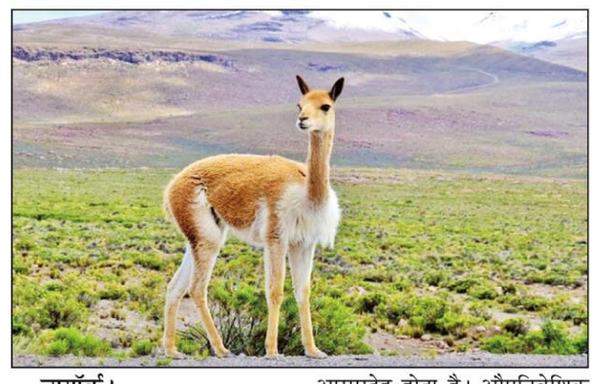

न्यूयॉर्क।
सर्दियों में पहने जाने वाले फैब्रिक की बात करें तो भारत के कश्मीरी पशमीना बकरी से मिलने वाले ऊन को सबसे सॉफ्ट और महंगे फैब्रिक में शुमार किया जाता है। लेकिन, दक्षिण अमेरिका की एंडीज पर्वत श्रृंखला में पाए जाने वाले विकुना नाम के जानवर का ऊन दुनिया का सबसे महंगा फैब्रिक है। विकुना फैब्रिक सदियों से राजवंश और अमीरों के पहनावे में शामिल रहा है। अब भी इसका यह रुतबा कायम है। लग्जरी और महंगे फैब्रिक से कपड़े बनाने वाली इटली की कंपनी लोरो पियाना की वेबसाइट पर विकुना से बने मोजों की जोड़ी की कीमत लगभग 80,000 रुपए है। विकुना से बनी शर्ट 4.23 लाखप रुपए की है। यह इतना दुर्लभ और महंगा है कि किसी भी मॉल पर आपको विकुना से बने कपड़े डिस्काउंट पर नहीं मिलेंगे।

आखिर इतना महंगा क्यों है विकुना यार्न - एंडीज पर्वत श्रृंखला में पाए जाने वाले छोटे ऊंट जैसे विकुना, दुनिया के लुप्त प्राय: प्राणियों की श्रेणी में आते हैं। इनका ऊन काफी सॉफ्ट, महीन और आरामदेह होता है। औपनिवेशिक काल में इनकी बड़े पैमाने पर फार्मिंग के कारण इनकी संख्या बहुत कम हो गई और 1960 में इन्हें दुर्लभ घोषित कर दिया गया। इसके बाद इन्हें पालने, रखने और ऊन निकालने के लिए बहुत सख्त नियम बना दिए गए हैं। इनका ऊन काफी हल्का और पतला होता है। एक कोट बनाने के लिए लगभग 35 विकुना से ऊन निकालना पड़ता है। इटली की कंपनी लोरो पियाना ने पेरू की एंडीज श्रृंखला के पास 5,000 एकड़ जमीन पर विकुना के लिए एक अभयारण्य बनाया है। यहां विकुना को पाला जाता है और बहुत सख्त नियमों के तहत इनका ऊन निकाला जाता है। सबसे उच्च गुणवत्ता वाले विकुना ऊन की मोटाई 12-14 माइक्रॉन होती है। सभी प्राकृतिक रेशों में यह सबसे आरामदायक होता है। इसका कम्फर्ट फैक्टर 100 में से 99 है। इसकी तुलना में कश्मीरी पशमीना की मोटाई 15-19 माइक्रॉन और बेबी अल्पाका की मोटाई 22.5 माइक्रॉन तक होती है। इसीलिए विकुना ऊन खास है।

सुहैल समीर ने भारत पे के सीईओ का पद छोड़ा सीएफओ नलिन नेगी अंतरिम सीईओ नियुक्त

नई दिल्ली ।
भारतपे के सीईओ सुहैल समीर ने अपना पद छोड़ दिया है। कंपनी ने इसकी जानकारी दी है। कंपनी ने एक बयान में कहा कि समीर पिछले वर्ष सह-संस्थापक अशनीर ग्रोवर को हटाए जाने के बाद से कंपनी के संचालन की निगरानी कर रहे हैं, और अब वे अपना पद छोड़ने के लिए पूरी तरह से तैयार हैं।

नेतृत्व के पदों में बड़े बदलाव के बीच समीर अब मुख्य रणनीति अधिकारी का पद संभालेंगे। बयान में कहा गया है, भारतपे ने घोषणा की कि सुहैल समीर सात जनवरी 2023 से मुख्य कार्यकारी अधिकारी से रणनीतिक सलाहकार के पद पर आ जाएंगे। बयान के अनुसार कंपनी के मौजूदा सीएफओ नलिन नेगी को वरिष्ठ अधिकारियों के साथ साझेदारी करने के लिए अंतरिम सीईओ नियुक्त किया गया है। भारतपे ने यह भी खुलासा किया कि कंपनी ने उत्तराधिकार योजना में सहायता करने और कंपनी के लिए एक नए सीईओ की पहचान करने में मदद करने के लिए एक कार्यकारी खोज फर्म को काम पर रखा गया है। भारतपे बोर्ड के चेयरमैन रजनीश कुमार ने कहा कि वह समीर के जबरदस्त योगदान और विभिन्न चुनौतियों से उबरने में कंपनी की मदद करने के लिए उनके आभारी हैं। उन्होंने कहा, हमने भारतपे को नई ऊंचाइयों पर ले जाने वाले नेता को खोजने के लिए समय और संसाधन समर्पित करने की आवश्यकता को पहचाना है और हम सुहैल और नलिन की प्रतिबद्धता के लिए आभारी हैं। हम अंतरिम सीईओ के रूप में नलिन नेगी की भूमिका का समर्थन करने के लिए तत्पर हैं, क्योंकि हम विश्व स्तरीय वित्तीय उत्पादों की एक श्रृंखला के साथ लाखों एमएसएमई को सशक्त बनाने के अपने मिशन में आगे बढ़ रहे हैं। नेगी अगस्त 2022 में भारतपे से जुड़े थे। इससे पहले, वह लगभग 10 वर्षों तक एसबीआई कार्ड्स में मुख्य वित्तीय अधिकारी थे।

मस्क को जल्द पीछे छोड़ सकते हैं अडाणी: दुनिया के दूसरे सबसे अमीर आदमी बनेंगे गौतम, मस्क की नेटवर्थ 200 बिलियन डॉलर घटी

नई दिल्ली ।
दुनिया के तीसरे नंबर के रईस गौतम अडाणी कुछ ही हफ्तों में नंबर-2 पायदान पर पहुंच सकते हैं। फिलहाल लग्जरी इलेक्ट्रिक कार कंपनी टेस्ला के सीईओ एलन मस्क दुनिया के दूसरे सबसे अमीर आदमी हैं। ब्लूमबर्ग बिलियनेयर्स इंडेक्स के मुताबिक, अडाणी की संपत्ति सालभर में 57.5प्रतिशत बढ़कर 10 लाख करोड़ रुपए हो गई है।

मस्क-अडाणी की संपत्ति के बीच 1.34 लाख करोड़ रु का अंतर - इसी अवधि में मस्क की संपत्ति 49.3प्रतिशत घटकर 11.34 लाख करोड़ रुपए रह गई है। यानी मस्क और अडाणी की संपत्ति के बीच अब बस 1.34 लाख करोड़ रुपए का ही अंतर रह गया है। रिपोर्ट्स के मुताबिक, मस्क की संपत्ति घटने और अडाणी की बढ़ने की मौजूदा रफ्तार कायम रही तो मस्क को पीछे छोड़ने में अडाणी को ज्यादा समय नहीं लगेगा।

मस्क की संपत्ति 2022 में 11 लाख करोड़ रुपए घटी - ब्लूमबर्ग की ओर से एशियाज बिजिएस्ट डीलमेकर का खिताब पाने वाले गौतम अडाणी दुनिया के टॉप-10 अमीरों की सूची में एकमात्र व्यक्ति हैं, जिनकी संपत्ति बीते साल बढ़ी है। दूसरी तरफ एलन मस्क की संपत्ति 2022 में 11 लाख करोड़ रुपए से ज्यादा घटी है। 162 बिलियन डॉलर (13.4 लाख करोड़ रुपए) की संपत्ति के साथ बर्नार्ड अरनॉल्ट ब्लूमबर्ग बिलियनेयर्स लिस्ट में टॉप पर काबिज हैं।

200 बिलियन डॉलर गंवाने वाले दुनिया के पहले व्यक्ति बने मस्क - ब्लूमबर्ग के अनुसार, ट्विटर के मालिक एलन मस्क 200 बिलियन डॉलर गंवाने वाले दुनिया के पहले व्यक्ति भी बन गए हैं। जनवरी 2021 में मस्क की पर्सनल नेटवर्थ 200 बिलियन डॉलर से ज्यादा हो गई थी, तब उन्होंने अमेजन के मालिक जेफ बेजोस को भी पीछे छोड़ा था। इसके बाद उनकी नेटवर्थ 300 बिलियन डॉलर के पार पहुंच गई थी। टेस्ला के शेयरों में हालिया गिरावट के बाद मस्क की टोटल नेटवर्थ 137 बिलियन डॉलर पर आ गई है। 27 दिसंबर को टेस्ला के शेयरों में 11प्रतिशत की गिरावट आई थी।

ऑनलाइन गेम खेलने के लिए करानी होगी केवायसी

गेम में कितने रुपए जीते इसकी भी देनी होगी जानकारी, कंपनियों के लिए ड्राफ्ट तैयार

नई दिल्ली।
केंद्र सरकार ने ऑनलाइन गेमिंग कंपनियों के लिए प्रस्तावित नियमों का ड्राफ्ट (मसौदा) सोमवार को सार्वजनिक किया। गेमिंग कंपनियों के लिए स्व-नियामक तंत्र और खिलाड़ियों के अनिवार्य सत्यापन का प्रस्ताव है। कंपनियों को एक शिकायत अधिकारी नियुक्त करना होगा, जो ऑनलाइन गेमिंग मध्यस्थ (इन्टर्मीडीएरी) का कर्मचारी होगा और भारत का ही निवासी होगा। मसौदे पर 17 जनवरी तक राय मांगी गई है।

अभी गेमिंग कंपनियों के लिए वही नियम लागू किए जा रहे हैं, जो 2021 में सोशल मीडिया कंपनियों पर लागू हुए थे। आईटी मंत्रालय ने ऑनलाइन गेमिंग कंपनियों के लिए भारतीय कानूनों का अनुपालन जरूरी करने के साथ ही कहा है कि जुआ या सट्टेबाजी से संबंधित हर कानून इन पर भी लागू होगा। ऑनलाइन गेम जो भारतीय कानून के अनुरूप न हों, उनको कंपनियां न तो होस्ट करेंगी, न प्रदर्शित करेंगी, न अपलोड करेंगी और न ही प्रकाशित या प्रसारित करेंगी। ड्राफ्ट में यह भी सुझाव दिया गया है कि कंपनियों को बच्चों (18 साल से कम उम्र वालों के लिए) की सुरक्षा के लिए उचित उपाय करने चाहिए। उनके लिए माता-पिता की सहमति और उम्र का ध्यान रखा जाना चाहिए।

जीती रकम मिलने और अन्य शुल्क की देनी होगी जानकारी खेल में शामिल होने वालों को जमा राशि की निकासी या रिफंड, जीती रकम मिलने और अन्य शुल्क के बारे में सूचना देनी होगी। इसके अलावा कंपनी को एक टीम (बॉडी) बनाकर इसका रजिस्ट्रेशन मंत्रालय में कराना होगा। यह टीम शिकायतों का निपटारा करेगा। टीम में ऑनलाइन गेमिंग, सार्वजनिक नीति, आईटी , मनोविज्ञान, चिकित्सा जैसे क्षेत्रों के पांच सदस्यों का निदेशक बोर्ड होगा।

फरवरी तक तैयार हो जाएंगे नए नियम - आईटी राज्यमंत्री राजीव चंद्रशेखर ने सोमवार को कहा कि ऑनलाइन गेमिंग नियम फरवरी की शुरुआत में तैयार हो जाएंगे। उन्होंने कहा कि नियम का मकसद ऑनलाइन गेमिंग क्षेत्र को बढ़ावा देना और इनोवेशन के लिए प्रोत्साहित करना है।

तेलंगाना पहला राज्य, जिसने ऑनलाइन गेमिंग पर कानून बनाया - तेलंगाना देश का पहला राज्य है, जहां 2017 में ऑनलाइन गेमिंग कानून लागू किया गया है। वहां भी पुराने नियम में संशोधन कर सख्त प्रावधान किए गए हैं। इसके तहत कोई भी व्यक्ति ऑनलाइन गेमिंग में जुआ खेलते पाया जाता है तो उसे 3 माह का कारावास, 5000 जुर्माना या दोनों सजाएं दी जा सकती हैं।

ऑनलाइन जुएं का किसी भी तरह का विज्ञापन या ऑनलाइन गेम का विज्ञापन करने पर जिम्मेदार व्यक्ति को ऐसी धाराओं में गिरफ्तार किया जाएगा, जिसमें एक साल कैद, 5 लाख का जुर्माना या दोनों सजाएं होंगी। ऑनलाइन जुआ खिलाने वाला, पैसे या प्रॉपर्टी को ऑनलाइन गेम में दांव पर लगाने का खेल जो भी खिलवाता हुआ पकड़ा जाएगा, उसे 3 साल की कैद,10 लाख रुपए का जुर्माना या दोनों सजा देने का नियम है।

बेटी मल्लिका की आरेंज कलर बिकिनी पहने फोटो वायरल ट्रोलर्स के निशाने पर विवेक अग्निहोत्री

मुंबई (ईएमएस)। पठान के गीत बेशरम रंग को लेकर फिल्म के निमार्ताओं और अभिनेता शाहरुख खान पर तंज कसने वाले निमार्ता निर्देशक विवेक अग्निहोत्री ट्रोल्स के निशाने पर आ गए हैं। सोशल मीडिया पर उन्होंने विवेक अग्निहोत्री की की बेटी की आरेंज कलर बिकिनी में फोटो वायरल कर दी है। इस बीच विवेक अग्निहोत्री की बेटी मल्लिका ने अपना सोशल मीडिया अकाउंट प्रा-इवेट कर दिया है। द कश्मीर फाइल्स के निर्देशक विवेक अग्निहोत्री ने हाल ही फिल्म पठान को लेकर ऐसा कमेंट कर दिया कि बवाल मच गया और लोगों ने उन्हें निशाने पर ले लिया। विवेक अग्निहोत्री को पठान पर कमेंट करना महंगा पड़ गया है क्योंकि कुछ यूजर्स ने उनकी बेटी मल्लिका की ऑरेंज बिकिनी वाली तस्वीरें निकालकर वायरल कर दी हैं। यूजर्स विवेक अग्निहोत्री को न सिर्फ लताड़ रहे हैं बल्कि उन्हें दोगला भी बता रहे हैं। यही नहीं बौखलाए यूजर्स ने वि-वेक अग्निहोत्री की पुरानी विवादित फिल्मों के क्लिप निकालकर भी वायरल कर दिए और उनकी फिल्म हेट स्टोरी की भी याद दिला दी जिसमें इंटीमेट और बोल्ड सीन्स की भरमार थी। विवेक अग्निहोत्री की बेटी की ऑरेंज बिकिनी में तस्वीरें सोशल मीडिया पर तेजी से वायरल हो रही हैं और यूजर्स निर्देशक पर गुस्सा निकालते हुए अनाप-शनाप कमेंट कर रहे हैं। एक यूजर ने तो यहां तक लिख दिया कि ज्ञान बांटने से पहले घर पर ध्यान दो। इस विवाद के बीच विवेक अग्निहोत्री की बेटी ने अपना इंस्टाग्राम अकाउंट प्राइवेट रखा है। वहीं विवेक अग्निहोत्री का अभी तक इस मामले में और कोई प्रतिक्रिया सामने नहीं आई है। गौरतलब है कि विवेक अग्निहोत्री ने हाल ही में फिल्म पठान पर तंज कसते हुए एक ट्वीट किया था जिसमें उन्होंने लिखा था कि अगर आप सेक्युलर हैं तो इस फिल्म को न देखें। यही नहीं उन्होंने पठान के बेशरम रंग गाने की आलोचना करते हुए एक छोटी सी लडकी का वीडियो भी ट्वीट किया था। वीडियो में लडकी इस गाने को रेप के लिए उकसाने वाला बता रही थी। विवेक अग्निहोत्री के इसी ट्वीट पर लोग भडक गए और उन्होंने उनकी बेटी की ऑरेंज बिकिनी वाली तस्वीरें निकालकर वायरल कर दीं। इन तस्वीरों में मल्लिका अग्निहोत्री ने उसी कलर की बिकिनी पहनी है जिस कलर की दीपिका पादुकोण ने बेशरम रंग में पहनी है। इसी को लेकर यूजर्स ने विवेक अग्निहोत्री पर चुटकी ली है। एक यूजर ने विवेक अग्निहोत्री की बेटी की बिकिनी वाली तस्वीरें शेयर कर लिखा है कि विवेक अग्निहोत्री को वैसे तो हीरोइनों की बिकिनी वाली तस्वीरों से परेशानी है और यहां देखिए खुद उनकी बेटी की बिकिनी वाली तस्वीरें। एक अन्य यूजर ने लिखा है अब ये विवेक अग्निहोत्री दोबारा कभी शाहरुख को ट्रोल नहीं करेगा क्योंकि उसकी खुद की बेटी को ही उसके दोगलेपन का हजार्ना भुगतना पड़ा है। वो अपनी बेटी का ही नहीं हो सकता तो क्या खाक किसी और का होगा।

जब मुझे तुम्हारी सबसे ज्यादा जरुरत थी तब तुम नहीं थी अमृता : मलाइका

मुंबई (ईएमएस)। अभिनेत्री और मॉडल मलाइका अरोड़ा और उनकी बहन अमृता अरोड़ा के बीच कैसा रिश्ता है? ये जानने के लिए जो भी बेकरार होगा उसे इसका जवाब मिल गया होगा। रियलिटी शोमूविंग इन विद मलाइका अरोड़ा में दोनों की खट्टी मीठी बॉन्डिंग साफ नजर आती है। कभी लड़ती हैं कभी झगड़ती हैं पर एक दूसरे से बेहद प्यार करती हैं। पर इन दिनों दोनों बहनों के बीच मनमुटाव चल रहा है। मूविंग इन विद मलाइका के पहले सीजन का फिनाले एपिसोड दिखाया गया। जहां दोनों बहनें पुरानी यादों किस्सों को जीते दिखी। सब सही चल रहा था तभी अचानक चीजें खराब हुईं जब अमृता ने अपनी बहन से पूछा क्यों उन्होंने फराह खान वाले एपिसोड में ऐसा कहा कि उनके करीबी लोग उनकी जिंदगी के नाजुक मोड़ पर फेल साबित हुए। इसके जबाव में मलाइका काफी इमोशनल नजर आईं। मलाइका ने कहा जब उनका अरबाज खान संग तलाक की प्रक्रिया चल रही थी तब अमृता उनके साथ खड़ी नहीं हुई थीं। मलाइका और अरबाज खान का तलाक 2017 में हुआ था। मलाइका ने अपने दिल की बात बयां करते हुए कहा ये मेरी जिंदगीका सबसे लो फेज था जब मैं मूव ऑन कर रही थी जब मैं अलग हुई और मेरा तलाक हुआ। पर्सनली और इमोशनली ये मेरी जिंदगी का लो पॉइंट था। वहां वक्त था जब मुझे तुम्हारी सबसे ज्यादा जरूरत थी। मुझे एक बहन के नाते तुम्हारी जरूरत थी। मुझे कोई जजमेंट नहीं चाहिए था कोई काउंसलिंग सेशन नहीं बस तुम्हारा सपोर्ट चाहती थी। तुम्हें अपने साथ खड़ा हुआ देखना चाहती थी कि तुम मुझे कहती-मल्ला परेशान मत हो। मैं तुम्हारे साथ खड़ी हूं। मैं तुम्हारे साथ रहूंगी। पर तुम वहां खड़ी नहीं थी। तुमने अपने दोस्त के साथ ट्रिप लेकर गोवा आ गई। मलाइका की बातें सुन अमृता बुरी तरह चकित हुई। उनका कहना था कि मुझे नहीं पता था मेरी बहन के दिल में इतनी सारी शिकायतें हैं। अमृता को लगता है उन्हें बहुत सारी बात कर लेनी चाहिए थी। फिर बातचीत आगे बढ़ती है और मला-इका ने बताया कि अमृता बतौर मां बेटी दोस्त और पत्नी शानदार हैं। लेकिन कब वे अच्छी बहन साबित होंगी?

प्रभास की फैन फॉलोइंग में जबरदस्त इजाफा

-अब प्रभास हो चुके है ग्लोबल स्टार

मुंबई (ईएमएस)। दक्षिण भारत के सुपर स्टार अभिनेता प्रभास के फैंस प्रोफेशनल के अलावा पर्सनल लाइफ को जानने में भी दिलचस्पी रखते हैं। बाहुबली के बाद से प्रभास की फैन फॉलोइंग में जबरदस्त इजाफा हुआ है वे अब ग्लोबल स्टार हैं और उनके पास फिल्मों की भरमार है। प्रभास शादी और डेटिंग की खबरों को लेकर कई सालों से चर्चा में हैं। कभी उनका नाम अनुष्का शेट्टी के साथ जोड़ा गया जो असल जिंदगी में भी एक दूसरे के बेहतर दोस्त हैं। वहीं पिछले कई दिनों से कृति सेनन के साथ उनकी डेटिंग की खबरें हैं हालांकि एक्ट्रेस ने महज अफवाह करार दिया। जबकि वरुण धवन ने दावा किया था कि प्रभास के दिल में कृति बसती हैं। इसी बीच अब तेलुगू सुपरस्टार नंदमुरी बालकृष्ण के अनस्टॉपेबल विद एनबीके 2 में अपनी एंट्री को लेकर सुर्खियों में हैं। अभिनेता की शो से आए दिन ही झलकियां वायरल होती रहती हैं। अब प्रभास ने बातचीत में अपने मैरिज प्लान के बारे में बात की है। अनस्टॉपेबल विद एनबीके 2 चैट शो के दौरान बलय्या ने जब प्रभास से उनकी शादी की योजना के बारे में भी सवाल किया। जिसके जवाब में बाहुबली स्टार ने कहा कि वे शादी करने की प्लानिंग कर रहे हैं लेकिन यह निश्चित नहीं है कि यह कब होगी। अभिनेता ने बालकृष्णा के साथ उन पर घर वालों द्वारा शादी के दबाव से निपटने के बारे में भी बात की। प्रभास की शादी कुछ समय से फिल्म इंडस्ट्री में एक हॉट टॉपिक रहा है। अनस्टॉपेबल विथ एनबीके 2 के दौरान मास हीरो ने इस विषय पर फिर से विचार किया।बालकृष्ण के पूछे जाने पर प्रभास ने कहा कि वे निश्चित रूप से शादी करेंगे लेकिन पता नहीं कब होगी। डार्लिंग स्टार कहते हैं कोई आइडिया नहीं सर। मैं अभी तक नहीं जानता। हालांकि मैं निश्चित रूप से शादी करूंगा लेकिन ये शायद अभी तक मेरे भाग्य में नहीं लिखा है। प्रभास ने आगे खुलासा किया कि उनके रिश्तेदार घर पर इस दबाव से निपटने में उनकी मदद करते हैं। साहो स्टार ने आगे कहा मेरी बहन पास में रहती है। मेरी भाभी भी करीब है। इसलिए हम अभी इस तरह से काम कर रहे हैं। शो के दौरान नंदमुरी बालकृष्ण ने बाहुबली अभिनेता से कृति सेनन साथ उनके रिलेशनशिप के बारे में भी सवाल किया और उन्होंने जवाब दिया यह पुरानी खबर है सर। मैडम की ओर से एक स्पष्टीकरण भी दिया जा चुका है कि ऐसी कोई बात नहीं थी। प्रभास के काम के मोर्चे पर बात करें तो वे इन दिनों बहुत बिजी शेड्यूल से गुजर रहे हैं और यही बात है कि उनके पास अपनी पर्सनल लाइफ के लिए वक्त ही नहीं है। वे ओम राउत द्वारा निर्देशित पौराणिक ड्रामा आदिपुरुष को सुर्खियों में रखते हैं जिसमें कृति सेनन सैफ अली खान और सनी सिंह शामिल हैं। वे केजीएफ फेम प्रशांत नील द्वारा निर्देशित सलार में एक हिंसक आदमी की भूमिका निभाते नजर आएंगे।

एनटीआर30 की शूटिंग फरवरी में शुरू होगी

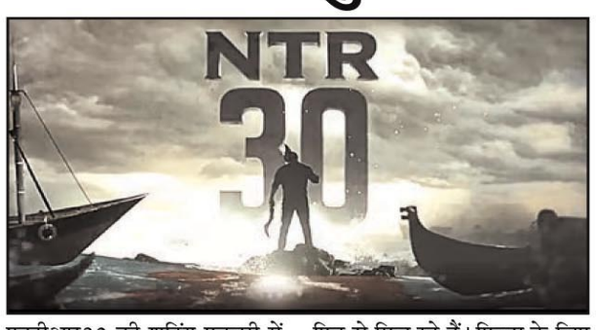

एनटीआर30 की शूटिंग फरवरी में शुरू होगी। जूनियर एनटीआर की मुख्य भूमिका वाली अनटाइटल्ड फिल्म जूनियर एनटीआर 30 के निमार्ता 5 अप्रैल 2024 को दुनिया भर में रिलीज होने की उम्मीद कर रहे हैं। यह देखना दिलचस्प होगा कि जूनियर एनटीआर दर्शकों को अपना कैसा प्रदर्शन दिखाते हैं। एनटीआर30 को वर्ष की बहुप्रतीक्षित परियोजना के रूप में देखा जा रहा है। निर्देशक कोराताला शिवा और जूनियर एनटीआर लंबे समय के बाद एक फिल्म के लिए फिर से मिल रहे हैं। फिल्म के लिए संगीत अनिरुद्ध रविचंदर द्वारा तैयार किया जा रहा है जिन्होंने आखिरी बार कमल हासन-स्टारर विक्रम के लिए अपने काम से सबको प्रभावित किया था। नंदमुरी कल्याण राम एनटीआर आर्ट्स और युवसुधा आर्ट्स के बैनर तले हरि कृष्ण के. और सुधाकर मिकिलिनेनी द्वारा निर्मित फिल्म पेश कर रहे हैं। हालांकि निमार्ताओं द्वारा अभी तक आगामी फिल्म की कहानी और कलाकारों के बारे में ज्यादा खुलासा नहीं किया गया है।

रंग की वजह से फिल्म पर कैंची चलाना गलत गीत या दृश्य में वल्गैरिटी होने पर ऐसा करना सही : निहलानी

मुंबई (ईएमएस)। दो दिन पूर्व सेंसर बोर्ड ने यशराज फिल्म की ओर से सेंसर बोर्ड को भेजी गई पठान फिल्म को देखने के बाद इस फिल्म के गीत बेशरम रंग और फिल्म के कुछ अन्य दृश्यों में बदलाव करने को कहा है। यह भी कहा है कि बदलाव के बाद वे एक बार फिर इस फिल्म को सेंसर बोर्ड को पास करने के लिए भेजें। सेंसर बोर्ड के इस निर्णय पर सेंसर बोर्ड के चेयरमैन रह चुके फिल्म निमार्ता निर्देशक पहलाज निहलानी ने अपनी प्रतिक्रिया की है। उन्होंने कहा सिर्फ किसी विशेष रंग को लेकर गाने में बदलाव करना सही नहीं है। यदि किसी गीत या दृश्य में वल्गैरिटी हो तो सेंसर बोर्ड बदलाव कर सकता है लेकिन सिर्फ कलर के नाम पर कैंची चलाना सही नहीं है। पहलाज निहलानी ने कहा कि इस गाने में बदलाव के लिए मिनिस्ट्री की तरफ से सेंसर बोर्ड को कोई पत्र भेजा गया होगा ताकि इसको लेकर कोई बवाल न हो। पत्रकारों से इस मामले में बातचीत करते हुए पहलाज निहलानी ने कहा ऐसी कोई गाइडलाइन्स नहीं है कि किसी रंग की वजह से किसी गाने में बदलाव किया जाए अगर वल्गैरिटी या आपत्तिजनक सीन्स हैं तो बदलाव किया जा सकता है। अगर सिर्फ कलर के नाम पर बदलाव के सुझाव दिए जा रहे हैं तो यह गलत है। गाने में भगवा रंग के हिस्से को हटाने के लिए सेंसर बोर्ड को मिनिस्ट्री का प्रेशर होगा। वरना ट्रेलर और शॉट को तो मंजूरी मिल ही गई थी।

पठान के गाने बेशरम रंग पर विवाद के बीच सेंसर बोर्ड के अध्यक्ष प्रसून जोशी ने कहा- हमने निमार्ताओं से कहा है कि वे फिल्म के प्रदर्शन से पूर्व इसका संशोधित वर्जन हमारे पास जमा कराएं। सेंसर बोर्ड ने फिल्म को बारीकी से देखने के बाद यह सुझाव दिया है। उन्होंने पठान को लेकर कहा सेंसर बोर्ड हमेशा से ही क्रिएटिविटी और दर्शकों की संवेदनशीलता के बीच बैलेंस बनाकर रखता है। उन्होंने कहा हमें पूरा विश्वास है कि हम बातचीत के जरिए कोई न कोई रास्ता निकाल सकते हैं। गौरतलब है कि पठान के गाने बेशरम रंग में दीपिका पादुकोण भगवा बिकनी में दिखाई दीं। इसी पर विवाद शुरू हो गया इसके बाद पठान को सेंसर बोर्ड के पास भेजा गया। प्रसून जोशी ने कहा हाल ही में फिल्म पठान हमारे पास एग्जामिनेशन के लिए आई। यह प्रक्रिया शुरू हो चुकी है। मैं फिर कहना चाहता हूं कि हमारी संस्कृति और मान्यताएं महान हैं। हमें इस बारे में बेहद सावधान रहना होगा कि बेकार की बातों से यह प्रभावित न हों।

सिद्धार्थ और कियारा 6 फरवरी बंधेंगे बंधन में

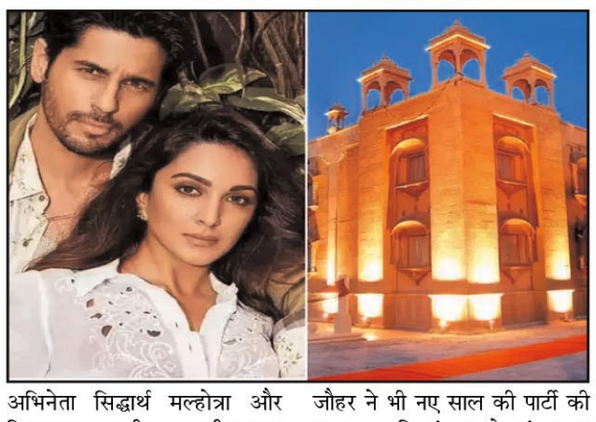

अभिनेता सिद्धार्थ मल्होत्रा और कियारा आडवाणी 6 फरवरी 2023 को शादी के बंधन में बंधने जा रहे हैं। मनीष मल्होत्रा ने अपने इंस्टाग्राम से समारोहों की कुछ तस्वीरें शेयर की हैं। तस्वीरों में सिद्धार्थ और करण को ऑल-ब्लैक लुक में देखा जा सकता है वहीं नए साल की पार्टी के दौरान कियारा आडवाणी को भी एक शिमरी ग्रीन ड्रेस में देखा गया। कैप्शन में मनीष ने लिखा आप सभी को नए साल की शुभकामनाएं। वहीं करण जौहर ने भी नए साल की पार्टी की कुछ झलकियां अपने इंस्टाग्राम अकाउंट के स्टोरीज सेक्शन में भी शेयर कीं हैं। तस्वीरों में उन्होंने रानी मुखर्जी के साथ पोज दिया जिन्होंने अपनी आंखों पर मास्क लगाया हुआ था। सिद्धार्थ मल्होत्रा और कियारा आडवाणी की बात करें तो दोनों को पहली बार पर्दे पर साल 2021 में आई फिल्म शेरशाह में साथ देखा गया था। हालांकि उन्होंने अपनी शादी की अफवाहों पर ध्यान नहीं दिया है।

तारा सुतारिया और आदर जैन का हो गया ब्रेकअप! कपूर खानदान की बहू बनने का टूटा सपना

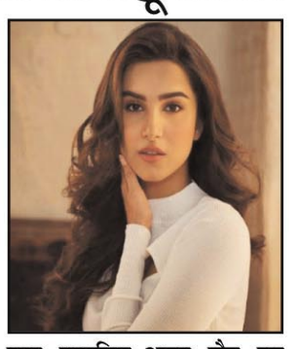

बॉलीवुड एक्ट्रेस तारा सुतारिया और आदर जैन लंबे समय से एक दूसरे को डेट कर रहे हैं लेकिन अब जो खबरे आ रही हैं उससे उनके फैंस का दिल टूट जाएगा। एक रिपोर्ट के मुताबिक दोनों का ब्रेकअप हो गया हैं। यानी की अब तारा सुतारिया कपूर खानदार की बहू नहीं बनेंगी। तारा आखिरी बार सिद्धार्थ मलहोत्रा के साथ फिल्म मरजावा में दिखाई दी थी। तब से वह पर्दे से गायब हो। माना जा रहा था कि दोनों सीरियस रिलेशनशिप में हैं। युगल अब टूट गए हैं और सौहार्दपूर्ण तरीके से अलग हो गए हैं। हालाँकि, नवीनतम रिपोर्टों के अनुसार, युगल अभी भी दोस्त बने हुए हैं। तारा रणबीर कपूर के चचेरे भाई आदर जैन को डेट कर रही थीं और उन्हें कपूर परिवार के कुछ समा-रोहों में देखा गया था। रिपोर्ट्स यह भी बताती हैं कि उनकी शादी की तैयारी चल रही थी।

तारा सुतारिया-आदर जैन का ब्रेकअप – रिपोर्टों के अनुसार, तारा और आदर ने सौहार्दपूर्ण तरीके से भाग लिया है और पारस्परिक रूप से अलग होने का फैसला किया है। करीबी सूत्र ने ईटाइम्स को बताया, "आदर और तारा ने सौहार्दपूर्ण तरीके से अलग होने का फैसला किया है। वे दोनों परिपक्व हैं और वे अभी भी दोस्त बने रहेंगे और एक-दूसरे की देखभाल करेंगे।" हालांकि, उनके ब्रेकअप के पीछे की वजह साफ नहीं हो पाई है। कपूर के हालिया क्रिसमस लंच से तारा के गायब होने के बाद उनके ब्रेकअप की खबरें आने लगीं। वह 2020 और 2021 में लंच पार्टी अटेंड करती नजर आई थीं। जबकि तारा और आधार वास्तव में पीडीए में नहीं थे, वे अक्सर सोशल मीडिया हैंडल पर एक-दूसरे की तस्वीरें डालते थे। पिछले अगस्त में तारा ने अपने जन्मदिन पर आदर के लिए एक प्यारा सा पोस्ट शेयर किया था। दोनों को साथ में पार्टी करते भी देखा गया था।

काम के मोर्चे पर तारा – इस बीच, तारा ने हाल ही में निखिल नागेश भट द्वारा अभिनीत और अभिषेक बनर्जी, राजपाल यादव, और धैर्य करवा द्वारा अभिनीत अपूर्वा की शूटिंग पूरी की। उन्हें आखिरी बार मोहित सूरी की एक विलेन रिटर्न्स में अर्जुन कपूर, जॉन अब्राहम और दिशा पटानी के साथ देखा गया था।

थुनिवु का ट्रेलर लांच 12 को होगी प्रदर्शित

नए साल 2023 की पूर्व संध्या पर निमार्ता बोनी कपूर और थुनिवु की पूरी टीम ने प्रशंसकों को फिल्म के ट्रेलर लांच कर तोहफा दिया। अजित कुमार अपने नए लुक में थुनिवु के साथ स्क्रीन पर आग लगाने के लिए पूरी तरह तैयार हैं। यह एक स्लिक एक्शन थ्रिलर है। एच विनोथ द्वारा निर्देशित फिल्म पोंगल से दो दिन पहले 12 जनवरी 2023 को सिनेमाघरों में प्रदर्शित होगी। अजित कुमार के अतिरिक्त फिल्म में मंजू वारियर भी मुख्य भूमिका में हैं। पोंगल के अवसर पर ही थलपति विजय की वरिसु का प्रदर्शन भी होने जा रहा है। दो बड़े सितारों की दो बड़ी फिल्मों का प्रदर्शन एक साथ होने से बॉक्स ऑफिस पर इन्हें नुकसान हो सकता है। हालांकि यह पक्का नहीं है। बताया जा रहा है कि दोनों फिल्मों का कैनवास और स्तर अलग-अलग है। दोनों फिल्मों के दर्शक अलग हैं इसी के चलते दोनों फिल्मों को सफलता मिलने की उम्मीद है।

सूडोकु नवताल- 6569

कठिन

		5			3			
	2			9	5			
9						6		
							3	5
	6						7	
4	8							
		7						3
			2	4			9	
			8			2		

Jagrutidaur.com, Bangalore

- प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक हैं.
- प्रत्येक आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 3×3 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें.
- पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते.
- पहेली का केवल एक ही हल है.

सूडोकु नवताल -6568 का हल

4	2	5	8	6	1	9	7	3
7	3	1	9	4	2	8	5	6
6	9	8	7	3	5	4	2	1
1	6	2	3	8	9	5	4	7
9	4	3	5	1	7	6	8	2
8	5	7	4	2	6	3	1	9
2	1	9	6	5	8	7	3	4
5	7	4	1	9	3	2	6	8
3	8	6	2	7	4	1	9	5

शब्द पहेली - 7633

1		2	3	■	4	5		6
	■	7		8			■	
9	10	■	■		■	■	11	
■		■	12		13	■		■
14				■	15			
■		■	16	17		■		■
18		■	■		■	■	19	20
	■	21	22		23	24	■	
25				■	26			

बाएँ से दाएँ

1. धनुर्धर-2,2
4. तरुणी, नाजनीन-4
7. संतुष्ट होना-5
9. टेलीग्राम-2
11. महोदय (अंग्रेजी-2)
12. कटि, कमरिया-3
14. फटकार, भर्त्सना-4
15. वतन, स्वेदश-4
16. पार होना, पार करना-3
18. विद्रोही-2
19. गरीब, निर्धन-2
21. लोचदार, लचकदार-5
25. पारंपरिक, पुरातन-4
26. कृष्ण भक्त एक मुस्लिम कवि-4

ऊपर से नीचे

1. शीघ्रता, जल्दी-3
2. मूल्य, कीमत-2
3. जनता, आम आदमी-2
4. किनारा, कोरा-2
5. इंकार, मनाही-2
6. पानी गर्म करने का यंत्र-3
8. भ्रम, वहम-3
10. साधू, संन्यासी-3,2
11. मुलायम सिंह की राजनीतिक पार्टी-5
12. कपड़े की दीवार-3
13. जिव्हा, जीभ-3
17. रसदार, रसभरा-3
18. कारण, वजह-3
20. नेत्र, लोचन-3
21. बुरी आदत-2
22. एक पड़ोसी देश-2
23. पराया, पंख-3
24. रग, नाड़ी-2

शब्द पहेली -7632 का हल

■	शा	र	दा	■	सा	हि	ल	■
दा	म	■	न	■	ल	■	त	ब
खि	■	प्रा	व	धा	न	■	■	रा
ल	व	ण	■	न	■	त	ह	त
■	■	ना	म	■	रा	ह	■	■
ती	र	थ	■	स	■	ल	ग	न
स	■	■	मु	च	ल	का	■	क
रा	ज	■	नी	■	ह	■	बे	टा
■	न	र	म	■	जा	हि	ल	■

Jagrutidaur.com, Bangalore

एडम मिल्ने ने पाकिस्तान-इंडिया वनडे सीरीज से नाम वापस लिया कारण- कमजोर तैयारी; नीशम-बोल्ट छोड़ चुके हैं कॉन्ट्रैक्ट

वेलिंग्टन।

न्यूजीलैंड के तेज गेंदबाज एडम मिल्ने ने पाकिस्तान और इंडिया के खिलाफ वनडे सीरीज से अपना नाम वापस ले लिया है। तैयारियों में कमी को इसकी वजह बताया जा रहा है। वर्तमान में पाकिस्तान के खिलाफ दूसरा टेस्ट खेल रही न्यूजीलैंड टीम के स्क्वॉड में शामिल ब्लेयर टिकनेर मिल्ने की जगह लेंगे। ब्लैककैप्स ने यह जानकारी दी। न्यूजीलैंड को पाकिस्तान के बाद भारत में 3 वनडे और 3 टी-20 मैचों की सीरीज खेलनी है। यह सीरीज 18 जनवरी से शुरू होगी।

मिल्ने के रिप्लेसमेंट पर कीवी सिलेक्टर गेविन लार्सन ने कहा, टिकनेर की गेंदबाजी स्किल्स हमें वह सब देती है। जिसकी उम्मीद हम एडम मिल्ने से करते हैं। वे फिलहाल पाकिस्तान दौरे पर हैं और वहां के कंडिशन को परख चुके हैं। तो यह हमारे लिए प्लस प्वाइंट है।

नवंबर-2022 में भारत के खिलाफ सीरीज के आखिर में मिल्ने की हैमस्ट्रिंग में कुछ जकड़न थी। उसके बाद उन्हें दिसंबर में वेलिंगटन के लिए न्यूजीलैंड के घरेलू 50 ओवर के टूर्नामेंट फोर्ड ट्रॉफी के दो मैच छोड़ने पड़े थे। बोल्ट-नीशम छोड़ चुके हैं कॉन्ट्रैक्ट मिल्ने से पहले जिमी नीशम और ट्रैंट बोल्ड अपना-अपना कॉन्ट्रैक्ट छोड़ चुके हैं।

ड्रॉ रहा था न्यूजीलैंड-पाकिस्तान पहला टेस्ट - पाकिस्तान और न्यूजीलैंड के खिलाफ पहला टेस्ट मैच ड्रॉ रहा था। दूसरा टेस्ट मैच कराची में जारी है।

भारत दौरे से पहले पाकिस्तान में 3 वनडे खेलेगी टीम - भारत का दौरा करने से पहले कीवी टीम को पाकिस्तान के खिलाफ उसके घर में 3 वनडे मैच खेलने हैं। पहला वनडे 9, दूसरा 11 और तीसरा 13 जनवरी को खेला जाएगा। इसके बाद टीम भारतीय दौरे पर आएगी।

अब देखिए न्यूजीलैंड का ओडीआई स्क्वॉड

पाकिस्तान के खिलाफ :

केन विलियमन (कप्तान), टॉम लॉथम, फिन एलेन, माइकल ब्रेसवेल, डेवोन कॉन्वे, लॉकी फर्ग्युसन, मैट हेनरी, ब्लेयर टेकनर, डेरिल मिचेल, हैनरी निकोलस, ग्लेन फिलिप्स, मिचेल सेंटनर, हेनर सिप्ले, ईश सोढी और टिम साउदी।

भारत के खिलाफ :

टॉम लॉथम (कप्तान), फिन एलेन, माइकल ब्रेसवेल, डेवोन कॉन्वे, लॉकी फर्ग्युसन, मैट हेनरी, ब्लेयर टेकनर, डेरिल मिचेल, हैनरी निकोलस, ग्लेन फिलिप्स, मिचेल सेंटनर, हेनर सिप्ले, ईश सोढी और जैकअप डफी और मार्क चैपमैन।

न्यूज ब्रीफ

उनादकट की रणजी के पहले ओवर में हैट्रिकः ऐसा करने वाले पहले बॉलर बने, दिल्ली के खिलाफ 8 विकेट लिए

राजकोट। सौराष्ट्र के कप्तान जयदेव उनादकट ने रणजी ट्रॉफी में इतिहास रच दिया। वो इस डोमेस्टिक टूर्नामेंट में मैच के पहले ओवर में हैट्रिक लेने वाले पहले गेंदबाज बन गए हैं। जयदेव ने दिल्ली के खिलाफ पहली पारी में 12 ओवर में 39 रन देकर 8 विकेट लिए। हाल ही में जयदेव बांग्लादेश दौरे से लौटे हैं। वहां उन्होंने 12 साल बाद टीम इंडिया में वापसी की और टेस्ट करियर का दूसरा मैच खेला। इस मैच में उन्होंने दोनों पारियों को मिलाकर 3 विकेट लिए थे। 31 साल के उनादकट ने 2010 में टेस्ट डेब्यू किया था। राजकोट के सौराष्ट्र क्रिकेट स्टेडियम में दिल्ली ने टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी करने का फैसला किया। मैच के पहले ही ओवर की तीसरी गेंद पर उनादकट ने ध्रुव शौरी को बोल्ड किया। अगली ही गेंद पर वैभव रावल को हार्विक देसाई के हाथों कैच करा दिया। इसी ओवर की आखिरी गेंद पर कप्तान यश ढुल को एलबीडब्ल्यू कर तीसरा विकेट लिया। इसके अलावा उन्होंने जोंटी सिधु, ललित यादव, लक्ष्य थरेजा, शिवांक वशिष्ठ और कुलदीप यादव को आउट किया। दिल्ली की पहली पारी महज 35 ओवर ही चली। उसने सभी विकेट खोकर 133 रन बनाए। ऋतिक शौकीन ने 90 गेंदों पर 68 रन बनाए। शिवांक वशिष्ठ ने 68 गेंदों पर 38 रन बनाए। सौराष्ट्र की ओर से जयदेव ने 8, चिराग जानी और प्रेरक मांकड़ ने एक-एक विकेट लिया।

टेनिस खिलाड़ी मार्टिना नवरातिलोवा पर कैंसर का डबल अटैकः गले और ब्रेस्ट कैंसर का पता चला; बोलीं- बीमारी से लड़ने के लिए तैयार

अमेरिका। 18 बार की ग्रैंड स्लैम विजेता टेनिस खिलाड़ी मार्टिना नवरातिलोवा को गले और ब्रेस्ट

कैंसर का पता चला है। वह इस महीने के अंत में न्यूयॉर्क में अपना इलाज करवाएंगी। 66 साल की इस अमेरिकी दिग्गज को साल 2010 में भी ब्रेस्ट कैंसर हुआ था, लेकिन तब वह कुछ ही महीनों में स्वस्थ हो गई थीं। मार्टिना नवरातिलोवा ने कहा कि उन्होंने पिछले सीजन के फाइनल के दौरान अपनी गर्दन में एक बढ़े हुए लिम्फ नोड को देखा था और जब यह दूर नहीं हुआ तो उन्होंने बायोप्सी करवाई। उसके बाद उन्हें पहले स्टेज के कैंसर का पता चला। नवरातिलोवा ने कहा, कैंसर का डबल अटैक गंभीर है लेकिन इसे ठीक किया जा सकता है। मैं पॉजिटीव हूं। मुझे उम्मीद है कि मैं जल्द ही इससे उबर जाऊंगी। इससे थोड़ी देर के लिए बदबू आने वाली है, लेकिन मैं उससे लड़ूंगी। नवरातिलोवा को आगामी ऑस्ट्रेलियन ओपन के लिए एक चैनल की कमेंट्री टीम में शामिल किया गया था। ऑस्ट्रेलियन ओपन 16 से 29 जनवरी के बीच खेला जाना है। अब वह वर्चुअली रूप से इससे जुड़ सकती हैं। मार्टिना नवरातिलोवा के नाम 18 ग्रैंड स्लैम हैं। उन्होंने सबसे ज्यादा 9 बार विंबलडन खिताब जीता है। इसके साथ 3 ऑस्ट्रेलियन ओपन, और 2 फ्रेंच ओपन अपने नाम किए हैं।

डिफेंडिंग चैम्पियन पीएसजी की मार्च के बाद पहली हारः दूसरे नंबर की टीम लेंस ने 3-1 से हराया

लेंस। फ्रांस के फुटबॉल क्लब पेरिस सेंट जर्मेन (पीएसजी) को घरेलू लीग में पहली हार का सामना करना पड़ा। लीग-1 की डिफेंडिंग चैम्पियन पीएसजी को लेंस टीम ने घरेलू मैदान पर 3-1 से शिकस्त दी। यह पीएसजी की मार्च के बाद पहली हार है। पिछले साल 20 मार्च को पीएसजी को मोनाको ने 3-0 से हराया था। घरेलू स्टेड बोलाअर्ट स्टेडियम पर लेंस की ओर से पी. फ्रेंकोस्की ने पांचवें, लोइस ओपेंडा ने 28वें और एलेक्सिस क्लॉडे मॉरिस ने 47वें मिनट में गोल किए। पीएसजी के लिए ह्यूगो एकिटिके ने 8वें मिनट में गोल किया। यह लेंस की पीएसजी के खिलाफ नौवीं जीत है। दोनों टीमें आपस में 24 बार भिड़ी हैं, जिसमें से पीएसजी ने 9 मैच जीते जबकि 6 मुकाबले ड्रॉ रहे।

भारतीय टीम ने पंत को बताया फाइटर

कोच द्रविड़ और साथी बोले- मिस यू चहल बोले- आ जा चौके-छक्के मारते हैं

मुंबई।

एक्सीडेंट में बुरी तरह घायल इंडियन विकेटकीपर को कोच राहुल द्रविड़ और टीम के साथियों ने फाइटर बताया है। राहुल द्रविड़ और टीम के साथियों ने वीडियो मैसेज में पंत के जल्द ठीक होने की उम्मीद की है। युजुवेंद्र चहल ने कहा कि जल्दी आ जाओ, चौके-छक्के मारेंगे। 30 दिसंबर को दिल्ली से रुड़की जाते वक्त पंत का एक्सीडेंट हो गया था। उनके सिर, घुटने और टखने में भी चोट आई है। देहरादून के मैक्स अस्पताल में उनका इलाज चल रहा है। उन्हें अब सामान्य वार्ड में शिफ्ट कर दिया गया। **द्रविड़:** आपके पास मुश्किल परिस्थितियों से निकलने की काबिलियत राहुल द्रविड़ ने कहा, हैलो ऋषभ, उम्मीद है तुम जल्दी ठीक हो जाओगे। मेरा ये सौभाग्य रहा है कि पिछले एक साल में टेस्ट क्रिकेट में मैं तुम्हें कुछ बेहतरीन पारियां खेलते हुए देख पाया हूं। तुम्हारे पास वह काबिलियत है कि तुम मुश्किल परिस्थितियों से निकल आओगे।

हार्दिक- तुम फाइटर हो, जल्द ठीक होकर वापस आओगे - वहीं हार्दिक ने कहा, मैं आपके जल्दी स्वस्थ होने की कामना करता हूं। मैं जानता हूं तुम एक फाइटर हो और जल्दी ही ठीक होकर हमारे पास वापस आओगे। पूरी टीम और पूरा देश तुम्हारे साथ है।

सूर्य कुमार यादव- तुम्हें मिस कर रहे हैं, ख्याल रखो भाई - श्रीलंका के खिलाफ टी-20 सीरीज के लिए पहली बार टीम के वाइस कैप्टन बनाए गए सूर्यकुमार यादव ने कहा, मैं चाहता हूं कि तुम जल्दी से ठीक हो जाओ ऋषभ, लेकिन हमें पता है कि अभी कैसी परिस्थिति है। हम सभी आपको मिस कर रहे हैं और अपना ख्याल रखो भाई।

ईशान, चहल और गिल- साथ में खेलेंगे, चौके-छक्के मारेंगे - युजवेंद्र चहल ने कहा- जल्दी ठीक हो कर आ जाओ भाई, साथ में चौके और छक्के मारते हैं। ईशान किशन और शुभमन गिल ने कहा कि हम दुआ करते हैं कि आप जल्दी ठीक हो जाओ। आप फाइटर हो। हमें उम्मीद है कि जल्द ही

हम सब साथ में खेलेंगे

आईसीयू से बाहर आए पंत - कार एक्सीडेंट में घायल हुए टीम इंडिया के विकेटकीपर बैटर ऋषभ पंत आईसीयू से बाहर आ गए हैं। हालांकि, उनके घुटने, टखने और अंगूठे की चोट पर सस्पेंस बरकरार है। इनका स्कैन नहीं हो सका है। इसकी वजह यह है कि इन जख्म वाली तीनों जगहों पर ब्लड क्लॉटिंग और स्वैलिंग है।

टीम इंडिया में बुमराह की वापसीः श्रीलंका से वनडे सीरीज खेलेंगे, 5 महीने पहले चोट लगी थी

मुंबई। श्रीलंका के खिलाफ घरेलू सीरीज के लिए चोट की वजह से टीम से बाहर चल रहे जसप्रीत बुमराह को टीम में शामिल किया है। बयान में इसकी जानकारी दी गई है। बुमराह पहले वनडे के लिए घोषित किए गए टीम में शामिल नहीं थे। श्रीलंका के खिलाफ तीन वनडे मैचों की सीरीज का पहला मैच 10 जनवरी को गुवाहटी में खेला जाना है। बुमराह पिछले साल सितंबर से टीम से बाहर थे। बुमराह पिछले साल साउथ अफ्रीका के खिलाफ 29 सितंबर शुरू होने वाले घरेलू टी-20 मैचों की सीरीज से एक दिन पहले प्रैक्टिस के दौरान चोटिल हो गए थे। उससे एक हफ्ते पहले ही वह ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ 20 सितंबर से शुरू हुए 3 टी-20 मैचों की सीरीज से चोट के बाद वापसी की थी। हालांकि, वह पहला मैच नहीं खेले और उसके बाद वह दूसरे और तीसरे मैच में प्लेइंग इलेवन का हिस्सा रहे। उसके बाद फिर से वह चोटिल हो कर बाहर हो गए। ऑलराउंडर रविंद्र जडेजा भी पिछले साल अगस्त में यूएई में खेले गए एशिया कप के दौरान चोटिल हो गए थे। उनके घुटने में चोट आई थी। जिसके बाद उनकी सर्जरी हुई। वह भी अभी टीम इंडिया से बाहर है। श्रीलंका के लिए वनडे टीम - रोहित शर्मा (कप्तान), शुभमन गिल, विराट कोहली, सूर्यकुमार यादव, श्रेयस अय्यर, केएल राहुल (विकेटकीपर), ईशान किशन (विकेटकीपर), हार्दिक पांड्या , वाशिंगटन सुंदर, युजवेंद्र चहल, कुलदीप यादव, अक्षर पटेल, जसप्रीत बुमराह, मो. शमी, मो. सिराज, उमरान मलिक, अर्शदीप सिंह।

सांतोस क्लब स्टेडियम में रखा गया पेले का पार्थिव शरीरः किया जाएगा अंतिम संस्कार, दर्शन के लिए उमड़ रही है भीड़

सैंटोस।

दुनियाभर के फैंस पेले के निधन पर शोक में हैं। ब्राजील के शहर सैंटोस में, जहां पेले ने स्टारडम हासिल किया और करियर का अधिकांश वक्त बिताया, वह शहर पेले के जाने से ज्यादा ही दुखी है। साओ पाउलो स्थित विला बेलमिरो स्टेडियम में पेले को देखने के लिए फैंस लगातार पहुंच रहे हैं। पेले का पार्थिव शरीर यहां रखा गया है। सांतोस के कब्रिस्तान मेमोरियल नेक्रोपोले एक्यूमेंनिका में उनका अंतिम संस्कार होगा।

घर के रास्ते गुजरेगा उनका पार्थिव शरीर

पेले के पार्थिव शरीर को सांतोस की सड़कों से ले जाया जाएगा और उनकी मां के घर के सामने से गुजरेगा। 100 साल की मां बिस्तर से उठ नहीं सकती हैं। पेले का सांतोस में एक घर है, जहां उन्होंने अपना अधिकांश जीवन व्यतीत किया था। उन्होंने अपने आखिरी साल गुआरुजा शहर में बिताए थे। पेले के अंतिम संस्कार के समय केवल उनका परिवार ही मौजूद रहेगा।

सांतोष क्लब से गहरा नाता रहा है पेले का

पेले का सांतोष क्लब से गहरा नाता रहा है। उन्होंने करियर की शुरुआत सांतोष क्लब से किया था। 15 साल की उम्र में उन्होंने 1956 में सांतोष क्लब के साथ करार किया था। पेले ने सांतोस के लिए अपने पहले ही मैच में गोल दाग दिया था। उसके बाद से वह टीम अहम सदस्य बन गए। वह 1974 तक क्लब के साथ जुड़े रहे। पेले 1975 से 1977 तक न्यूयॉर्क कॉसमॉस क्लब के लिए भी खेले। पेले के साथ करार करने के लिए इटली के क्लब युवेंटस, स्पेन के क्लब बार्सिलोना, रियल मैड्रिड और इंग्लैंड के क्लब मैनचेस्टर यूनाइटेड ने कई प्रयास किए। बड़े-बड़े ऑफर के बावजूद पेले ने सांतोस का साथ नहीं छोड़ा। वह इसी क्लब के साथ जुड़े रहे।

हार्दिक ने टीम से कहा, श्रीलंकाइयों से स्लेजिंग ना करेंः बोले उन पर प्रेशर बनाने के लिए हमारी बॉडी लैंग्वेज ही काफी है

मुंबई।

श्रीलंका के खिलाफ 3 टी-20 मैचों की सीरीज का पहला मैच खेला जाना है। टीम की कप्तानी हार्दिक पंड्या कर रहे हैं। रोहित और विराट सहित कई सीनियर्स खिलाड़ियों को सीरीज से आराम दिया गया है। भारत ने श्रीलंका के साथ पिछला मुकाबला टी-20 में एशिया कप के दौरान खेला था। जिसमें भारत को हार मिली थी।

पंड्या ने मैच से पहले प्रेस वार्ता में कहा कि वह एशिया कप में जो हुआ, उसे भूलकर आगे बढ़ना चाहते हैं। उन्होंने कहा, मैं भरोसा दिलाता हूं कि मैच में हमारे खिलाड़ी दबाव बनाने के लिए श्रीलंकाई खिलाड़ियों पर किसी भी प्रकार का स्लेजिंग नहीं करेंगे। उन पर मानसिक दबाव बनाने के लिए हमारा बॉडी लैंग्वेज ही काफी है। वे भारत में खेल रहे हैं, उनका उन्हें सुखद अहसास हो।

रक्षात्मक नहीं निडर हो कर खेलेंगे

पंड्या ने आगे कहा, ऑस्ट्रेलिया में हुए टी-20 वर्ल्ड कप में हमारी टीम ने रक्षात्मक रूप से खेला। पर श्रीलंका के खिलाफ मैं चाहता हूं कि खिलाड़ी निडर होकर खुद को एक्सप्रेस करें। यह हमारे ऊपर है कि हम उनका सपोर्ट कैसे करते हैं। हमने प्लेयर्स से कहा है कि आपका पूरा साथ देंगे। मैं भी अपनी तरफ से सभी खिलाड़ियों का पूरा सहयोग दूंगा।

ईशान किशन के साथ ऋतुराज गायकवाड़ कर सकते हैं पारी की शुरुआत

श्रीलंका के खिलाफ घरेलू सीरीज में कप्तान रोहित शर्मा, विराट कोहली, भुवनेश्वर कुमार और केएल राहुल को आराम दिया गया है। ऐसे में ईशान किशन के साथ ऋतुराज गायकवाड़ और शुभमन गिल ओपनिंग कर सकते हैं। हालांकि, प्रेस कांफ्रेंस में हार्दिक प्लेइंग इलेवन को लेकर खुलकर कुछ नहीं बोले।

अमेरिका में मैदान पर गिरा खिलाड़ी, सीपीआर के बाद भी नहीं उठा तो रोने लगे साथी, हालत नाजुक

सिनसिनाटी।

अमेरिका में चल रहे नेशनल फुटबॉल लीग के दौरान एक हादसे ने खेल जगह को निराशा में डाल दिया है। एनएफएल में एक मुकाबले में अमेरिकी फुटबॉल के स्टार खिलाड़ी डमर हैमलिन विपक्षी खिलाड़ी से टकराने के बाद मैदान पर गिर गए। उन्हें मैदान पर ही सीपीआर दिया गया, लेकिन वह काम नहीं आया। डमर को तुरंत ही अस्पताल में भर्ती किया गया। वहां डमर मौत से जंग लड़ रहे हैं। एनएफएल की टीम बफेलो बिल्स के खिलाड़ी डमर सिनसिनाटी बेंगल्स के खिलाफ खेल रहे थे। मैच के पहले क्वार्टर के दौरान गेंद पकड़ने की कोशिश में वह दूसरी टीम के खिलाड़ी टी हिगिंस से टक्कर खा गए। विपक्षी टीम का सिर उनकी छाती पर जोर से लगा। दूसरी टीम के खिलाड़ी ने हेमलेट पहन रखा था। उससे डमर को जोर से चोट लगी और मैदान पर गिर गए।

साथी खिलाड़ी ने उन्हें उठाया। डमर उठने के बाद अचानक से मैदान बेसुध होकर गिर गए।

डमर के बेसुध होने के बाद मेडिकल टीम तुरंत ही दौड़कर मैदान पर गई। उन्हें सीपीआर दिया गया, लेकिन इसका डमर पर कोई असर नहीं हुआ। फिर उन्हें तुरंत ही अस्पताल ले जाया गया। डॉक्टर के मुताबिक, डमर की हालत गंभीर है। उनकी जान खतरे में है। टीम के मुताबिक, डमर को हार्ट अटैक आया है। इस हादसे के बाद मुकाबले को सस्पेंड कर दिया गया। डमर के साथी और फैंस उनके ठीक होने के लिए दुआएं कर रहे हैं।

ऐसा ही वाकया 2021 में यूरो कप के दौरान हुआ था। हालांकि, तब खिलाड़ी को टक्कर नहीं लगी थी। दरअसल, डेनमार्क के स्टार फुटबॉलर क्रिश्चियन एरिक्सन मैदान पर अचानक गिरे गए थे। उन्हें हार्ट अटैक आया था। एरिक्सन को मैदान पर सीपीआर दिया गया था। उससे उनकी जान बच गई थी। फिर उन्हें अस्पताल में भर्ती किया था और वह ठीक होकर बाहर आए। अब एरिक्सन उच्च स्तर पर फुटबॉल खेल रहे हैं। फैंस को उम्मीद है कि डमर भी एरिक्सन की तरह वापसी करने में सफल रहेंगे।

रणजी में पहले के मुकाबले ज्यादा नतीजे निकल रहे

इंटरनेशनल खिलाड़ियों पर भारी पड़ रहे युवा सितारे

मुंबई।

मौजूदा रणजी सीजन का चौथा राउंड मंगलवार से खेला जाएगा। टूर्नामेंट में शामिल 38 टीमें 19 मुकाबलों में देशभर के अलग-अलग मैदानों पर दो-दो हाथ करती नजर आएंगी। प्रमुख मैचों में मुंबई का तमिलनाडु, मध्य प्रदेश का विदर्भ, सौराष्ट्र का दिल्ली और आंध्र प्रदेश का हैदराबाद से सामना होगा। अन्य मुकाबलों में गुजरात-पंजाब, राजस्थान-झारखंड, उत्तराखंड-बंगाल, बड़ौदा-हिमाचल, बिहार-सिक्किम, उत्तर प्रदेश-हरियाणा और चंडीगढ़-त्रिपुरा भी भिड़ेंगे। शुरुआती तीन राउंड के बाद उत्तराखंड, मुंबई, कर्नाटक और मध्य प्रदेश एलीट कैटेगरी में अपने-अपने ग्रुप में टॉप पर चल रहे हैं। प्लेट कैटेगरी में मेघालय टॉप पर बना हुआ है। टूर्नामेंट में कुल 7 राउंड होंगे, जिनके बाद प्रत्येक एलीट ग्रुप में टॉप पर रही दो टीमें क्वार्टरफाइनल के लिए क्वालिफाई करेंगी। टूर्नामेंट के पिछले तीन राउंड के बाद कैसा रहा है टीमों का प्रदर्शन, कौनसे खिलाड़ी उभरे और दिखे कौनसे नए ट्रेंड्स, इस पर एक नजर एनालिसिस में:

10 बल्लेबाजों का औसत 100 से ऊपर, इनमें 2 खिलाड़ी प्लेट ग्रुप के - मौजूदा रणजी सीजन में भारत के बल्लेबाजी टैलेंट की झलक देखने को मिल रही है। प्रतियोगिता के पहले तीन राउंड के बाद 10 बल्लेबाजों का औसत 100 से ऊपर का है। इन 10 में से 2 बल्लेबाज प्लेट कैटेगरी में से हैं, जिसमें तुलनात्मक रूप से टूर्नामेंट की कमजोर टीमों को रखा गया है। सबसे बेहतर औसत राजस्थान के दीपक हुड्डा का है, जिन्होंने 2 मचों में 191 के औसत से 382 रन बनाए हैं। इस साल रणजी ट्रॉफी में

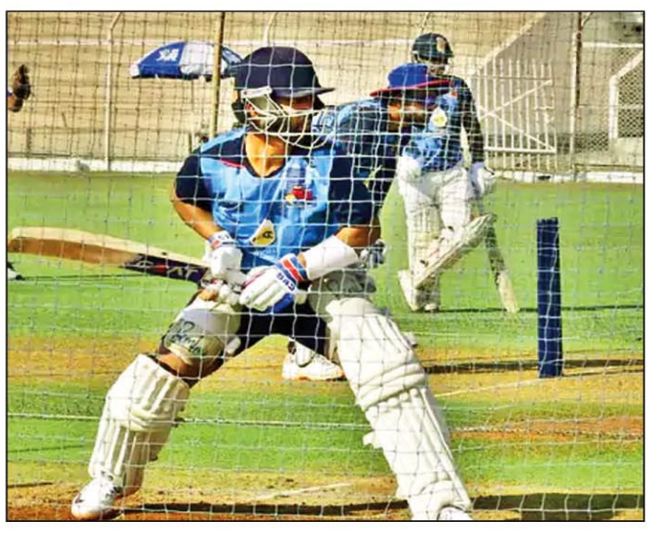

अजिंक्य रहाणे, मनीष पांडे, सूर्यकुमार यादव, ऋद्धिमान साहा जैसे इंटरनेशनल खिलाड़ी भी हिस्सेदारी कर रहे हैं। हालांकि, टूर्नामेंट के टॉप स्कोरर्स में दीपक हुड्डा को छोड़कर सभी वे खिलाड़ी हैं, जिनका अभी तक किसी भी फॉर्मेट में डेब्यू नहीं हुआ है।

तीसरे राउंड में नतीजों की संख्या बढ़ी, 19 में से 15 मैचों में रिजल्ट - तीसरे राउंड में पहले दो राउंड के मुकाबले ज्यादा मैचों का नतीजा निकला और कम मैच ड्रॉ पर समाप्त हुए। टूर्नामेंट के पहले राउंड में 19 में से 12 मैचों का नतीजा निकला था। दूसरे राउंड में 19 में से 11 मैचों का ही नतीजा निकल सका। हालांकि, तीसरे राउंड में नतीजों की संख्या बढ़ी और 19 में से 15 मैच किसी टीम की जीत या हार पर समाप्त हुए। इस दौरान सौराष्ट्र ने पहली बार मुंबई के खिलाफ जीत भी दर्ज की।

स्पिनर्स हावी, लेकिन पारी में बेस्ट प्रदर्शन 16 साल के पेसर का - इस साल अभी तक भविष्य के तेज गेंदबाज की झलक नहीं दिखी है। हालात ये हैं कि टॉप-10 गेंदबाजों में सिर्फ एक मीडियम पेसर है और बाकी सभी स्पिनर हैं। टॉप-10 गेंदबाजों में प्लेट कैटेगरी के भी 3 खिलाड़ी हैं। मेघालय के राजेश बिश्नोई और केरल के जलज सक्सेना 3 मैचों में 26 विकेट चटकाकर टूर्नामेंट में सबसे ज्यादा 26 विकेट लेने वाले गेंदबाज हैं।

सिक्किम के पलजोर तमांग टॉप-10 में इकलौते मीडियम पेसर हैं, जिन्होंने 3 मैचों में 21 विकेट लिए हैं। हालांकि, पारी में सबसे ज्यादा विकेट का रिकॉर्ड प्लेट ग्रुप की टीम मणिपुर के 16 साल के पीजे सिंह के नाम है। उन्होंने सिक्किम के खिलाफ 9 विकेट लिए थे।

घर संसार

पार्टी में जाने से पहले नहीं भूलनी चाहिए ये बात..

लड़कों के लिए सुबह ऑफिस जाकर आठ घंटे काम करने के बाद शाम को पार्टी अटैंड करना सचमुच किसी चुनौती से कम नहीं होता है। ऐसे में जब वह किसी पार्टी मे जाते हैं तो बिना किसी खास तैयारी के ही पहुंच जाते हैं।

आज हम आपको बताएंगे कुछ ऐसी बात जो लड़को को पार्टी में जाने से पहले नहीं भूलनी चाहिए। जब आप पूरा दिन दफ्तर में काम करने के बाद पार्टी में जाते हैं तो आपके फेस पर थकान साफ नजर आती है। ऐसी सिचुएशन में आपको कुछ ही समय में होने वाले एनर्जाइजिंग स्क्रब की जरूरत होती है। यह चेहरे से गंदगी और मृत कोशिकाओं को हटाने के लिए सबसे आसान तरीका है। इसके बाद आपके चेहरे पर पार्टी में अलग ही चमक आएगी।

* बालों पर दें ध्यान

अगर आपको कुछ घंटो के बाद किसी पार्टी में जाना है तो आप ड्राई शैम्पू कर सकते हैं। बालों को गीला दिखाने के लिए आप जेल या क्रीम का इस्तेमाल कर सकते हैं। पार्टी चाहे कोई भी हो रूखे और बेजान बाल दिखना कोई अच्छी बात नहीं है। अगली बार किसी भी पार्टी में जाने से पहले अपने बालों पर ध्यान जरूरी दें।

* परफ्यूम का स्प्रे करना ना भूलें

अगर आपने डिओडोरेंट का उपयोग कर रखा तो फिर भी बॉडी पर परफ्यूम का स्प्रे करना ना भूलें। अक्सर लोग स्प्रे केवल अपनी गर्दन पर करते हैं। लेकिन हमारी आपको सलाह है कि आप स्प्रे चेस्ट और अंडर आर्म्स पर इसका उपयोग करें। क्योंकि शरीर के ये भाग अधिक गंध से ग्रस्त होते हैं।

नाखूनों पर दें विशेष ध्यान

लड़कों को पार्टी में जाने से पहले अपने नाखूनों पर भी विशेष तौर पर ध्यान देना चाहिए। क्योंकि पार्टी में अक्सर खाने की प्लेट और ग्लास पकड़कर बातें करने के ज्यादा मौके आते हैं। इन मौकों पर सामने वाले व्यक्ति का ध्यान आपके हाथों और नाखूनों पर जाना लाजमी है। इसलिए पार्टी में जाने से पहले अपने नाखूनों की साफ सफाई पर जरूर ध्यान दें। बालों पर आप जेल या क्रीम का इस्तेमाल कर सकते हैं।

माउथवॉश हमेशा रखें पास

अगर आपकी सांस में से बदबू आती है तो आपको अपने साथ हमेशा माउथवॉश रखना चाहिए। इसके अलावा इलायची या सौंफ बीज के चबाने से भी सांस की बदबू से निपटने में मदद कर सकते हैं।

फैशनेबल और ट्रेंडी दिखना है तो बोहो को अपनाएं

बोहेमियन, यह शब्द कहते ही दिमाग में लूज और ग्रेसफुल ड्रेसेज या टॉप्स की तस्वीर उभरती है जिसमें लेयर्स और सिल्वेट होते हैं और उन्हें पहनकर बेहद कंफर्टेबल महसूस होता है। बोहेमियन फैशन, वेस्टर्न और इंडियन स्टाइल्स के बीच लयबद्ध लिंक की तरह है। डिजाइनर साक्षा भट्ट कहते हैं, इस ट्रेंड में भारत के फ्लोरल नोमैडिक प्रिंट्स को वेस्टर्न फ्लोइ सिल्वेट और कट्स के साथ फ्यूजन कर बनाया जाता है।

बोहो लुक्स के लिए आप इन 7 तरीकों को आजमा सकते हैं-

1. **काफ्तान-** लूज, कलरफुल और कंफर्टेबल काफ्तान भी बोहेमियन लुक का हिस्सा है। आप चाहें तो पुराने शॉल या स्टोल का इस्तेमाल कर काफ्तान बना सकती हैं। अपने इस लुक को झोला, कोल्हापुरी और ब्राइट कलर के बीड्स के साथ फिनिश करें।

2. **ईकाट-** मिट्टी के रंग के ईकाट फैब्रिक या कॉटन फैब्रिक का इस्तेमाल करें। इसे आप फुलर पैंट्स या मैनस्कर्ट्स के साथ पेयर करके पहन सकती हैं।

3. **पैच करें-** आप चाहें तो साड़ी में भी बोहो लुक को अपना सकती हैं। इसके लिए पैचवर्क साड़ी का इस्तेमाल करें।

4. **लेयर्स यूज करें-** स्कार्फ, दुपट्टा, जैकेट, श्रग या लॉन्ग शर्ट का इस्तेमाल कर आप अपने कपड़े में मल्टिपल लेयर्स बना सकती हैं।

5. **ओवरसाइज-** आप चाहें तो कोई ओवरसाइज्ड सिल्वेट पहन सकती हैं। इस स्टाइल के लिए ओवरसाइज्ड पैंट्स के साथ फिटेड टॉप या फिटेड पैंट्स के साथ ओवरसाइज्ड टॉप का इस्तेमाल भी कर सकती हैं।

6. **स्कार्फ का करें इस्तेमाल-** किसने कहा कि आप स्कार्फ को सिर्फ गले पर बांध सकती हैं। आगे बढ़े और इसे सिर पर बांधकर और भी स्टाइलिश बन जाएं।

7. **प्रिंट्स को करें मिक्स-** अलग-अलग तरह के प्रिंट्स को मिक्स करना भी क्लासिक बोहेमियन ट्रिक है। हालांकि इसमें एक जैसे कलर टोन ही रखें। एक्सट्रा इफेक्ट के लिए अक्सेसरीज का ध्यान रखें।

5 मिनट में तरोताजा हो जाएगा थका हुआ चेहरा

अगर आपके पास अपनी थकी हुई स्किन को दोबारा तरोताजा बनाने के लिए ढेर सारे ब्यूटी प्रॉडक्ट्स और समय नहीं है तो हम आपको बता रहे हैं बेहद आसान ट्रिक जिसका इस्तेमाल कर महज 5 मिनट में आपका थका हुआ चेहरा फिर से फ्रेश हो जाएगा...

1. गुलाब जल

गुलाब जल यानी रोज वॉटर में हाइड्रेटिंग और ब्राइटनिंग प्रॉपर्टी होती है। रूई को गुलाब जल में भिगोएं और उससे अपना चेहरा साफ करें। आप देखेंगे कि ऐसा करते ही आपका चेहरा तुरंत रिफ्रेश लगने लगेगा। साथ ही गुलाब जल की खुश्बू, दिन की थकान को भी दूर कर देती है।

2. शहद का फेसपैक

शहद में मौजूद विटमिन बी और सी स्किन को पोषण देते हैं। शहद की कुछ बूंदों से चेहरे को धोएं और फिर ठंडे पानी से चेहरा साफ कर लें, आप देखेंगी कि शहद की वजह से चेहरे से थकान तुरंत गायब हो जाएगी। इंस्टेंट फ्रेशनेस के लिए आप दही और शहद का पैक बनाकर चेहरे पर 5 मिनट तक लगाकर रखें और फिर पानी से धो लें।

3. लेमन बेस्ड फेसवॉश

ज्यादातर लेमन बेस्ट फेसवॉश में ऐसी प्रॉपर्टीज होती है जो आपकी स्किन को एनर्जाइज करते हैं। साथ ही नींबू की साइट्रस सुगंध भी आपको फ्रेश फील करने में मदद करती है।

4. पेट्रोलियम जेली

आंखों की आइलिड्स और चेहरे के चीक बोन्स पर थोड़ा सा पेट्रोलियम जेली लगाएं और चेहरे को इंस्टेंट फ्रेश बनाएं। पेट्रोलियम जेली लगाने से चेहरा ग्लॉसी और फेशल कराया हुआ जैसा भी दिखने लगेगा।

5. मस्कारा यूज करें

सबसे पहले ट्रांसपेरेंट आईलाइनर लगाएं, फिर अपनी पलकों पर थोड़ा सा इशेंल ऑयल लगाएं और फिर पलकों पर ढेर सारा मस्कारा लगा लें। पहला कोट सूख जाए फिर मस्कारा का दूसरा कोट लगाएं ताकि आपकी पलकें मोटी दिखें। इससे भी चेहरे की थकान गायब हो जाएगी।

स्वास्थ्य टिप्स

सर्दी के मौसम में एलर्जी से ऐसे रहें दूर, अपनाएं ये टिप्स

सर्दियों के दौरान मौसम में अचानक बदलाव होने से सर्दी, जुकाम से परेशान और त्वचा पर चकत्ते से पीड़ित रोगियों की संख्या बढ़ जाती है। साथ ही मौसम में एलजी के मामले भी अधिक देखने को मिलते हैं। कुछ लोगों को सांस लेने की समस्या और शरीर में खुजली की समस्या का भी सामना करना पड़ता है।

इंडस हेल्थ प्लस में प्रिवेन्टिव हेल्थकेयर स्पेशलिस्ट कंचन कहती हैं कि सर्दियों में लोग घरों के अंदर इनडोर एलर्जी के शिकार हो जाते हैं, जैसे धूल कण, सूक्ष्म जीवाणु और फफूंदी से जुड़ी एलजी क्योंकि इस मौसम में वे ज्यादा समय घरों में रहते हैं। फफूंदी और घरों की गंदगी दमा रोग बढ़ाती हैं। इससे खांसी, गले में घरघराहट और सांस लेने में तकलीफ होती है। शहरों में प्रदूषण के बड़े स्तर को भी देखा गया है। इस तरह की एलर्जी को रोकने के लिए घर और आसपास की जगह को साफ-सुथरा रखना चाहिए।

एलर्जी को रोकने के संबंध में सुझाव

1. घर में धूल व गंदगी से कालीन और बिस्तर पर सूक्ष्म रोगाणु पनपने लगते हैं। जो एलर्जी का कारण बनते हैं। एलर्जी के कारण की पहचान के लिए एक खास खून जांच है, जिसका नाम है कॉम्प्रीहेन्सिव एलर्जी टेस्ट। एक बार एलर्जी का कारण पता चल जाता जाने पर इलाज को शुरू किया जा सकता है।

2. धूल कणों और सूक्ष्म रोगाणुओं से बचाव के लिए घर के अंदर हवा के प्रवाह में सुधार लाएं और रसोईघर, गुसलखाने व कमरों को साफ-सुथरा रखें। घर और कालीन की नियमित रूप से सफाई करें।

3. एलर्जी से पीड़ित लोग खुद को धूल और गंदगी से दूर रखें। दमा और गले की सूजन से पीड़ित लोगों को डॉक्टर की सलाह लेनी चाहिए। त्वचा की एलर्जी या चकत्ते से पीड़ित लोगों को भी डॉक्टर से सलाह लेनी चाहिए।

पपीता में कई रोगों का इलाज, अपनी डाइट में करें शामिल

पपीता आसानी से हजम होने वाला फल है। पपीता भूख व शक्ति को ब?ाता है। यह कई रोगों को समाप्त करता है।

पेट के रोगों को दूर करने के लिए पपीते का सेवन करना लाभकारी होता है। पपीते के सेवन से पाचनतंत्र ठीक होता है।

पपीते का रस अरूचि, नींद का न आना, सिर दर्द, कब्ज व आंवदस्त आदि रोगों को ठीक करता है।

पपीते का रस सेवन करने से अम्लपित्त (खट्टी डकारें) बंद हो जाती है। पपीता पेट रोग, हृदय रोग, आंतों की कमजोरी आदि को दूर करता है।

पके या कच्चे पपीते की सब्जी बनाकर खाना पेट के लिए लाभकारी होता है।

पपीते के पत्तों के उपयोग से उच्च रक्तचाप में लाभ होता है और हृदय की ध?कन नियमित होती है।

पपीता वीर्य को ब?ाता है, पागलपन को दूर करता है एवं वात दोषों को नष्ट करता है।

इसके सेवन से जख्म भरता है और दस्त व पेशाब की रुकावट दूर होती है।

कच्चे पपीते का दूध त्वचा रोग के लिए बहुत लाभकारी होता है।

पपीते के बीज की? को नष्ट करने वाला और मासिक-धर्म को नियमित बनाने वाला होता है।

कच्चे आहार और उनके फायदों के बारे में जानें

सबसे अधिक कच्चे खाद्य पदार्थ अक्सर सिर्फ शाकाहारी होते हैं। लेकिन कुछ कच्चे खाद्य पदार्थ में गैरपाश्चुराईज डेयरी उत्पाद, कच्चा मांस, कच्चे अंडे, और सुशी (जापानी भोजन) भी खाये जाते हैं । अधिकांश लोगों मानते है कि खाद्य पदार्थ पकाया जाना चाहिए या 116 से 118 ए फॉरेनहाइट तक गर्म हो, लेकिन जो लोग कच्चे खाद्य पदार्थ के विचार में विश्वास करते हुए मानते हैं कि पकाने से खाद्य पदार्थ के एंजाइमों नष्ट हो जाते हैं और इसमे कई पोषण संबंधी लाभ है। कच्चे खाद्य पदार्थ के समर्थको का कहना कि बिमारियों के जोखिम जैसे मधुमेह और उच्च रक्तचाप में प्रसंस्कृत खाद्य पदार्थ, पशु उत्पादों, पाश्चयुराईजड खाद्य पदार्थ और रासायनिक योजक के साथ खाद्य पदार्थ को खाने से वृद्धि होती है।

क्या खा सकते हैं आप

फल और सब्जियां, बादाम, अनाज और बीज वाले खाद्य पदार्थ, जडी बूटी और मसाले कुछ गैरपाश्चयुरीकृत डेयरी उत्पाद, कच्चे मांस, कच्चे अंडे,और सुशी भी खाये जा सकते है। कुछ कच्चे खाद्य पदार्थ जैसे उबला हुआ पास्ता या एक बेक्ड आलू को सीमित मात्र में पकाया जाता है। लेकिन ये खाद्य पदार्थ आपके कुल दैनिक खाद्य पदार्थ से कम से कम 25 होना चाहिए। कच्चे खाद्य पदार्थ में कच्चे मांस आमतौर पर मछ्ली या चिकन है। आहार के इस प्रकार में खाद्य पदार्थ मिश्रण, सूखे चूर्ण या जूस हो सकता है। यदि आप अपने भोजन के कच्चे खाद्य पदार्थ ही खा रहे तो आपके भोजन का कम से कम 75 प्रतिशत हिस्सा बिना पका या कच्चा होना चाहिए। कच्चे खाद्य पदार्थ का सिद्धांत है कि यदि आप कच्चे खाद्य पदार्थ को जरुरत से अधिक खाते है तो यह पचाने में मुश्किल होता है। कच्चे या शाकाहारी भोजन को आप अपनी आवश्यकता के अनुसार ही खाएं।

कच्चे खाद्य पदार्थ अल्पावधि के लिए अच्छा हैअल्पकालिक-दीर्घकालिक प्रभाव

कच्चे खाद्य पदार्थ अल्पावधि के लिए अच्छा है क्योंकि इसमें कम मात्र में कैलोरी होती है, अच्छी मात्र में पोषक तत्व और भरण-पोषण शामिल होता है। लेकिन आहार का यह एक प्रकार जोकि दीर्घ समय तक बनाए रखना मुश्किल होता है,ऐसे बहुत से खाद्य पदार्थ जिसे आप खा सकते हैं, लेकिन एक लंबी अवधि के लिए रखने में यथार्थवादी विकल्प नहीं है। बहुत ही सीमित समय तक रख सकते है और कच्चे खाद्य पदार्थ खाने में बहुत स्वादिष्ट नहीं होते है। कुछ विशेषज्ञों का कहना है कि आप एक अल्पावधि के लिए कच्चे खाद्य आहार को अपनाकर या खाकर अपना वजन कम कर सकते हैं और फिर धीरे धीरे पौष्टिक, अधिक परंपरागत भोजन (जो आप रोज खाते है)।

पुरूषों की हर स्किन प्रॉब्लम का हल हैं ये फेस पैक

हमें स्किन की देखभाल करना बहुत जरूरी होता है। औरतों के मुकाबले पुरूषों की त्वचा सख्त होती है और जल्दी ही डैमेज भी होने लगती है। शेविंग क्रीम, धूल-मिट्टी, धूप आदि के कारण स्किन की नैचुरल नमी खो जाती है। इसी कारण त्वचा रूखी-सूखी और बेजान सी लगने लगती है। पुरूषों को अपनी त्वचा सॉफ्ट बनाएं रखने के लिए कई तरह की क्रीमों का इस्तेमाल करना पड़ता है लेकिन इनमें कई तरह के कैमिकल का इस्तेमाल किया जाता है, जिससे त्वचा पर ज्यादा असर दिखाई नहीं देता। आप घरेलू फेस पैक से भी त्वचा को सॉफ्ट बना सकते हैं।

दूध- दूध त्वचा को मुलायम बनाएं रखने का काम करता है। यह नेचुरल तरीके से त्वचा को गहराइयों का साफ करके डेड स्किन को दूर करने का काम करता है। एक कटोरी में 1 टेबलस्पून कच्चा दूध लेकर रूई की सहायता से इसे चेहरे पर लगाएं। 15-20 मिनट बाद चेहरे को ठंड़े पानी से साथ धो लें। लगातार इसके इस्तेमाल से स्किन सॉफ्ट होने लगेगी।

पपीता- पपीता से बना फेस पैक पुरूषों की स्किन के लिए बैस्ट होता है। पपीते का पेस्ट, 1 चम्मच नींबू का रस और 1 चम्मच दूध मिलाकर पैक तैयार कर लें और फेस पर लगाएं। सूख जाने के बाद इसे हल्के हाथों से रगड़ते हुए साफ कर लें।

केला- स्किन को सॉफ्ट बनाने के लिए केला और गुलाब जल डालकर पेस्ट तैयार कर लें। इसे चेहरे पर लगाएं और 20-25 मिनट बाद धो लें। चेहरे के दाग-धब्बे साफ हो जाएंगे।

रेसिपी

पनीर पराठा

सामग्री

पनीर- 220 ग्राम, हरी मिर्च- 1 टेबलस्पून, धनिया- 2 टेबलस्पून, अजवाइन- 1/2 टीस्पून, गरम मसाला- 1/2 टीस्पून, नमक-1/2 टीस्पून, (आटे के लिए), मैदा- 120 ग्राम, नमक-1/2 टीस्पून, तेल- 1 टीस्पून, पानी- 100 मि.ली, घी

विधि

एक बाउल में पनीर, हरीमिर्च, धनिया, अजवाइन, गरम मसाला और नमक डालकर अच्छे से मिक्स करके साइड पर रख दें। (आटे के लिए) एक बाउल में मैदा, नमक, तेल और पानी डालकर अच्छे से मिलाएं और आटा गूंध लें। सबसे पहले थोड़ा-सा आटा लेकर मीडियम साइज बॉल बना लें। अब इसे रोटी की तरह बेल लें। फिर इस पर थोड़ा सा तैयार किया पनीर का मिक्सर डालें और अच्छे से फैलाएं। इसके बार इसके किनारों को सील करें और फिर से इसे गोल आकार दें। इसपर थोड़ा सा सूखा आटा छिड़कें और रोटी की तरह बेल लें। पराठा तैयार है। पैन को गर्म करें। फिर इसपर पराठा रखें और मध्य आंच पर पकाएं। इसे पलटें और घी लगाएं। ऐसे ही पराठे की दूसरी तरफ घी लगाएं और अच्छे से सेकें। इसे तबतक सेकें जबतक इसका रंग हल्का ब्राउन न हो जाएं। पनीर पराठा तैयार है, इसे दही के साथ सर्व करें।

तवा आलू मसाला

सामग्री

तेल -जरूरत अनुसार उबले आलू 500 ग्राम, नमक -1 टीस्पून हल्दी-1/4 टीस्पून लाल मिर्च पाऊडर -आधा टीस्पून धनिया पाऊडर 1 टीस्पून चाट मसाला पाऊडर आधा टीस्पून जीरा आधा टीस्पून प्याज -70 ग्रामद्ध अदरक पेस्ट आधा टीस्पून लहसुन पेस्ट -आधा टीस्पून टमाटर पूरी 180 ग्राम गर्म मसाला पाऊडर-आधा टीस्पून मेथी -आधा टीस्पून धनिया गार्निशिंग के लिए

विधि

सबसे पहले एक कढ़ाई में तेल डालकर मध्यम आंच पर गर्म करें। इसके बाद इसमें उबले हुए आलू, हल्दी, धनिया मसाला, चाट मसाला, नमक और लाल मिर्च पाऊडर डालकर अच्छे से पकाएं। जब आलू का रंग सुनहरा हो जाएं तो इसे आंच से हटा लें। अब एक पैन में तेल डालकर मध्यम आंच पर गर्म होने दें। फिर इसमें जीरा, लहसुन, अदरक और प्याज डालकर फाई कर लें। इसके बाद इसमें टमाटर प्यूरी डालकर 2 मिनट तक पकाएं। अब इसमें फाई किए हुए आलू, मेथी और गर्म मसाला डालकर कुछ मिनट तक कम आंच में पकाते रहे। आपका तवा आलू मसाला बनकर तैयार हैं। इसे धनिये के साथ गार्निश करके सर्व करें।

मुद्रक एवं प्रकाशक राकेश शर्मा द्वारा अजय त्यागी के लिए पी.जी. इंडिया लिमिटेड एमआईई, कालापहाड़, गुवाहाटी-16 से मुद्रित एवं **गुड लक पब्लिकेशंस, हाउस नं. 30, डी. नेउग पथ, डोना प्लैनेट के नजदीक, एबीसी, जीएस रोड गुवाहाटी-5 से प्रकाशित।**
संपादक : राकेश शर्मा, मोबाइल : 94350-14771, 97070-14771 ● **कार्यकारी संपादक : डॉ. आसमां बेगम ● फोन : 0361-2960054 (संपादकीय)** e-mail : viksitbharatsamacharghy@gmail.com, **(सभी विवाद सिर्फ गुवाहाटी न्याय क्षेत्र के अधीन)**